

# बोधि संवद्धर

भारतीय बौद्ध चांद्र-सौर कालगणन



डॉ. अशोक तपासे.

# बोधि संवहर

ॐ नमो भगवते

डॉ. अशोक तपासे

पुरिस-दम्म प्रकाशन

© डॉ. अशोक तपासे

संपर्क दूरध्वनी

9969112113

9930112113

पुरिस-दम्म प्रकाशन

इस पुस्तक का कोई भी हिस्सा लेखक की अनुमति बिना किसी भी स्वरूप में (भौतिक या इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से) अंकित करना या पूनःप्रकाशित करना भारतीय स्वामित्व हक कानून के तहत अपराध है।



इमारत १७, सदनिका ११०३, हावरे सिटी,  
कासार वडवली, घोडबंदर रोड,  
ठाणे, डाक अनुक्रमांक ४००६१५.

मलपृष्ठ पर अंकित छायाचित्र मैंने १९ मई २००४ के दिन स्वयं ही जयपुर स्थित जंतर-मंतर खगोल अध्ययन केंद्र में लिया है।

समय का गणन करते हुए उसे लेखा बद्ध करने की संकल्पना  
भारत वर्ष में सबसे पहले अगर किसी ने की है तो वह व्यक्ति  
सम्राट अशोक के सिवा और कोई हो नहीं सकता।  
तभी उन्होंने अपने राज्याभिषेक समय को शुरुवाती संवत्सर मानकर  
इस संदर्भ से, तदुपरांत कई घटनाओं का समय  
अपने शिलालेखों में अक्षरांकित किया।  
चांद्र-सौर बोधि-कालगणन की इस नयी संकल्पना के  
संशोधन के प्रयास, मैं सम्राट अशोक महान को  
आदरपूर्वक समर्पित करता हूँ।

**डॉ. अशोक तपासे**

शनिवार, १३ फरवरी २०२५

माघ पूर्णिमा, बोधि संवत्सर २५४१

(माघ महोत्सव)

नखत्तं पटिमानेत्तं, अत्थो बालं उपच्चगा।  
अत्थो अत्थस्स नखत्तं, किं करिस्सन्ति तारका' ॥

नक्षत्रों का विश्वास करते हुये मूर्ख, इच्छा-अपेक्षा से परे निकल जाता है।  
(जहाँ) इच्छा-अपेक्षा ही (सही) नक्षत्र है, (वहाँ) तारकाओं का क्या कार्य-कारण ?

**- तथागत बुद्ध**

नखत्तं जातक, अत्थकाम वग्ग,  
खुद्दक निकाय, सुत्तपिटक

## अध्याय सूची

### अध्याय पृष्ठ

... इसकी कहानी ८

### खंड १ - बुद्ध महापरिनिर्वाण वर्ष की निश्चिती

१	सम्राट अशोक के लघु शिलालेख	१३
२	रुपनाथ लघु शिलालेख	१५
३	रतनपूर्वा लघु शिलालेख	१७
४	अहरौरा लघु शिलालेख	१९
५	२५६ के अर्थ का अनर्थ	२१
६	अशोक ने कब अपनाया था बौद्ध तत्वज्ञान	२६
७	देहली (टोपरा) स्तंभ का दक्षिण प्रतल	२९
८	कब लिखे गये थे लघु शिलालेख - कंदाहर के शिलालेख	३१
९	बैराट (भाब्रु) शिलालेख	३८
१०	कालसी शिलालेख, दक्षिण प्रतल	४१
११	सम्राट अशोक की समय निश्चिती तालिका	४५
१२	पहली वैशाख पुर्णिमा	४६
	बुद्ध महापरिनिर्वाण वर्ष की निश्चिती - संशोधन प्रमाणपत्र	४९

### खंड २ - भारतीय बौद्ध कालगणन

१३	कालगणन पद्धति	५१
१४	चान्द्र कालगणन प्रणाली	५३
१५	सौर कालगणन प्रणाली	५४
१६	चांद्र-सौर कालगणन पद्धति	५५
१७	भारतीय पारंपरिक कालगणन पद्धति	५७
१८	पालि बौद्ध साहित्य और नक्षत्र	६०
१९	बोधि कालगणन प्रणाली - मेरी संकल्पना	६३
२०	सिद्धार्थ चक्र तालिका का विवरण	६७
२१	चंद्र मास तिथियाँ और चंद्र का दृश्य रूप	७०
२२	सिद्धार्थ चक्र तालिका	७१
२३	बोधि संवत्सर के लिये त्वरित संदर्भ सूची	७२
२४	बोधि संवत्सर आरंभ दिवस का संगणन	७६
२५	बोधि संवत्सर और जागतिक सामयिक कालगणन के साथ समक्रमण	८१
२६	जागतिक सामयिक दिनांक का बोधि संवत्सर दिनांक में रूपांतरण	८६
२७	चंद्रमास के कालावधी की भिन्नता	८८



इस पुस्तक के पृष्ठ क्रमांक ६९ से ७३ तक  
भारत सरकार के प्रतिलिप्याधिकार हक कानून के अनुसार  
प्रतिलिप्याधिकार पंजीकरण संख्या L-142981/2024  
दिनांक 07/02/2024 के तहत पंजीकृत है।

कृपया ध्यान रहे की, “लेखक-अशोक तपासे” इस नामोल्लेख के बिना इस  
पुस्तक का किसी भी स्वरूप में पूनर्मुद्रण-प्रसारण-प्रकाशन न करें।  
अगर कोई इस के आधार पर व्यावसायिक रूप में  
दिनदर्शिका बनाना चाहता हो तो, इस पर भी  
“बोधि संवत्सर संशोधक - अशोक तपासे” यह नामोल्लेख जरूरी है।

## .... इसकी कहानी

किशोर-अवस्था में, जब से पूर्णिमा और अमावस यह संकल्पना समझने लगी थी, तभी से मन में यह उत्कंठा रहती थी, की इन दिनदर्शिका कर्ताओं को कैसे पहले ही से पता चलता है, कब पूर्णिमा होगी और कब अमावस होगी। फिर मैं ऐसी दिनदर्शिका का निरीक्षण करने लगा। समझना यह था की, यह पूर्णिमा-अमावस का चक्र कितने दिनों का होता है ? कभी २९ दिन तो कभी ३० और इसका भी कोई निश्चित समय नहीं। जिस मास में २९ दिन होते उस में किसी एक दिन तिथि क्षय लिखा होता, तो ३० दिनों के मास में कभी-कभी एक ही तिथि दो बार भी लिखी होती थी। इस का कोई सुनिश्चित चक्र सरलता से नजर नहीं आता था।

कुछ अधिक बातों की जानकारी प्राप्त करने पर चंद्र कला पर आधारित तिथि का औसत अवधी, सौर दिवस से कुछ मिनट कम होने की समझ हुई। औसत अवधी कहना इसलिये उचित होगा की, कुछ तिथियाँ सौर दिन से बड़ी भी होती थी और कुछ तिथियाँ सौर दिन से काफी छोटी भी होती थी। उस समय भी मैंने इस समझ को अपने लिये व्यावहारिक अंकगणित में परिवर्तित किया था। वह ऐसे की ६४ तिथियों का अवधी ६३ सौर दिनों के बराबर होता है। बौद्ध राष्ट्र म्यांमार में यही अनुपात ७०३ तिथियाँ ६९२ सौर दिनों के बराबर मानी जाती है। (आज इस अनुपात को समझता हूँ तो लगता है की मैं पर्याप्त हद तक सही था।) फिर इस विषय का अध्ययन अधूरा ही रह गया। कारण यह था की जैसे-जैसे अधिक अध्ययन करता गया, इस में राशी-नक्षत्र, नक्षत्र मास इत्यादि नयी संकल्पनाएँ आती रही। यह संकल्पनाएँ अधिक जटिल भी थी। वस्तुतः मुझे केवल चंद्र की कलाएँ और इसपर आधारित कालगणन कैसे होता है, इसी में रुचि रहती थी।

आज भी अगर कोई चांद्र-सौर कालगणन से संबंधित कोई शब्द संगणक महा-जाल पर ढूँढने जाये तो उसे कालगणन संबंधित जानकारी से अधिक ज्योतिष

तथा अन्य अंध-विश्वास की बातें सामने आती है। भारत में हर किसी को अपना लगे ऐसा कालगणन, ज्योतिष तथा शुभ-अशुभ मुहूर्त के बिना, जान लेना केवल अशक्यप्राय है। Book of Indian Era यह अलेक्झांडर कनिंगहॅम की पुस्तक पढ़ कर ऐसे लगा, जैसे इस विषय के भारतीय विद्वान समझाते कम और उलझाते अधिक है।

जगत में प्रारंभिक कालगणन संकल्पनाएँ दिन और मास, सूर्य और चंद्र के दृश्य भ्रमण को समझकर ही शुरू हुई थी। फिर सबसे बड़ा अवधी वर्ष साबित हुआ। कारण यह था की कृषि ही जीवन यापन का प्रमुख आधार था। कृषि-कार्य के लिये ऋतु-चक्र का समय निर्धारण आवश्यक था। ऋतु-चक्र का समय निर्धारण ही वर्ष कहलाता था। इस वर्ष का सूक्ष्म अवलोकन करने के लिये इसके छोटे-छोटे अंश बनाकर इन्हें समझना आवश्यक था। तभी वर्ष के हर समय का अग्रिम निर्धारण सुलभ होगा। इसी से मानव ने दिन महीने और वर्ष को एक सूत्र में बांधकर कालगणन किया।

आज यूरोपियन कालगणन अधिकतर सौर कालगणन है और इसका आकलन बहुत ही सरल है। वहाँ भी राशि-नक्षत्र (Zodiac & Constellations) पर आधारित अंधश्रद्धा होती है। लेकिन व्यावहारीक कालगणन से इसका कोई लेना देना नहीं होता है। कुछ धार्मिक अवसर चंद्र की कला पर आधारित जरूर है लेकिन इनकी मुख्य भूमिका कालगणन में नहीं है।

अगर प्रारंभ से ही चांद्र-मास और सौर वर्ष यही कालगणन के प्रमुख आधार है, तो इनका आकलन अधिक सुलभता से होता रहे, इनका आपसी मेल भी सरलता से आकलनीय रहे, इस में कोई अनावश्यक तत्वों का संचार न हो, यही सच्चा कालगणन ज्ञान-विज्ञान होगा। मेरी इसी समझ को सही अंजाम देने का प्रयास मैं यहाँ कर रहा हूँ।

कालगणन प्रणाली का निर्माण और वह भी चांद्र-सौर गणन संकल्पनाओं के साथ, यह एक जटिल कार्य है। इस के साथ एक और जटिल कार्य यह है की इस गणन का आरंभ दिवस कौन सा हो। इस आरंभ दिवस की कल्पना सर्वाधिक विद्वत

जनों को मान्य हो तथा इस दिवस की काल-निश्चिती ठीक से और ठोस प्रमाणों के साथ की जाये। मेरे मन में कालगणन आरंभ के लिये तथागत बुद्ध के महापरिनिर्वाण का दिन महत्वपूर्ण था। लेकिन इस दिवस के काल-निश्चिती में कई सारे सवाल अनुत्तरित हैं। तथागत बुद्ध के महापरिनिर्वाण वर्ष के लिये इसा पूर्व ४८३, ४८६ और ५४४ ऐसे अलग अलग विकल्प बताएँ जाते हैं। इन विकल्पों में से कौन सा विकल्प अधिक स्वीकार्य है यह जटिल है। इन में से कोई भी विकल्प का शोध इसा पूर्व के किसी ठोस संदर्भ से जुड़ा हुआ नहीं है। जिन साहित्य रचनाओं के सहारे यह बताया जाता है वह सभी रचनाएँ इसवी सन की शुरुवात से काफी समय के बाद निर्मित हैं, और फिर ये रचनाएँ तथागत बुद्ध का महापरिनिर्वाण इसा पूर्व पाँच वे या छठे शतक में होने का दावा करती हैं। यह बात कुछ ऐसी है जैसे कोई अनपढ़ बालक अपने परदादा के परदादा के परदादा की मृत्यु का दिनांक आत्मविश्वास के साथ कहता है।

यह साहित्य कुछ दक्षिण के देश (श्रीलंका) तथा कुछ उत्तरी देश (तिब्बत) के साहित्य पर आधारित है। इन्हें दीर्घ कालानुक्रम तथा न्हस्व कालानुक्रम (Long Chronology & Short Chronology) कहा जाता है। इस से अलग एक और कालानुक्रम भी विख्यात समझा जाता है, जिसे बिंदुओं का कालानुक्रम (Dotted Chronology) नाम दिया गया है। मेरे विचार से यह सभी कालानुक्रम विश्वसनीय नहीं माने जा सकते, क्यों की इनकी निर्मिती तथागत के महापरिनिर्वाण के कई शतक वर्ष बाद हुई है।

“बुद्ध पूर्णिमा” बौद्ध जगत का एक सर्व मान्य उत्सव है। कहा जाता है की इसी दिन सिद्धार्थ गौतम का जन्म हुआ था, उन्हें बोधि प्राप्ति भी इसी दिन हुई थी तथा उनका महापरिनिर्वाण भी इसी दिन को हुआ था। इसी कारण यह मनाया जाता है। ... और यह कब मनाया जाता है ? भारत में यह होता है वैशाख पूर्णिमा के दिन। वैशाख मास भारतीय वैदिक कालगणन प्रणाली के अनुसार संवत्सर का दूसरा मास है। भारत के अतिरिक्त अन्य राष्ट्रों में यह जागतिक सामयिक कालगणन (CE) अनुसार मई महीने में आने वाले पूर्ण-चंद्र दिवस (Full Moon Day) के दिन मनाया

जाता है। वस्तुतः यह दिवस, वैशैख पूर्णिमा और मई मास की पूर्णिमा, कभी दो अलग दिन नहीं होते। लेकिन एक बार ऐसे नहीं हुआ। इसवी वर्ष २०१८ में भारतीय वैदिक कालगणन अनुसार आने वाली वैशाख पूर्णिमा, इसवी दिनांक ३० अप्रैल को संपन्न हो रही थी। वहीं जगत के अन्य राष्ट्र बुद्ध पूर्णिमा ३० मई को मनाने वाले थे। भारतीय सामान्य बौद्ध जन तो दुविधा में थे ही, लेकिन भारत के भिक्खु संघ भी इस विषय को लेकर विभाजित हुए। बुद्ध पूर्णिमा अप्रैल में होगी या मई में ?

ऐसे क्यों हुआ ? क्या “ईस्टर संडे” (रविवार) मनाने के लिये ऐसी कोई दुविधा होती है ? क्या “ईद” मनाने के लिये ऐसी दुविधा होती है ? क्या “नवरोझ” मनाने में ऐसी दुविधा होती है ? ... नहीं होती। कारण यह है की इन सभी जन-संप्रदायों के लिये उनकी अपनी एक कालगणन प्रणाली उपलब्ध है। सामान्यतः सभी लोग जागतिक सामयिक कालगणन का अनुसरण करते हैं, लेकिन जब बात सांप्रदायिक उत्सव की होती है, तो कालगणन केवल अपने सांप्रदायिक मान्यता के कालगणन का अनुसरण होता है। भारत में २०१८ में बुद्ध पूर्णिमा मनाने में दुविधा हुई, कारण भारतीय बौद्ध संप्रदाय के पास अपनी कोई कालगणन प्रणाली है ही नहीं।

इस दौरान मैं सम्राट अशोक के शिलालेखों पर काफी अध्ययन कर चुका था, इन्हें प्रत्यक्ष जाकर देख चुका था। इन शिलालेखों के व्यंजन को पढ़कर मुझे एकाध जगह पर ऐसा महसूस हुआ की, इनका इंग्लीश / हिन्दी अनुवाद, जो अनेक विद्वत्त जनों ने किया है, इस में इन शिलालेखों का तुलनात्मक अभ्यास नहीं हुआ है। इस कारण इसके अनुवाद में कुछ चुक हुई है। मैंने इस चुक को समझ-बुझ के साथ सुधारने का प्रयत्न किया था। इस प्रक्रिया से कुछ अनकहे सत्य उभरकर आये। सम्राट अशोक ने अपने लघु-शिलालेख अभिषेक के बाद दसवें वर्ष में लिखे होंगे। और इस समय तक तथागत बुद्ध के महापरिनिर्वाण के पश्चात् २५६ वर्ष बीते गये थे, यह बात सम्राट अशोक लघु शिलालेख में ही लिखवाते हैं। सम्राट अशोक के बृहद् शिलालेखों की साक्ष से उनके समकालीन भारतीय और विदेशी राजाओं के संदर्भ मिलते हैं। उस समय भारत में भले ही निरंतर (अविरत) कालगणन नहीं था, लेकिन जिन विदेशी राजाओं के संकेत सम्राट अशोक शिलालेखों में करते हैं, उनके

देश में ऐसा कालगणन मौजूद था। इस संदर्भ से सम्राट अशोक के लघु-शिलालेख के निर्मिती का वर्ष तय होता है। फिर इस संदर्भ से तथागत बुद्ध के महापरिनिर्वाण का वर्ष जानना कठिन नहीं रहता। इस से मैंने तथागत बुद्ध के महापरिनिर्वाण वर्ष की समय निश्चिती की है। इस के समीप कालगणन आरंभ रखते हुए एक नयी कालगणन प्रणाली का निर्धारण किया है।

केवल नयी कालगणन प्रणाली का निर्माण ही सब कुछ नहीं होता। इसकी छान-बीन करते हुए इसे तार्किक कसौटी पर अचूक सिद्ध करना यह एक अहम बात होती है। मैंने इस के भी प्रयास सफलता प्राप्ति तक अविरत किये। इस में कितना समय लगाया इसकी गिनती मैंने कभी की नहीं। इन सभी प्रयासों का नतीजा है मेरी यह पुस्तक - **बोधि संवत्सर** और यह है ... **इसकी कहानी**।

\*\*\*\*\*

मेरे इन प्रयासों के दौरान मेरा कोई सहकारी नहीं था। यह सब कुछ मैंने "एकला चलो रे" इसी भावना से किया। फिर भी इस सफर में मेरे प्रयासों का एक मूक सहायक, एक प्रेरक साक्षी रहा है। वह है मेरी सहचारिणी **हर्षदा**। उसने मेरे कार्य की अहमियत को समझा न होता, समय-समय पर सराहा न होता तो मैं यह सफलता शायद ही प्राप्त कर सकता। उसकी प्रेरणा और सराहना से उतराई के लिये मेरे पास शब्द नहीं है, न ही ऐसा कोई शब्द मैं ढूँढना चाहता हूँ। मेरा यह प्रयास है की उसके प्रेरणा की अवमानना कतई न हो।

सचे लभेथ निपक सहाएं सद्धिं चरं साधुविहारि धीरं ।  
अभिभुय्य सब्बानि परिस्सयानि चरेय्य तेन'त्तमनो सतीमा ॥९॥  
नो च लभेथ निपक सहायं सद्धिं चरं साधुविहारि धीरं ।  
राजा'व रट्ठं विजितं पहाय एको चरे मातङ्ग'रब्जेव नागो ॥१०॥

**(धम्मपद – नागवग्ग)**

- डॉ. अशोक तपासे

## सम्राट अशोक के लघु-शिलालेख

भारत में आज तक मिले सम्राट अशोक के अधिकांश अभिलेख लघु-शिलालेखों के रूप में हैं। इन के नाम तथा स्थान इस प्रकार है।

१ बहापुर, दिल्ली	१० उदेगोलम, कर्नाटक
२ गुजरा, मध्य प्रदेश	११ रजुला मंदागिरी, आंध्र प्रदेश
३ रतनपुरवा, बिहार	१२ पालकीगुंडु, कर्नाटक
४ अहरौरा, उत्तर प्रदेश	१३ गविमठ, कर्नाटक
५ सहसराम, बिहार	१४ येरागुडी, कर्नाटक
६ रूपनाथ, मध्य प्रदेश	१५ जटिंग रामेश्वर, कर्नाटक
७ पांगुरारिया, मध्य प्रदेश	१६ ब्रम्हगिरी, कर्नाटक
८ मास्की, कर्नाटक	१७ सिद्धपुर, कर्नाटक
९ नितूर, कर्नाटक	१८ बैराट, राजस्थान (कोलकाता)

इन अठारह शिलालेखों में से कुछ स्थानों पर दो-दो शिलालेख हैं। (नितूर, उदेगोलम, ब्रम्हगिरी, रजुला मंदागिरी और येरागुडी) अन्य सभी स्थानों पर केवल एक ही शिलालेख है। जहाँ दो शिलालेख हैं, उनमें से पहला शिलालेख तथा जहाँ केवल एक शिलालेख है वह एक शिलालेख, इनमें उल्लेखनीय समानता है। कुछ मामूली सा अंतर स्थानीय भाषा, या लेखनिक के भाषा के ज्ञान के कारण दिखता है। इन शिलालेखों के पाठ को समझने के लिए, हम इन लेखों में से दो सबसे अधिक सुस्थिती में पाये गये शिलालेखों के व्यंजन देखेंगे।

## रुपनाथ शिलालेख



मैं पढ़ रहा हूँ ....

रुपनाथ लघु शिलालेख

# मूल ब्राम्हि शिलालेख

## ROCK AT BUPNÁTH near Jabalpur.

1. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतासु अष्टाध्याय्यां अष्टोत्तशतिकां चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ १ ॥
2. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतासु अष्टाध्याय्यां अष्टोत्तशतिकां चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ १ ॥
3. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतासु अष्टाध्याय्यां अष्टोत्तशतिकां चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ १ ॥
4. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतासु अष्टाध्याय्यां अष्टोत्तशतिकां चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ १ ॥
5. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतासु अष्टाध्याय्यां अष्टोत्तशतिकां चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ १ ॥
6. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतासु अष्टाध्याय्यां अष्टोत्तशतिकां चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ १ ॥

### देवनागरी लिप्यंतरण

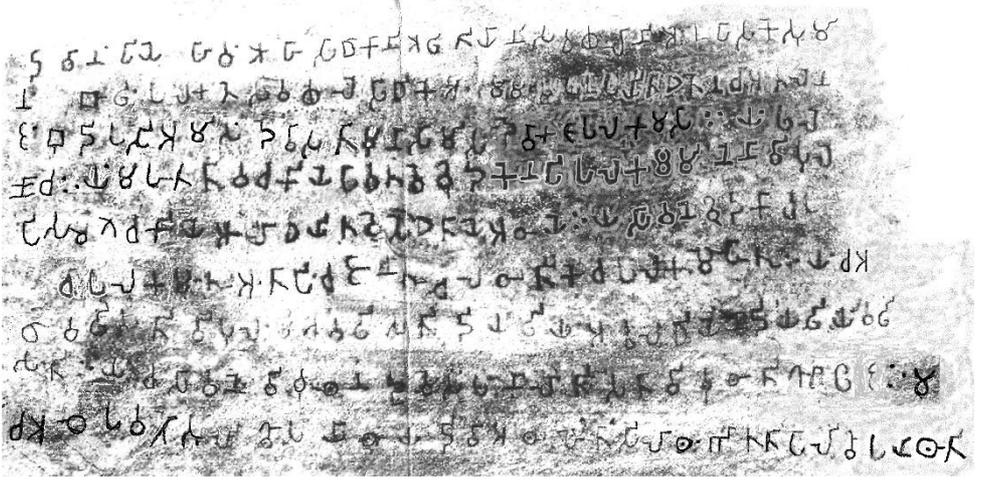
१. देवानं पिये हेवं आहासातिरके कानि अढति (या) नि (व) पसुमिपकास.. किनोवबाढिपकतेसा तिलेके चुछतवरेयसुमिहकसंघपापीते
२. बाढिचपकतेयिइमायंकालायंजंबुदिपसिअमिसादेवाहुसुतेदानिमसाकटापकमसिहिएस फलेनोचएसामहततापापोतंतरेखुदकेनहि
३. पिपकममानेनासकियेपिपुलेपास्वगआराधेवेएतियअठायचसावनेकटेखुदकाचउडालाच पकमतुतिअतापीचजानंतुइयपकराव
४. आतिचिरठितिकेसियाइयहिअठेवढिवढिसितिविपुलचवढिसितिअपलधियेनादियढियव ढिसतइयचअठेपवतिसलेखापेतवालतहधचअथि
५. सालाठुभेसिलाठंभसिलाखापेतवयतएतिनाचवयेजनेनायावतकतुपकअहालेसवरविनसे तवायातिव्युठेनासावनेकटे २०० ५० ६स
६. तविवासात

## देवनागरी लिप्यंतरण के बाद प्राकृत भाषा में अर्थपूर्ण शब्द-वाक्य

देवानंपिये हेवं आहा. सातिरकेकानि अढति(या)नि (व) प सुमि पकास सके. नो च बाढि पकते. सातिलेके चु छतवरे य सुमि हक संघ पापीते उपेते बाढि च पकते. यि इमायं कालायं जंबुदिपसि अमिसा देवा हुसु ते दानि मिसा कटा. पकमसि हि एस फले. नो च एसा महतता पापोतंते खुदकेन हि पिक पि पकममानेना सकिये पिपुले पा स्वग आराधेवे. एतिय अठाय च सावने कटे खुदका च उडाला च पकमतु ति अंतापी च जानंतु इय पकरा व आति चिरठितिके सिया. इय हि अठे वढि वढिसिति विपुल च वढिसिति अपलधियेना दियढिय वढिसत. इय च अठे पवतिस लेखापेत वालत. हध च अथि सिलाठुभे सिलाठंभसि लेखापितवय त. एतिना च वयेजनेना यावतक तुपक अहाले सवर विनसेतवाया ति. व्युठेना सावने कटे (२००) (५०) (६) सत विवासात.

### हिन्दी अनुवाद

देवों को प्रिय ने ऐसा कहा। मैं ढाई साल से अधिक समय शाक्य प्रकाश में हूँ लेकिन कोई विकास नहीं हुआ। मैं पिछले एक साल से अधिक समय संघ के करीब हूँ। इस दौरान जम्बूद्वीप में देव गण (आम लोगों से) नहीं मिला करते थे, अब मिल रहे हैं। यह पराक्रम (परिश्रम) का फल है। और केवल महान लोगों को ही मिलता है यह नहीं बल्कि आम लोगों को भी प्रचुर परिश्रम के माध्यम से स्वर्ग मिलता है। इसके लिए यह घोषित किया गया है कि सामान्य और महान लोग परिश्रम करें और सीमा पर बसे लोगों को भी यह पता होना चाहिए। और यह परिश्रम की महिमा चिरस्थायी होनी चाहिए। इससे विकास से विकास होगा, और प्रचुर विकास होगा, निर्बाध विकास दिन-ब-दिन होगा। इसके लिए (यह व्यंजन) चट्टानों (पहाड़ों) पर बार-बार लिखना चाहिए। जहां पत्थर के स्तंभ हैं, यह स्तंभों पर लिखा जाये। यह व्यंजन हर जगह आपके अधिकार क्षेत्र में भेजे जाने चाहिए। यह २५६ (समय) बाद घोषित किया जाता है, दूर जागृत रहकर।



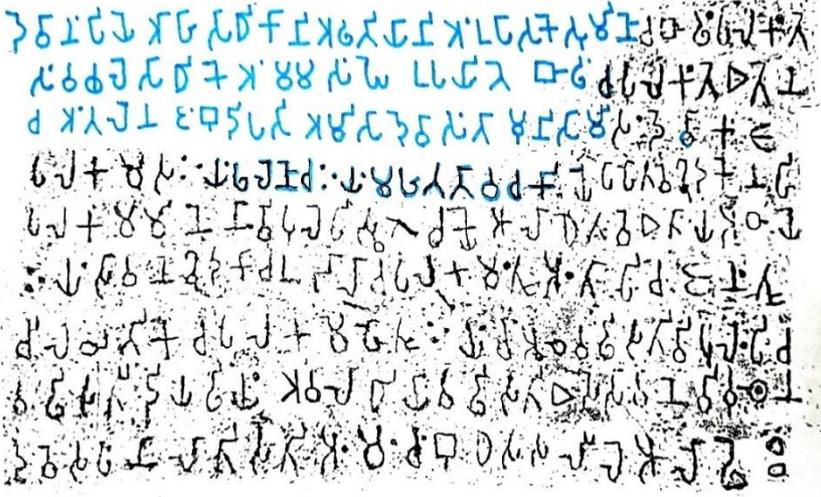
रतनपूर्वा शिलालेख का छायाचित्र (संगणकीय संशोधन के साथ)

### देवनागरी लिप्यंतरण के बाद प्राकृत भाषा में अर्थ पूर्ण शब्द-वाक्य

देवानंपिये हेवं आह. साधिकानि अढातियानि सवछलानि अं उपासके सुमि.  
 न चु बाढं पलकंते. सवछले साधिके अं मम संघे उपयीते. एतेन च अंतलेन  
 जंबुदीपसि अमिसं देवा संता मुनिसा मिसं देवा कटा. पलकमसा इयं फले  
 नो च इयं महतता व चकिये पावतावे खुदकेन पि पलकमिनेना विपुले  
 पि स्वगे चकिये आलाधयितवे से येताये अठाये इयं सावने खुदका च उडाला च  
 पलकमंतु अंता पि च जानंतु चिलठितीके च पलकमे होतु. इयं च  
 अठे वढिसति विपुलं पि चा वढिसति दियढियं अवलधियेना दियढियं वढिसति. इयं च  
 सावने विवुथेन दुवे सपंना लाति सता. विवुथाति (२००) (५०) (६). इमं च अठं पवतेसु  
 लिखापयाथा यदि वा अथि हेता सिला थभो ततापि लिखापयाथा ति.

### हिन्दी अनुवाद

देवताओं को प्रिय ने कहा। ढाई साल से अधिक समय से मैं उपासक हूं लेकिन विकास में कोई वृद्धि नहीं हुई है। अब संघ के साथ एक साल से अधिक समय से हूं। इस काल में जम्बुद्वीप में देवताओं (मनुष्यों) का मिलाप नहीं होता था, (अब) देवताओं का मनुष्यों में मिलन हो रहा है। यह पराक्रम (परिश्रम) का फल है। यह न केवल महान (लोगों) के लिए बल्कि सामान्य (लोगों) का भी विपुल परिश्रम से स्वर्ग में आरोहण संभव है। इसके लिए आम और बड़े लोगों को (ऐसे) परिश्रम करने की (सलाह) घोषणा की गई है। सीमा पर बसे लोगों को (भी) यह जानना चाहिए। ऐसा पराक्रम चिरकाल होता रहेगा। यह ऐसे ही बढ़ेगा, यह दिन-ब-दिन खूब बढ़ता जाएगा, यह बिना किसी रुकावट के दिन-ब-दिन बढ़ता जाएगा। यह घोषणा दो सफल रातें (घर से) दूर, (याद में) जागृत रहकर की जाती है। २५६ (समय) दूर रहकर। यह लेखन पत्थर की चट्टानों पर या जिस स्थान पर स्तंभ हों, उस स्तंभ पर लिखा जाना चाहिए।



**देवनागरी लिप्यंतरण के बाद प्राकृत भाषा में अर्थपूर्ण शब्द-वाक्य**

देवानंपिये आहा साधिकानि अढतियानि अं उपासके सुमि नो च बाढं पलकंते  
 संवछले साधिके अं मम संघे उपयिते बाढं च पलकंते एतेन  
 च अंतलेन जंबुदिपसि अमिसा देवा संता मुनिसा मिसं देवा कटा.  
 पलकमस इयं फले. नो च इयं महतता व चकिये पापोतवे खुदकेन पि  
 पलकममिनेना विपुले पि स्वगे चक्ये आलाधेतवे एताये अठाये  
 इयं सावने खुदकाच उडालाच पलकमंतू अंतापि च जानंतू  
 चीलठितिके च पलकमे होतू. इयं च अठे वढीसति विपुलं पि च  
 वढिसती दियढियं अवलधिया वढिसती एसे सावने विवुथेन  
 दुवे सपंना लाति सति. अंमंचं बुधस सलीले आलोढे :

(नीले रंग में लिखे ब्राह्मि तथा देवनागरी अक्षर शिलालेख में क्षतिग्रस्त है मगर यहां पर अध्ययन हेतु मैने पुर्ननिर्मात किये है।)

इस शिलालेख को प्रस्तुत करने से पहले जो दो शिलालेख यहाँ पर देखे गये है, इन में तीन संख्या (२००)(५०)(६) का अक्षर समूह लिखा हुवा पाया जाता हैं। लेकिन यहाँ पर यह संख्या नहीं है। इस वाक्य की जगह पर **अंमंचं बुधस सलीले आलोढे:** लिखा गया है। (शायद अंतिम अक्षर च पर अनुस्वार नहीं है, वह शिला-क्षति है।) कुछ विद्वानों के अनुसार

इस वाक्य में तीन अक्षर "अंमं च" लेखनिक द्वारा गलत लिखे गये हैं। क्योंकि इस तरह के अक्षर किसी अन्य लघु-शिलालेखों में नहीं मिलते हैं, तथा इस स्थान पर अन्य लेखों में तीन संख्या (२००)(५०)(६) का अक्षर समूह लिखा हुआ पाया जाता है। शायद लेखनिक की गलत समझ के कारण (२००)(५०)(६) की जगह "अंमं च" लिखा गया हो यह समझना असंभव नहीं है। कुछ विद्वान **अंमं च** का मतलब **हमारे** ऐसा समझते हैं। पालि भाषा में **अमम** का अर्थ होता है निर्लोभी। इस तर्क के अनुसार **अंमं** यह शब्द तथागत बुद्ध का विशेषण भी हो सकता है। पालि भाषा में च इस अक्षर का उपयोग और, अब, तब (And, But, Even) इन शब्दों के लिये किया जाता है। "**अंमं च बुधस**" अर्थात् **और निर्लोभी बुद्ध** का (शरीर आरोहण)। **अंमं च** का मतलब जो भी है, निस्संदेह, **बुधस सलीले आलोढे** का अर्थ है "**बुद्ध के शरीर का आरोहण**", अर्थात् **बुद्ध का महापरिनिर्वाण**। क्या यह केवल संयोगवशता हो सकती है की (२००)(५०)(६) सतविवासात्" या "विवुथाति (२००)(५०)(६)" इन शब्दों की जगह पर "**अंमं च बुधस सलीले आलोढे**" यह शब्द समूह लिखा जाये ? अगर यह केवल संयोगवशता नहीं है तो यह बात निश्चित है की "**(२००)(५०)(६)**" और "**बुधस सलीले आलोढे**" इन शब्दों का कोई आपसी संबंध है।

कई बार सम्राट अशोक के लेखनिक अपने समझ की कोई अधिक बात भी शिलालेख में लिखते हैं, जैसे चापड नामक लेखनिक ने स्वयं का नाम **चापड** तथा एक शब्द **लिपीकरेन** खारोष्टी लिपी में ब्रह्मगिरी शिलालेख के अंत में लिखा है। कर्नाटक में मास्कि, नित्तुर, उदेगोलम और मध्य प्रदेश में गुजर्रा शिलालेख में देवानंपिय के साथ **राजा असोको** भी लिखा गया है, जो अन्य कहीं भी नहीं है।

## २५६ के अर्थ का अनर्थ

हालांकि इन सभी अभिलेखों में कई समानताएं हैं, फिर भी एक महत्वपूर्ण अंतर यह है कि "दुवे सपंना लाति सता" इन शब्दों से युक्त वाक्य रतनपुरवा लेख में हैं लेकिन रूपनाथ लेख में नहीं हैं। ऐसा वाक्य रूपनाथ और गुजर्रा से दक्षिण के प्रांतों में किसी भी लेख में नहीं हैं। उत्तर के शिलालेख रतनपुरवा, अहरौरा और सहसराम (सासाराम) लेखों में जो पाटलिपुत्र से अन्य जगहों की अपेक्षा निकटतम स्थित हैं, उन्हीं लेखों में यह वाक्य लिखा गया है।

चूंकि आज तक लगभग सभी विद्वानों ने विवुथेन, विवुथा, विवासात शब्दों का मतलब दूर रहकर ऐसे किया है। फिर दूर रहकर इस मतलब की योग्य परिभाषा करने के लिये इसका मतलब यात्रा पर रहते हुये किया गया है। इस से अगली संख्या २५६ के अर्थ को वास्तविकता से दूर करने का प्रयास किया गया है। वह ऐसे की सम्राट अशोक २५६ दिन यात्रा पर रहते हुवा यह घोषणा की गई है। यह २५६ संख्या का विवादास्पद वाक्य सत्रह लघु शिलालेखों में से दस शिलालेखों में पाया गया है। ग्यारहवें शिलालेख (अहरौरा) में "दुवे सपंना लाति सति" तो है लेकिन विवुथाति २५६ नहीं है। इन सबका विवरण निम्न अनुसार है।

१	ब्रम्हगिरी	इयं च सावणे सावपिते व्युथेन २५६.
२	एरागुडी	इयं च सावने सावापिते व्युथेन २५६.
३	गुजर्रा	इयं च सावने विवुथेन २५६.
४	जतिंग-रामेश्वर	इ.. .. सावण विवुथेन २५६.
५	नितुर	इयं च सावापितेण सावापिते व्युथेन २५६.
६	उदेगोलम	सावणे सावपिते व्युथेण २५६.
७	पांगुरारीया	सावणं वियुथेन २५६.
८	रुपनाथ	व्युठेन सावने कटे २५६ सत विवासात.
९	सहसराम	इयं च सावने विवुथेन दुवे सपंना लाति सति विवुथाति २५६.
१०	अहरौरा	एसे सावने विवुथेन दुवे सपंना लाति सति अंमंचं बुधस सलीले आलोडे.
११	रतनपुरवा	इयं च सावने विवुथेन दुवे सपंना लाति सता. विवुथाति २५६

वास्तव में, संख्या २५६ के साथ किसी कालानुक्रमिक (या अन्य) परिमाण नहीं है। फिर २५६ दिनों की यात्रा (धंमयात्रा) यह मतलब समझ से परे हो जाता है। दुवे सपंना लाति सता / सति इस शब्द समूह में से सता / सति इस शब्द से सौ यह मतलब समझा जाता

है, जब कि सता या सति ऐसा कोई शब्द संस्कृत भाषा में नहीं है। संस्कृत भाषा में शत यह शब्द है जिसका अर्थ सौ होता है। लाति शब्दका अर्थ रातें होता है (प्राकृत में कई बार र की जगह ल लिखा पाया जाता है)। इसलिए घर से दो सौ रातें (अर्थात् दो सौ दिन) दूर रहकर (धम्मयात्रा पर) ऐसा अर्थ समझने की प्रथा हो गई है। यहाँ पर “दो सौ रातें दूर” के तुरंत बाद “(२००)(५०)(६) विवुथाति” या “(२००)(५०)(६) सत विवासात” यह अंको वाला शब्द समूह दिखाई देता है। फिर इससे “२५६ (समय/दिन) (धम्म)यात्रा के दौरान” यह अर्थ लिया जाता है। अब दो सौ और २५६ एक साथ एक अर्थ से समझना विपरीत सा लगता है। कुछ प्राचीन विद्वान सपंना शब्द से छप्पन यह संख्या वाचक अर्थ भी निकालते हैं।

भारत में तीन अंको वाली संख्या में जो शतकी अंक होता है उसी के शब्द को शतक वाचक शब्द जोड़ा जाता है, इन दो शब्दों के बीच में कोई और शब्द नहीं होता है। (जैसे दो सौ, पाँच सौ, आठ सौ .. दो और सौ, पाँच और सौ तथा आठ और सौ के बीच में कोई और शब्द कभी भी नहीं होता।) इस बात को ध्यान में रखते हुये, दुवे सपंना लाति सता इस शब्द समूह से दो सौ छप्पन रातें यह मतलब अशक्यप्राय लगता है, क्यों की दुवे और सता के बीच में सपंना लाति यह दो शब्दों के आने से दो सौ ऐसा मतलब अशक्यप्राय लगता है। अगर सपंना का मतलब छप्पन के बजाय संपन्न लिया जाये तो वह दो संपन्न रातों का शतक इस प्रकार होगा।

अब यात्रा के दौरान ही इस लेख के व्यंजन की घोषणा की गयी होगी ऐसा मानना हो, तो वह दो सौ दिनों के पश्चात या फिर दो सौ छप्पन दिनों के पश्चात की गयी होगी यही मान्यता होगी। ऐसे में दो सौ तथा दो सौ छप्पन इन दोनों ही समय का उल्लेख एक साथ हो यह बात सामान्य समझ से परे है, या उलझन पैदा करने वाली लगती है। एक साथ इस तरह के दो कथन अर्थपूर्ण तथा सही संतुलित हो यह कठिन प्रयास होता है।

यहाँ पर विवुथ इस शब्द के दो रूप दो जगह पर आते हैं। इस बात पर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। “इयं च सावणे विवुथेन दुवे सपंना लाति” और “विवुथाति २५६” इन दो शब्द समूहों में विवुथ इस शब्द का रूप हम पढ़ते हैं। अगर विवुथ शब्द से “दूर रहकर” यह अर्थ समझना हो तो “किस से दूर रहकर” यह संदर्भ समझना आवश्यक है। पहले स्थान पर यह संदर्भ दुवे सपंना लाति से है तथा दूसरे स्थान पर यह संदर्भ २५६ से हो रहा है। दो अलग संदर्भ, जो एक दूसरे से अलग हैं, फिर भी इन में मेल करने का प्रयास कठिन

तथा निरर्थक लगता है। तो पहले विवुथ से दो रातें दूर रहकर और दूसरे विवुथ से २५६ (वर्ष) दूर रहकर यह अर्थ अधिक समर्थनीय होता है।

**दुवे सपंना लाति सता / सति** इस शब्द समूह में लाति शब्द पर एक बार फिर विमर्श करना होगा। जब भी किसी अवधी का संकेत करना हो, तो प्रायः “अमुक-अमुक दिनों का अवधी” इस तरह से किया जाता है। “अमुक अमुक रातों का अवधी” यह संकेत अकसर नहीं होता। यहाँ पर अगर रातें इस अर्थ के शब्द का आयोजन किया है तो उसका कोई विशेष हेतु जरूर हो सकता है। रातें इसलिये नहीं गिनी जाती क्यों की प्राचीन समय से रातों को कोई सामान्य कार्य नहीं किया जाता। अगर रातों की गिनती होती है तो जाहिर है की वह किसी विशेष कार्य की गिनती है। रातों को विश्राम किया जाता है, नींद की जाती है, जिस से दूसरे दिन तरो-ताजा होकर संपूर्ण सामर्थ्य के साथ कार्य किया जा सके।

**दुवे सपंना लाति सति / सता** इस वाक्यांश की व्याख्या करते समय सति / सता शब्द के अर्थ पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है। सत का अर्थ सौ, जो मान लिया है, क्या यही सही अर्थ है ? सम्राट अशोक ने सारे शिलालेख तत्कालीन प्रादेशिक प्राकृत में लिखे हैं, इस कारण सता/सति शब्द के अर्थ की खोज संस्कृत भाषा के शब्दकोश में करना निरर्थकता है। सता या सति इस शब्द का अर्थ खोजने के लिये पालि भाषा (जो की तत्कालीन प्राकृत का एक रूप है) के शब्दकोश को देखना सर्वथा योग्य होगा। पाली में सत का अर्थ, सौ के साथ साथ, जागृत भी होता है, सति का अर्थ स्मृति होता है। सपंना का अर्थ छप्पन नहीं है तो, सपंना का अर्थ सपजा या संपन्न हो सकता है। "दुवे सपंना लाति सता" इस वाक्यांश का अर्थ होगा "दो रातें जागृत (रहकर) संपन्न" या "दुवे सपंना लाति सति" का अर्थ "दो रातें याद करते हुये संपन्न"। दो रात भर जागृत रहना, दो रात भर याद करते रहना यह सामान्य कृति नहीं है बल्कि एक विशेष बात है। इससे यहां पर रातों की गिनती क्यों हो रही है इसका भी सही समर्थन प्राप्त होता है। यहाँ दो रातें जागृत / याद में संपन्न करते हैं, जिस समय बुद्ध का महापरिनिर्वाण हुआ था। यह दो रातें जागृत रहकर संपन्न, विवुथाति (२००)(५०)(६), अर्थात् २५६ समय (वर्ष) (तथागत से) दूर रहते हुये हैं।

तथागत बुद्ध का महापरिनिर्वाण वैशाख मास की पूर्णिमा (ॐ) को हुआ था यह भी बौद्ध जगत में सर्व मान्य है। इस पूर्णिमा को बुद्ध पूर्णिमा के नाम से जाना जाता है। पाटलिपुत्र और आसपास के क्षेत्रों में (बुद्ध पूर्णिमा) की अवधि के दौरान दो रातों तक (यानी पूरे दो

दिन-रात तक) उनकी याद में जागृत रहकर बुद्ध का अभिवादन करने की प्रथा प्रचलित रही होगी। वाक्यांश "दुवे सपंना लाति सता / सति" उत्तर भारत तथा पाटलिपुत्र के करीब स्थित शिलालेखों में पाया गया है। इसका कारण यह हो सकता है कि सम्राट अशोक ने पाटलिपुत्र में तथागत बुद्ध के महापरिनिर्वाण की अवधि में दो रात-दिनों तक जागृत रहकर बुद्ध का अभिवादन करने की प्रथा शुरू की होगी। इसलिए यह प्रथा पाटलिपुत्र और आसपास के प्रांतों में प्रचलित रही होगी। लेकिन यह प्रथा पाटलिपुत्र से दूर के क्षेत्र में इतनी व्यापक रूप से प्रचलित नहीं रही होगी, इसलिए यह वाक्य दूर और दक्षिण के शिलालेखों में नहीं लिखा गया है।

बुद्ध के जीवन के तीन पहलु - लुंबिनी में उनका जन्म, गया में उनकी संबोधि प्राप्ति और कुसिनारा में बुद्ध का महापरिनिर्वाण - निश्चित रूप से सम्राट अशोक के लिये असीम श्रद्धापूर्ण थे, यह काल्पनिक नहीं बल्कि लिखित सत्य है। इसी लिए लुंबिनी ग्राम के लिये कर-छूट (क्ष), संबोधि (बोधगया) यात्रा (बोधि वृक्ष की देखभाल), और यहाँ वर्णित महापरिनिर्वाण के दौरान पूरे दो रातों और दिन जागृत रहकर अभिवादन; काल्पनिक नहीं बल्कि लिखित सत्य है।

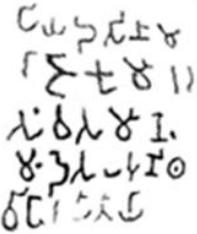
अब लघु शिलालेखों के अध्ययन से साबित, पहला तथ्य यह है कि सम्राट अशोक कलिंग युद्ध से पूर्व ही बौद्ध परंपरा मानते थे। कलिंग युद्ध के बाद उनके मन की बुद्ध भावना अधिक तीव्र हो उठी। दूसरा तथ्य यह है की बुद्ध के महापरिनिर्वाण के २५६ साल बाद सम्राट अशोक ने लघु शिलालेख लिखवाये है। अर्थात बुद्ध का महापरिनिर्वाण, सम्राट अशोक के लघु-शिलालेख लिखने से २५६ वर्ष पहले हुआ था। अगर बुद्ध के महापरिनिर्वाण से बुद्ध संवत्सर का गणन करना हो तो यह संदर्भ निःसंदेह तथा लिखित संदर्भों के आधार पर निर्भर होगा। और तीसरा तथ्य यह है की पाटलीपुत्र और आसपास के लोग सम्राट अशोक के साथ-साथ बुद्ध पूर्णिमा के समय दो दिन-रात तक जागृत रहकर बुद्ध का अभिवादन करते थे। मेरे विचार से यह तथ्य आज भी अनुकरणीय है।

@ बुद्ध का महापरिनिर्वाण वैशाख माह कि पूर्णिमा को हुआ था यह बात भी संदेह पूर्ण है। महापरिनिब्बान सुत्त में इसके लिये कुछ और संदर्भ मिलते है। लेकिन यहाँ के लिये वेसाक पूर्णिमा ही ठिक है।

(क्ष) – लुंबिनी स्तंभ पर लिखे “उबलिके कटे अठ भागियेच” इस शब्द समुह से यह समझा जाता है की, लुंबिनी ग्राम को **आठवे भाग** तक कर में छूट दी जाती है। लेकिन जर्मनी के विद्वान हॅरी फाल्क कहते है की, आठवे भाग तक कर छूट नहीं बल्कि सम्राट अशोक ने तथागत बुद्ध के शरीर धातु का **आठवाँ भाग** यहाँ लाकर उस पर स्तूप निर्माण किया। जो भी हो, सम्राट अशोक के मन में तथागत बुद्ध के जन्म स्थली लुंबिनी के लिये असीम श्रद्धा थी।

## अशोक ने कब अपनाया था बौद्ध तत्वज्ञान

कलिंग युद्ध अभिषेक के आठ वर्ष बाद हुआ था यह बात सम्राट अशोक ने अपने बृहद् शिलालेख १३ में लिखी है। यह भी उल्लेख है कि अभिषेक के दस साल बाद संबोधि (बोध-गया) यात्रा की गई थी और अभिषेक के बीस साल बाद बुद्ध के जन्मस्थान लुंबिनी का और कोनागमन स्तूप का दौरा किया गया था। मतलब यह होता है की कलिंग युद्ध के केवल दो वर्षों बाद सम्राट ने संबोधि (बोध गया) यात्रा की। इस यात्रा का कोई संकेत लघु शिलालेखों में नहीं है, इसका मतलब है की लघु शिलालेख संबोधि यात्रा से पहले लिखे थे। लघु शिलालेखों के लेखन के समय, एक उपासक के रूप में ढाई साल की अवधि और अधिक लगभग डेढ़ साल संघ के साथ की अवधी कुल मिलाकर करीब-करीब चार साल की अवधी संबोधि यात्रा से पहले हुई होगी तो यह अवधी अभिषेक के छः साल से शुरू होती होगी। इससे यह अनुमान होता है की सम्राट अशोक कलिंग युद्ध से पहले ही बौद्ध तत्वज्ञान से जुड़े हुये थे। इस का एक और प्रमाण भी मिलता है।

मूल रेखा चित्र	देवनागरी लिप्यंतरण	हिन्दी अनुवाद
	पियदसि नाम राजकुमार व संवसमाने* (इ)मं देस पपुनिथ* विहारयाताये	प्रियदर्शी नामक राजकुमार संगिनी (मंगेतर) के साथ यहाँ पर पहुँचा था, विहार यात्रा (के लिये)।

\* संवसमाने = संवसति = संगत करता है। पपुनिथ - पापुणाति = पहुँचता है।

मध्यप्रदेश में स्थित पांगुरारीया लघु-शिलालेख के करीब ढाई मीटर उंचाई पर लिखा एक लेख कहता है की पियदसि राजकुमार होते हुये अपनी सहेली के साथ यहाँ सैर करने आये थे। कुछ ऐतिहासिक तथ्य बताते हैं की यह स्थान बौद्ध भिक्षुओं का निवास था। राजकुमार पियदसि की सहेली जो विदिशा से पर्याप्त नजदीकी स्थान पर राजकुमार के साथ सैर करने हेतु आती है तो वह सहेली (जो भविष्य में महेन्द्र तथा संघमित्रा की माता है।) देवी ही थी यह बात निःसंदेह सच होगी। विदिशा देवी तथा उनका परिवार बौद्ध परंपरा को मानने वाला था। राजकुमार अशोक का बौद्ध युवती के साथ बौद्ध भिक्षु-संघ के निवास के स्थान पर सैर करना, यह उनके मन में कुमार अवस्था में ही बौद्ध परंपरा के लिये सम्मान पूर्ण स्थान होने का प्रमाण है।

सम्राट अशोक ने लघु-शिलालेख लिखना कब आरंभ किया इसकी जानकारी ब्राह्मि लघु-शिलालेखों में भले ही नहीं दी है, लेकिन अफगाणीस्तान के कंदाहर शहर के पास चिल-झिना या चेहेल-झिना नामक एक पहाड़ पर इ.स. १९५८ में सम्राट अशोक का एक शिलालेख प्राप्त हुआ है। यह शिलालेख ग्रीक तथा आरामाईक इन दो भाषाओं में लिखा गया है। इन दोनों ही शिलालेखों में पहले वाक्य में यह शिलालेख अभिषेक के दसवें वर्ष की समाप्ति पर लिखा जाने का स्पष्ट उल्लेख है। इस शिलालेख का व्यंजन, पूर्वाध में सम्राट के बृहद्-शिलालेख के पहले चरण से तथा उत्तरार्ध में दूसरे लघु-शिलालेख से मेल रखता है। इस बात से यह भी प्रमाणित होता है कि, यह शिलालेख यहाँ के ब्राह्मि लघु-शिलालेख के लेखन समय (या इस के त्वरित पश्चात्) ही लिखा गया होगा, अर्थात् ब्राह्मि लघु-शिलालेख अभिषेक के दसवें साल में ही लिखे गये थे। अभिषेक के बारह साल बाद बृहद् शिलालेख और सत्ताईस साल बाद स्तंभलेख लिखे गए हैं। अभिषेक के दस साल बाद संबोधि (बोध-गया) यात्रा की गई थी। इस संबोधि यात्रा के पहले यह लघु-शिलालेख (भारत में ब्राह्मि तथा कंदाहर में द्विभाषी) लिखे गये थे। अभिषेक के बीस साल बाद लुंबिनी, बुद्ध के जन्मस्थान, और कोनागमन स्तूप का दौरा किया गया था। यह यात्राएं लगातार नहीं हैं। फिर यह २५६ दिनों की यात्रा (या ऐसी कोई अन्य यात्रा) लघु शिलालेखों के लेखन समय के साथ-साथ हो, यह बात संभव नहीं है। लघु शिलालेखों में वर्णन किये गये दोनों अवधि (बौद्ध उपासक के नाते तथा संघ के समीप रहना) अभिषेक के दस साल तक, संबोधि यात्रा से पहले, समाप्त हो गए होंगे। अगर ऐसा न हुआ होता तो संबोधि यात्रा का संकेत लघु-शिलालेखों में लिखा जाना संभवनीय है। फिर यह बात भी संभव नहीं है कि एक चक्रवर्ती सम्राट ने २५६ दिनों की निरंतर (धम्म)यात्रा, यानी साढ़े आठ महीनों की यात्रा की होगी। २५६ दिनों में सामान्य प्रकृति का एक आम आदमी सम्राट अशोक के विशाल साम्राज्य का दौरा करने में सक्षम होगा। (एक विशेष धम्म-यात्री, आयु. दीपक आनंद, जो हाल ही में बोध गया से सारनाथ पैदल चलकर गये थे, उनकी यह पद-यात्रा केवल तेरह दिनों में संपन्न हुई थी। जगत-जेता सिकंदर भी दो वर्षों में जगह जगह पर युद्ध करते हुये भारत से वापस लौट गया था। उस के इस युद्ध सफर का क्षेत्रीय अंतर बौद्ध तीर्थ के अंतर से कई गुना अधिक था।) सम्राट अशोक के लिए दूसरे अवधि के दौरान २५६ दिनों की यात्रा करना संभव नहीं है, क्यों की वे इस अवधि में संघ के समीप रहे है। इस

अवधी के पहले अगर यात्रा की होगी तो वह यात्रा का समय कलिंग युद्ध के समय के साथ मेल खाता है।

इन सभी बातों का एक साथ गंभीरता से विचार करें तो २५६ दिनों की यात्रा बिलकुल ही असंभव होती है।

“२५६ रातें दूर रहते हुये” यह अर्थ गलत है इस बात को सिद्ध करने के लिये एक और प्रमाण सम्राट अशोक के शिलालेखों में ही मौजूद है। वह ऐसे की सम्राट अशोक के समय में चांद्र-मास, चांद्र-मास के दो पक्ष, हर पक्ष में पंद्रह दिन इस तरह की कालगणन संकल्पनाएँ मौजूद थी। इस का प्रमाण टोपरा स्तंभ लेख क्रमांक पाँच में मौजूद है। इतना ही नहीं बल्कि इसी स्तंभ लेख में तिष्य और पुनर्वसु नक्षत्र का स्पष्ट उल्लेख है। धौलि तथा जौगड शिलालेखों में भी तिष्य नक्षत्र का उल्लेख है। इस पार्श्वभूमी पर २५६ रातें यह कथन हो ही नहीं सकता क्यों की जैसे ढाई संवहर कहा गया है उसी तरह साडे आठ महीने कहना सार्थ है, न की २५६ रातें। अतः साडे आठ महीनों के समय के लिये २५६ दिन कहना असंभव है।

(आयुष्यमान दीपक आनंद, बालाचडी, गुजराथ में माध्यमिक शिक्षित, भावनगर से अभियांत्रिकी शिक्षा पाकर चंदीगढ़ से उच्च शिक्षित, बौद्ध जीवन मार्ग के दृढ विश्वासी व्यक्ति है।)

देहली (टोपरा) स्तंभ का दक्षिण प्रतल  
लेख का निचला हिस्सा

- ६३।६३ इक्ष्वाकुः सप्तमस्तंभः सप्तमस्तंभः  
 १२. ईक्ष्वाकुः सप्तमस्तंभः सप्तमस्तंभः  
 १३. इक्ष्वाकुः सप्तमस्तंभः सप्तमस्तंभः  
 १४. इक्ष्वाकुः सप्तमस्तंभः सप्तमस्तंभः  
 १५. इक्ष्वाकुः सप्तमस्तंभः सप्तमस्तंभः  
 १६. इक्ष्वाकुः सप्तमस्तंभः सप्तमस्तंभः  
 १७. इक्ष्वाकुः सप्तमस्तंभः सप्तमस्तंभः  
 १८. इक्ष्वाकुः सप्तमस्तंभः सप्तमस्तंभः  
 १९. इक्ष्वाकुः सप्तमस्तंभः सप्तमस्तंभः  
 २०. इक्ष्वाकुः सप्तमस्तंभः सप्तमस्तंभः

११. जीवेनजीवे नोपुसितविये तीसुचातुंमासीसु तिसायंपुंनमासियं  
 १२. तिनिदिवसानि चावुदसं पंनडसं पटिपदाये ध्वायेचा  
 १३. अनुपोसथ मछेअवधाये नोपिविकेतविये एतानियेवादिवसानि  
 १४. नागवनसि केवटभोगसि यानिअंनानिपि जीवनिकायानि  
 १५. नोहंतवियानि अठमिपखाये चावुदसाये पंनडसाये तिसाये  
 १६. पुनावसुने त्रासुचातुंमासीसु सुदिवसाये गोनेनोनीलखितविये  
 १७. अजके एडके सूकले एवापिअंने नीलखियति नोनीलखितविये  
 १८. तिसाये पुनावसुने चतुंमासिये चातुंमासिपखाये अस्वसा गोनसा  
 १९. लखने नोकटविये यावसडुवीसतिवस अभिसितेनमे एताये  
 २०. अंतलिकाये पंनवीसति बंधनमोखानिकटानी

## हिन्दी अनुवाद

(एक) जीव पर (दूसरे) जीव का पोषण न हो। चातुर्मास बरसात के चार मास (आषाढ, सावन, भादों, अश्विन) और (तिसाय=) तिष्य तथा पुनर्वसु<sup>(६)</sup> (के मास की) पूर्णिमा और प्रत्येक पक्ष (मास के पंद्रह दिनों के दो भाग) की चतुर्दशी, पंद्रह वा दिन (अमावस/पूर्णिमा) तथा प्रतिपदा इन दिनों में निश्चित (नित्य-नेम से) उपवास (उपोसथ) किया जाये और इन दिनों में मछली-मारी न करें या मछली न बेंचें। इसी प्रकार इन दिनों में हाथी-वन में (घना जंगल, जहाँ हाथी बसते हैं) अथवा मछली-मारी तालाब में जो जीव रहते हैं, उन्हें न मारें (अर्थात् इन दिनों में घने जंगल में या बड़े तालाब में शिकार न करें)। प्रत्येक (सभी मास के) पक्ष की अष्टमी, चतुर्दशी, पंद्रह वा दिवस (अमावस/पूर्णिमा) और तिष्य व पुनर्वसु<sup>(६)</sup> के मास, चातुर्मास के (बरसात के) चार मास के शुभ दिन (त्योहार) बैलों को बधिया न करें। इसी प्रकार बकरे, भेड़िये, सुवर व अन्य जिन्हें बधिया जाता है, उन्हें बधिया न करें। तिष्य व पुनर्वसु में, चातुर्मास के (बरसात के) चार पक्षों में (पूर्णिमा के दिन) बैल तथा घोड़ों को लक्ष न करें (वध न करें)। यह अभिषेक के बाद छब्बीसवाँ वर्ष है, इस अंतराल में (अवधि में) मैंने पच्चीस बार बंदियों को मुक्त किया है।

अब इस स्तंभ लेख में लिखे हुये कालगणन संबंधित शब्दों को पढ़ने और समझने के बाद २५६ इस संख्या से २५६ रातें (दिन) यह मतलब अ-तार्किक साबित होता है। २५६ दिनों से साडे आठ महीने होते हैं, इस सचाई को समझने वाला व्यक्ति साडे आठ महीने न कह कर २५६ रातें कहे, यह अनाकलनीय है। इस कारण २५६ विवासात इन शब्दों से “२५६ समय (वर्ष) तथागत से दूर रहते हुये” यह मतलब समझना गलत नहीं है।

-----

(६) - सम्राट अशोक बारह महीनों में बरसात के चारों मास को पवित्र मानते हैं, यह बात समझ सकते हैं, क्यों की यह वर्षावास का समय है। लेकिन तिष्य और पुनर्वसु के मास की पवित्रता क्या है, इस बात पर अधिक अध्ययन आवश्यक है। मैं इस बात पर अपना संशोधन कुछ समय बाद अवश्य साझा करूंगा।

**कब लिखे गये थे लघु शिलालेख ?**

चेहेल झिना, कंदाहर (अफगाणिस्तान) के शिलालेख  
द्विभाषी शिलालेख से ग्रीक लेख की आँखों-देखी प्रति कृति

Greek Inscription

ΔΕΚΑΣΤΩΝ ΠΛΗΡΗ Η ΒΑΣΙΛΕΥΣ  
 2 ΠΙΟΔΑΣΣΗΣ ΕΥΣΕΒΕΙΑΣ ΕΔΕΙΞΕΝ ΤΟΙΣ  
 ΘΡΑΠΟΙΣ ΔΙΑΠΡΟΤΟΥ ΤΟΥ ΕΥΣΕΒΕΣΤΕΡΟΥΣ  
 4 ΤΟΥΣ ΑΝΘΡΩΠΟΥΣ ΕΠΟΙΗΣΕΝ ΚΑΙ ΠΑΝΤΑ  
 ΕΥΘΗΝΕΙ ΚΑΤΑ ΠΑΣΑΝ ΓΗΝ ΚΑΙ ΑΠΕΧΕΤΑΙ  
 6 ΒΑΣΙΛΕΥΣ ΤΩΝ ΕΜΨΥΧΩΝ ΚΑΙ ΟΙ ΛΟΙΠΟΙ ΔΕ  
 ΑΝΘΡΩΠΟΙ ΚΑΙ ΟΣΟΙ ΘΗΡΕΥΤΑΙ Η ΑΛΙΕΙΣ  
 8 ΒΑΣΙΛΕΥΣ ΠΕΠΑΥΝΤΑΙ ΘΗΡΕΥΟΝΤΕΣ ΚΑΙ  
 ΕΙΤΙΝΕΣ ΑΚΡΑΤΕΙΣ ΠΕΠΑΥΝΤΑΙ ΤΗΣ ΑΚΡΑ  
 10 ΣΙΑΣ ΚΑΤΑ ΔΥΝΑΜΙΝ ΚΑΙ ΕΝΗΚΟΙ ΠΑΤΡΙ  
 ΚΑΙ ΜΗΤΡΙ ΚΑΙ ΤΩΝ ΠΡΕΣΒΥΤΕΡΩΝ ΠΑΡΑ  
 12 ΤΑ ΠΡΟΤΕΡΟΝ ΚΑΙ ΤΟΥ ΛΟΙΠΟΥ ΛΩΙΩΝ  
 ΚΑΙ ΑΜΕΙΝΟΝ ΚΑΤΑ ΠΑΝΤΑ ΤΑΥΤΑ  
 14 ΠΟΙΟΥΝΤΕΣ ΔΙΑΞΟΥΣΙΝ

Transcription

Ashokan Inscription at Chil Zena  
Kandahar, Afghanistan

1 Δέκα ἐτῶν πληρη[θέντ]ων βασιλεὺς  
 2 Πιοδάσσης εὐσέβεια[ν] ἔδειξεν τοῖς ἀν-  
 3 θρώποις, καὶ ἀπὸ τούτου εὐσεβεστέρους  
 4 τοὺς ἀνθρώπους ἐποίησεν καὶ πάντα  
 5 εὐθηνεῖ κατὰ πᾶσαν γῆν, καὶ ἀπέχεται  
 6 βασιλεὺς τῶν ἐμψύχων καὶ οἱ λοιποὶ δὲ  
 7 ἄνθρωποι καὶ ὅσοι θηρευταὶ ἢ ἀλιεῖς  
 8 βασιλέως πέπαυνται θηρεύοντες, καὶ  
 9 εἴ τινες ἀκρατεῖς, πέπαυνται τῆς ἀκρα-  
 10 σίας κατὰ δύναμιν, καὶ ἐνήκοοι πατρὶ  
 11 καὶ μητρὶ καὶ τῶν πρεσβυτέρων παρὰ  
 12 τὰ πρότερον, καὶ τοῦ λοιποῦ λωῖον  
 13 καὶ ἀμεινον κατὰ πάντα ταῦτα  
 14 ποιοῦντες διάξουσιν.

(एपिग्राफिया इंडिका ३४ वे अवतरण से प्राप्त)

English Translation

Ten years (of reign) having been completed, King Piodasses made known (the doctrine of) Piety (εὐσέβεια, Eusebeia) to men; and from this moment he has made men more pious, and everything thrives throughout the whole world. And the king abstains from (killing) living beings, and other

men and those who (are) huntsmen and fishermen of the king have desisted from hunting. And if some (were) intemperate, they have ceased from their intemperance as was in their power; and obedient to their father and mother and to the elders, in opposition to the past also in the future, by so acting on every occasion, they will live better and more happily.

## हिन्दी अनुवाद

अपने अभिषेक के दस वर्षों के बाद राजा पियोदसी ने मानव जाती को सद् धर्म का मार्ग दिखलाया। और तब से उन्होंने मानव जाती को अधिक सद् धर्मी बनाया है। और संपूर्ण धरती पर सब कुछ समृद्ध हो रहा है। और राजा प्राणियों का (मांस का) परहेज करते हैं। और राजा के शिकारी तथा मछलीमार व अन्य सभी लोगों ने शिकार करना बंद किया है। और जो स्वयं पर नियंत्रण ना रख पाते हैं वह भी जितना हो सके उतना ऐसा व्यवहार रोक रहे हैं। और पूर्व व्यवहार से परे, माता तथा पिता और सभी बुजुर्गों से आज्ञाकारी बन रहे हैं। अब भविष्य में, इस प्रकार से व्यवहार करते हुये, एक अच्छे तथा सभी प्रकार से अधिक लाभदायक जीवन जी रहे हैं।

# द्विभाषी शिलालेख से आरामाईक लेख की आँखों-देखी प्रति कृति

## Aramaic Inscription

2 2  
 4 4  
 6 6  
 8 8

## Transcription

### ARAMAIC TEXT<sup>2</sup>

1 שגנ - פתיתו עביר זי מראן פרידרש מלכא קשיטא מהקשט  
 2 מן אדין זעיר מרעא לכלהם אנשן וכלהם אדושיא הוכד  
 3 ובכל ארקא ראמשתי ואף זי זגה במאכלא למראן מלכא זעיר  
 4 קטלן זגה למחזה כלהם אנשן אתהחסינן אזי זוגיא אתרן  
 5 אלך אנשן פתיובת כגם זי פרבסת הוין אלך אתהחסינן מן  
 6 פרבסתי והופתיסתי לאסוהי ולאבוהי ולמוישתיא אנשן  
 7 איך אסרהי חלקותא ולא איתי דינא לכלהם אנשיא חסין  
 8 זגה הותיר לכלהם אנשן ואוסף יהותר

(एपिग्राफिया इंडिका ३४ वे अवतरण से प्राप्त)

## Translation in English

1. Ten years having elapsed. It so happened that our lord, king Priyadasin, became the institutor of Truth,
2. Since then, evil diminished among all men and all misfortunes lie caused to disappear; and [there is] peace as well as joy in the whole earth.
3. And, moreover, [there is] this in regard to food: for our lord, the king, [only] a few
4. [animals] are killed; having seen this, all men have given up [the slaughter of animals]; even those men who catch fish (the fishermen) are subject to prohibition.
5. Similarly, those who were without restraint have ceased to be without restraint.
6. And obedience to mother and to father and to old men [reigns] in conformity with the obligations imposed by fate on each [person].
7. And there is no (harsh) Judgement for all the pious men,
8. This [Morality] have been profitable to all men and will be more profitable [in future].

## हिन्दी अनुवाद

१. दस साल बीत चुके हैं। ऐसा हुआ कि हमारे स्वामी, राजा प्रियदसिन, सत्य के प्रवर्तक बन गए,
२. तब से, सभी मनुष्यों के बीच बुराई कम हो गई और सभी दुर्भाग्य गायब हो गए; और सारी पृथ्वी पर शान्ती और आनन्द है।
३. और भोजन के विषय में यह भी है: हमारे प्रभु राजा के लिये थोड़े ही
४. [जानवर] मारे जाते हैं; यह देखकर सभी मनुष्यों ने [पशु वध] छोड़ दिया है; यहां तक कि वे लोग जो मछली पकड़ते हैं (मछुआरे), वे भी प्राणी-वध का निषेध करते हैं।
५. इसी तरह, जो बिना संयम के थे, वे संयम अपना रहे हैं।
६. और प्रत्येक [व्यक्ति] पर भाग्य द्वारा लगाए गए दायित्वों के अनुरूप माता और पिता और बुजुर्गों की आज्ञाकारिता बनी हुई है।
७. और सब धर्म परायणोंके लिये कोई (कठोर) न्याय नहीं,
८. यह [नैतिकता] सभी मनुष्यों के लिए लाभदायक हो रही है और भविष्य में अधिक लाभदायक होगी।

- - - - -

इस तरह ग्रीक तथा आरामाईक दोनों ही भाषा में बिलकुल एक जैसा संदेश लिखा हुआ जान पड़ता है। दूसरी समझ-बुझ की बात यह है की, यह शिलालेख सम्राट अशोक की अपनी कहनी नहीं है, बल्कि सम्राट अशोक के आदर्शों की बात (उन्हें समझने वाला) कोई और कह रहा है। शायद उनका कोई (राज काजी) महामात्र या धर्म-महामात्र यह संदेश दे रहा है। सम्राट की राजधानी पाटलीपुत्र से इस जगह की दूरी समझते हुये यह बिलकुल निश्चित है की, यहां पर सम्राट के जिन जनहित आदेशों के परिणाम वर्णन किये है, उनके अनुपालन के कुछ समय बाद यह संदेश इस प्रांत में पहुँचा होगा और फिर वह लिखा गया होगा। अगर यह लेखन अभिषेक के दश-वर्ष पूर्ति के बाद हुआ है तो सम्राट का यह संदेश स्थानिक लोगों के लिये यहां से कुछ समय पहले ही दिया गया होगा। शायद सम्राट अशोक की संबोधी यात्रा के कुछ समय पहले, क्यों की संबोधी यात्रा अभिषेक के दसवे वर्ष में की गयी थी। ब्राम्हि लघु-शिलालेख संबोधी यात्रा के पहले लिखे जानेका यह भी एक निश्चित प्रमाण है। इस दौरान २५६ या अधिक दिनों की (साडे आठ मास से अधिक) यात्रा संभव नहीं है, बल्कि यात्रा की यह बात मनगढ़त है।



## ROCK AT RUPNATH.

*Translation by* DR. G. BÜHLER.

See *Indian Antiquary*, 1877, page 156.

“The beloved of the gods speaketh thus: [*It is*] more than thirty-two years and a half that I am a hearer [*of the law*], and I did not exert myself strenuously. But it is a year and more that I have entered the community [*of ascetics*], and that I have exerted myself strenuously. Those gods who during this time were considered to be true [*gods*] in Jambudvīpa have now been abjured. For through exertion [*comes*] this reward, and it cannot be obtained by greatness. For a small [*man*], who exerts himself somewhat can gain for himself great heavenly bliss. And for this purpose, this sermon has been preached: ‘Both great ones and small ones should exert themselves, and should in the end gain [*true*] knowledge, and this manner [*of acting*] should be what? Of long duration. For this spiritual good will grow the growth, and will grow exceedingly, at the least it will grow one [*size*] and a half.’ And this matter has been caused to be written on the hills; [*where*] a stone pillar is, [*there*] it has been written on a stone pillar. And as often as [*man brings*] to this writing ripe thought, [*so often*] will he rejoice, learning to subdue his senses.\* This sermon has been preached by the DEPARTED. 256 [*years have elapsed*] since the departure of the TEACHER.”

## ROCK AT SAHASARAM.

*Translation by* DR. G. BÜHLER.

See *Indian Antiquary*, 1877, page 156.

“The beloved of the gods speaketh thus: [*It is more than thirty-two*] years [*and a half*] that I am a worshipper [*of Buddha*], and I have not exerted myself strenuously. [*It is*] a year and more [*that I have exerted myself strenuously*]. During this interval those gods that were [*held to be*] true gods in Jambudvīpa have been made [*to be regarded as*] men\* and false. For through strenuous exertion comes this reward, and it ought not to be said to be an effect of [*my*] greatness—For even a small man who exerts himself can gain for himself great rewards in heaven. Just for this purpose a sermon has been preached.

“Both small ones and great ones should exert themselves, and in the end they should also obtain [*true*] knowledge. And this spiritual good will increase; it will even increase exceedingly; it will increase one [*size*] and a half, at least one [*size*] and a half.’ And this sermon [*is*] by the DEPARTED. Two-hundred [*years*] exceeded by fifty-six, 256, have passed since; and I have caused this matter to be incised on the hills; or where those stone pillars are, there too I have caused it to be incised.”

---

\* This phrase probably alludes to the Buddhist belief that the *Devas* also have shorter or longer terms of existence.

मूल ब्राम्हि शिलालेख

ROCK AT BAIRĀT  
near Jaypur.

- 1    ८ ७ ३ ५ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
- 2    १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
- 3    १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
- 4    १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
- 5    १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
- 6    १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
- 7    १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
- 8    १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

देवनागरी लिप्यंतरण

पियदसिलाजामागधेसंघंअभिवादेमानंआहाअपाबाधंतंचफासुविहालतंच  
 विदितेवेभंतेआवंतकेहामाबुधसिधंमसिसंघसीतिगलवेचंपसादेचएकेंचिभंते  
 भगवताबुधेनभासितासवेसेसुभासितेवाएचुखोभंतेहमियायेदिसेयांहेवंसंधंमे  
 चिलितीकेहासतीतिअलहामिहकंतवितवेइमानिभंतेधंमपलियायानिविनयसमुकसे  
 अलियवसाणिअनागतभयानिमुनिगाथामोनेयसूतेउपतिसपसिनेएचालाघुलो  
 वादेमुसावादंअधिगिच्यभगवताबुधेनभासितेएतानभंतेधंमपलियायानिइछामि  
 किंतिबहुकेभिखुपायेचाभखुनियेचाअभिखिनंसुनयचाउपधालेयेयुचा  
 हेवंमेवाउपासकाचाउपासिकाचाएतेनिभंतेइमंलिखापयामिअभिपेतंमजानंतति

## प्राकृत भाषा के सार्थ वाक्य

पियदसि लाजा मागधे संघं अभिवादेमानं आहा अपाबाधंतं च फासुविहालतं च. विदिते वे भंते आवंतके हामा बुधसि धंमसि संघसी ति गलवे चं पसादे च. ए केंचि भंते भगवता बुधेन भासिता सवे से सुभासिते वा. ए चु खो भंते हमियाये दिसेयां. हेवं सधंमे चिलठितीके हासती ति अलहामि हकं त वितवे इमानि भंते धंमपलियायानि विनयसमुक्से अलियवसाणि अनागतभयानि मुनिगाथा मोनेयसूते उपतिसपसिने ए चा लाघुलो वादे मुसावादं अधिगिच्य भगवता बुधेन भासिते एतान भंते धंमपलियायानि इछामि. किंति बहुके भिखुपाये चा भिखुनिये चा अभिखिनं सुनय चा उपधालेयेयु चा. हेवंमेवा उपासका चा उपासिका चा एतेनि भंते इमं लिखापयामि अभिपेतं म जानंतति.

## हिन्दी अनुवाद

प्रियदर्शी, मगध का राजा, संघ को अभिवादन करते हुये (आपको) अल्प-बाधित (कम दुविधा) तथा सुखद विहार की (इच्छा) व्यक्त करते हैं। आप जानते हैं की मुझे बुद्ध, धम्म और संघ के प्रति कितना गौरव और श्रद्धा है। हे भन्ते! भगवान बुद्ध ने जो कुछ भी कहा है, सभी सुभाषित है। परंतु हे भन्ते ! जैसे मैं देखता (समझता) हूँ, यह सद्धम्म चिर स्थापित होगा। मुझे (आपको) यह बताना योग्य लगता है कि, अहो भंते ! यही धम्म का पर्याय है, विनय-समुत्कर्ष, आर्य-परंपरा (सुजनों का कर्तव्य), अनागत-भय, मुनीगाथा, मोनेयसुत्त, उपतिस्स-प्रश्न (सारिपुत्त-प्रश्न), राहुल-वाद तथा मुसावाद इन संदर्भ में भगवान बुद्ध ने जो कुछ भी कहा है। इसलिये हे भन्ते ! मैं ऐसी इच्छा करता हूँ की, यह धम्म-पर्याय बहुत: (सभी) भिक्षु व भिक्षुणीं हर समय सुनते रहे और धारण करते रहे। और उपासक व उपासिका भी। हे भन्ते ! इसी कारण यह लिखवाता हूँ की, मेरा अभिप्राय (हेतु) जान लो।

यहाँ पर सम्राट अशोक संघ को अभिवादन कर रहे हैं, लेकिन यह अभिवादन मगध के राजा की हैसियत से है, न की संघ के समीप रहने वाले व्यक्ति के हैसियत से। इस बात से भी यह साबित होता है की यह शिलालेख सम्राट अशोक ने संघ के समीप रहने की करीब डेढ वर्ष की अवधी के तुरंत बाद लिखा है। संघ के साथ यह घनिष्ठता के कारण ही इसके बाद सम्राट ने धंमयात्रा (संबोधि यात्रा) की होगी। यात्रा का यह समय लघु शिलालेख लिखने के बाद का है, इसी कारण इसका संकेत लघु शिलालेखों में होने की कोई संभावना

नहीं है। उत्तर भारत में लिखे इन सभी शिलालेखों का लेखन समय एक दूसरे से निकट होने की संभावना अधिक है। लिखावट का तौर तरीका भी इसी बात को दर्शाता है।



## देवनागरी लिप्यंतरण लेख १३ (उत्तरार्ध)

.....

..... नके इछस .....

सवत ..... इयम ..... लिय मदवं ति इयं वू सु .....

देवानंपियेसा ये धंमविजय स च पेना लधे देवानंपि....

सवेस च अतेसु अससु पि छाजने...सतेस अते अंतियोगे नाम योने ... ल चा तेना

अंतियोगेना च तलि ४ लजाने तुलमये नाम अंतिकेन नाम मका नाम अलिक्यसदले नाम  
नीचं चोड पांडिया अवं तंबपंनिया हेवमेवा. हेवमेवा रप ...लजा विश्मवसि योन कबाजेसु  
नेभकु नाभपंतिसं भज पितिनिकेसु अधपुलदेसु सवता देवानपियसा धंमानुचुथी  
अनवतंति यात पि दुत

देवानंपियसि नी यंति ते पि सुतु देवानंपिनिय लववुतं माचुनं

धंमानपसथी धंम अनुविधियं अ अनुविधियि सा अचा ये...लाच

एतकेना होति सवत विजये पितिलसे से गधा सा होति पिति होति धंमविजयंसि लहका वे  
खो सा पिति पालंतिक्यमेवे महफला मनंति देवानंपिये.

एताये चा अठाये इयं धंमलिपी लिखिता किति पुता पायोता मे अन

नव विजयम विजतविय मनिसु सयकसि नो विजय से खंति चा लंव

दडतेवा लोचे प तमेव चा विजयं मनत ये धंमविजये से हिदलोकिक्य पललोकिये सवा च  
कु निलतिहे..उयाम लति पा पि हिदालोकिक पललोकिक्या

### शिलालेख क्र.१४ (पंक्ति-१९)

इयं धंमलिपि देवानंपियेना पियदसिना लजिना लिखापिता अथिये वा संखि

तेना अथि मझिमेना अथि विथटेना नो हि सवता सवे घंटिते महालकेहि

विजिते बहु व लिखिते लेखापेशामि चेव निक्क्यं अथि मि हेता सुन पुनलपि

तेत सत असथसा मधुलियिये येन जने तथा पटिपजेया से लोया अतकिछि असमति

लिखिते दिसा वा संखिते कालनं वा अलोचयिस लिपिकलपलाधेन वा

### हिन्दी अनुवाद

(देवानंप्रिय सभी प्राणिमात्रों का कल्याण, संयम, निःपक्षपात की इच्छा करते हैं। - क्षतिग्रस्त

**अक्षरों के लिये शहाबाजगढी के लेख अनुसार)**

देवानंप्रिय की राय से यही महान विजय है। यह देवानंप्रिय ने प्राप्त किया है, यहाँ और सभी पडोसी राज्य मे भी। छह सौ योजन तक जहाँ अंतियोग नाम का यवनराजा और अंतियोग के परे ४ राजे तुरमय नाम का, अंतिकेन नाम का, मग नाम का, अलिक्यसदल नाम का और निचे चोड, पांडिय, तंबपनी। इसी प्रकार इस राज्य के राजे यवन, कंबोज, नाभक, नाभपंति, भोज व पितानिक, आंध्र व पुलिंद सर्वत्र धम्म अनुशासन का पालन हो रहा है। जहाँ देवानंपिय के दूत पहुँचे नहीं वहाँ भी देवानंपिय के वचन, विधान और धंम अनुशीलन सुनकर प्रजाजन वैसा आचरण करते है। इस प्रकार सर्वत्र विजय हुवा है। प्रीतीरस से विजय मिला है। प्रीती धम्मविजय से मिलती है। लेकिन यह छोटा सा (यश) है। देवानंपिय केवल परमार्थ को ही महान विजय मानते है। इसलिये यह नीती-लेख लिखवाया है। किसलिये ? की मेरे पुत्र, पौत्र यह सभी ऐसे (सशस्त्र) विजय को न माने मगर यह नवीन विजय को ही मानते रहे। वे क्षमा और लघु दंड में ही स्वारस्य मानते रहे। इसी में विजय मानते रहे जो धम्मविजय है। इसी मे इहलौकीक और पारलौकिक है। यह परम आनंद दायक है, इहलोक में और परलोक में।

**शिलालेख क्र. १४ हिन्दी अनुवाद**

यह नीती-लेख देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजा ने लिखवाये है। यह संक्षेप में है, मध्यम है, विस्तृत है। सभी (बातों का) सर्वत्र मेल न होता होगा। (मैं ने बहुत) विशाल जीत लिया है, बहुत लिखवाया है, लिखवाना भी है। यहाँ जैसे जैसे मधुर (अच्छा), है, बार बार (लिखवाया) है, ताकि लोग वैसा प्रतिपादन करें। एकाध (जगह) लिखावट में समतल न होगी कारण की वह प्रदेश (प्रदेश - स्थान) क्षतिग्रस्त होगा, या दूसरे के (गलत) कहने से या लेखनिक के अपराध से (गलती से)।

सम्राट अशोक के ही कालसी (उत्तराखंड) में स्थित इस शिलालेख में उनके समकालीन कुछ राजाओं के नाम लिखे गये है। भारत में इस काल में भले ही कोई अविरत कालगणन अस्तित्व में नहीं था, लेकिन मेसिडोनिया तथा बॅबिलोनिया में ईसा पूर्व कई सदियों से पहले ही अविरत कालगणन अस्तित्व में रहा था, इस के संकेत प्राप्त होते है। जगतजेता सिकंदर जब दुनिया जीतने के लिये निकला था, तब उसने वहाँ पर प्रचलित चांद्र-सौर कालगणन में अधिक मास का आयोजन किया था। इस का कारण यह था की, जिस मास में उस ने दुनिया जीतने के अभियान की योजना बनाई थी, वह मास उनकी श्रद्धा के अनुसार युद्ध के लिये अशुभ था। कालगणन संकल्पनाओं का वर्णन करने वाली कीलाक्षरों में लिखी कई मिट्टी की पट्टियाँ वहाँ से प्राप्त हुई है।

इस मौजूद कालगणन के अनुसार सम्राट अशोक के शिलालेख में लिखे राजाओं का

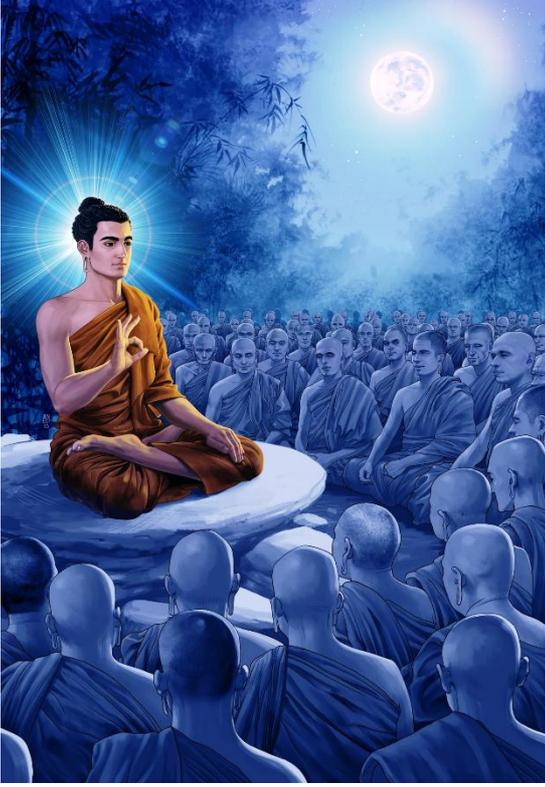
कालावधी ईसाई कालगणन से सम क्रमण करते हुए निश्चित किया गया है। इस के साथ तुलनात्मक अध्ययन से सम्राट अशोक का कालावधी निश्चित किया जाता है। इसी के अनुसार लघु-शिलालेखों के संदर्भ से तथागत बुद्ध के महापरिनिर्वाण का वर्ष निश्चित किया जा सकता है।

इसी की कालगणन (समय निश्चिती) तालिका का अगले पृष्ठ पर दी गई है। इस तालिका के अनुसार तथागत बुद्ध का महापरिनिर्वाण वर्ष ईसा पूर्व ५१६ में हुआ होगा यह बात पत्थर की लकीर है। क्यों की यह सच्चाई, अन्य महापरिनिर्वाण वर्ष निर्धारण के संकल्पनाओं से कुछ शतक वर्ष पहले, भारत भर में कई जगहों पर, पत्थरों पर सम्राट अशोक महान ने लिखवाये संज्ञान पर आधारित है।

## सम्राट अशोक की समय निश्चिती

अलेक्झांडर से सम्राट अशोक तक का कालावधी (इ.स.पूर्व)		पाँच समकालीन राजा का सामायिक कालावधी (इ.स.पूर्व)		
अलेक्झांडर भारत से लौट जाना	३२५	टोलेमी (दूसरा)	२८६ से २४६	
चंद्रगुप्त मौर्य का शासन	३२२ से २९८	अँटीगोनस (दूसरा)	२७७ से २३९ (दो बार राजा)	
बिंदूसार मौर्य का शासन	२९८ से २७२	मगास	२७६ से २५०	
सम्राट अशोक का राज्यारोहण	२७२	अलेक्झांडर (दूसरा)	२७२ से २५५	
सम्राट अशोक का अभिषेक	२६९	अँटीयोकस (दूसरा)	२६२ से २४६	
सम्राट अशोक का काल	सम्राट अशोक के जीवन संदर्भ	इसवी सन पूर्व वर्ष	पाँच समकालीन राजाओं का सामायिक अवधी	गौतम बुद्ध के पश्चात कालगणन
राजकुमार अशोक		२७५		२४१
		२७४		२४२
		२७३		२४३
अभिषेक पूर्व राजा अशोक	राज्यारोहण	२७२		२४४
		२७१		२४५
		२७०		२४६
१	राज्याभिषेक	२६९		२४७
२		२६८		२४८
३		२६७		२४९
४		२६६		२५०
५		२६५		२५१
६	उपासक	२६४		२५२
७	उपासक	२६३		२५३
८	कलिंग युद्ध	२६२	पाँच समकालीन राजाओं का सामायिक कालावधी	२५४
९	संघ के समीप, लघु-शिलालेख	२६१		२५५
१०	लेखन और संबोधी यात्रा	२६०		२५६ @
११	कंदाहर शिलालेख	२५९		२५७
१२	बृहद शिलालेख का लेखन	२५८		२५८
१३		२५७		२५९
१४		२५६		२६०
१५		२५५		२६१
१६		२५४		२६२
१७		२५३		२६३
१८		२५२	२६४	
१९		२५१	२६५	
२०	लुंबिनी, कोनागमन स्तुप यात्रा	२५०		२६६

@ - तथागत गौतम बुद्ध के महापरिनिर्वाण का २५६ वा वर्ष  
तथागत बुद्ध का महापरिनिर्वाण ईसा पूर्व ५१६ में होने का अनुमान निश्चित है।



## पहली वैशाख पूर्णिमा

तथागत बुद्ध के महापरिनिर्वाण वर्ष भारतीय इतिहास का कूट प्रश्न रहा है, यह बात जितनी सच है, उतनी ही सच यह बात भी है की, तथागत बुद्ध के महापरिनिर्वाण की तिथि का सही अनुमान नहीं किया गया है। फिर भी वैशाख पूर्णिमा बौद्ध परंपरा में एक अत्यधिक महत्वपूर्ण दिवस है, यह संपूर्ण बौद्ध जगत की मान्यता है। इसी कारण, यहाँ इसवी सन पूर्व ५१६ यह वर्ष तथागत बुद्ध का महापरिनिर्वाण वर्ष मान लिया जाये तो इस वर्ष की वैशाख पूर्णिमा का निश्चित दिवस तय करना होगा। ऐसे निश्चिती करण से इस दिवस

को बौद्ध कालगणन का आरंभ दिवस माना जाना अधिक संयुक्तिक होगा।

संपूर्ण जगत में, ईसा पूर्व कालगणन की खोज करने पर एक बात उभरकर आती है की, बॅबिलॉन तथा मेसोपोटेमिया में इस विषय में सबसे अधिक प्राचीन लिखित संकेत प्राप्त होते है। मेसोपोटेमिया एक शहर मारी में ईसा पूर्व १८ वे शतक, जो राजा हम्मुराबि का शासन काल रहा था, जगत का सर्वाधिक प्राचीन चंद्र-ग्रहण का आलेख प्राप्त हुवा है। असिरीया के एक लिपिक ने ईसा पूर्व ७६३ में सिमानु माह (मई-जून) में असुर शहर से देखे हुवे सूर्य ग्रहण का जिक्र किया है। जगत के इतिहास की काल निश्चिती करने में यही जिक्र अधिकतम सहायक हुवा है।

आधुनिक काल में खगोल-विज्ञान में कार्यरत संस्था नासा (NASA) ने ईसा पूर्व २००० से ईसाई वर्ष ३००० तक के कूल ५००० वर्षों के चंद्र-ग्रहणों की सूचि बनाई है। इस सुचि के २५५ वे खंड में ईसा पूर्व ६०० से ईसा पूर्व ५०१ तक के चंद्र-ग्रहणों की सूचि है। इस सूचि से प्राप्त विवरण अनुसार ...

३ मार्च ५१६ ईसा पूर्व चंद्र ग्रहण था, इसलिए पूर्णिमा थी।

२७ अगस्त ५१६ ईसा पूर्व चंद्र ग्रहण था, इसलिए पूर्णिमा थी।

इन पूर्णिमा तिथियों के बीच की गणना...

५१६ ईसा पूर्व में	०३ मार्च,
३० दिन बाद	०२ अप्रैल,
३० दिन बाद	<b>०२ मई,</b>
२९ दिन बाद	३१ मई,
३० दिन बाद	३० जून,
२९ दिन बाद	२९ जुलाई और
२९ दिन बाद	२७ अगस्त यह पूर्णिमा तिथियाँ हैं ।

(२९ तथा ३० दिनों का मास यह केवल समायोजन है, २९.५३०५८ दिनों के लिये)

सर्व बौद्ध जगत में मई माह की पूर्णिमा को ही वैशाख पूर्णिमा समझा जाता है। अतः इस वैज्ञानिक तर्क के सहारे हम साबित करते हैं की, ईसा पूर्व २ मई ५१६ के दिन वैशाख पूर्णिमा रही थी। यह दिवस रविवार था यह बात हम अगले कुछ पन्नों में सप्रमाण देखेंगे।

**विशेष टिप्पणी :** NASA ने चंद्र ग्रहण के दिनांक ई.स. १५८२ अक्तूबर तक जूलियन तथा इसके पश्चात ग्रेगोरियन पद्धति से दिये हैं।

सम्राट अशोक के लघु-शिलालेखों के आधार से तथागत बुद्ध के महापरिनिर्वाण वर्ष का सही-सही निर्धारण करने वाला संशोधन मैं ने कई जगहों पर प्रस्तुत किया है। मेरे इस संशोधन पुस्तिका में, मैं ने अहरौरा लघु-शिलालेख का एक वाक्य “अमंच बुधस सलिले आलोढे”, इसके अमंच इस शब्दका निश्चित अर्थ नहीं दिया है, बल्कि केवल कुछ अनुमानित अर्थ दिया है। मेरी यह पुस्तिका मेरे एक स्नेही ने पढ़ी। उन्होंने त्वरित ही मुझे दूरध्वनी संपर्क किया और कहा की, यहाँ पर अमंच शब्द के अर्थ का अनुमान करने की आवश्यकता बिलकुल ही नहीं है। क्यों की अमंच इन तीन अक्षरों का अर्थ २५६ होता है। जब मैं ने पूछा कैसे, तो उन्होंने मुझे जो जवाब दिया, मैं आपसे साझा करता हूँ।

भारत में प्राचीन समय में संख्या लिखने के लिये अक्षरों का प्रयोग किया जाता था। इस संख्या लेखन प्रणाली में, हमारे अक्षरमाला में जो अक्षर ‘क’वर्ग से ‘प’वर्ग तक पाँच वर्गों में विभाजीत है, उन्हें क्रमशः १ से २५ तक की संख्या के लिये निर्धारित किया है।

क	१	ख	२	ग	३	घ	४	ङ	५
च	६	छ	७	ज	८	झ	९	ञ	१०
त	११	थ	१२	द	१३	ध	१४	न	१५
ट	१६	ठ	१७	ड	१८	ढ	१९	ण	२०
प	२१	फ	२२	ब	२३	भ	२४	म	२५

स्वर अक्षर ‘अ’ से ‘औ’ तक ....

अ -	१०	आ -	१००	इ -	१०००	उ -	१००००
ए -	१०००००	ऐ -	१००००००	औ -	१०००००००	औ -	१००००००००

... ऐसा मान दिया हुआ था।

इस के अनुसार १ से २५ तक की संख्या सीधे से निर्धारित अक्षर से लिखी जाती थी। इस के आगे संख्या को दो या अधिक अक्षरों से लिखी जाती था।

जैसे की २७ के ये **अखछ** -> १०x२+७, और ४८ के लिये १०x४+८ अर्थात **अघज**। इसी तरह १०x२५+६=२५६ अर्थात **अमच** (अमंच)। अहरौरा लघु-शिलालेख में यही २५६ - **अमंच** लिखा गया है।

लखनौ में रहने वाले मेरे इस मित्र का नाम है ...

**डॉ.सोमेश चन्द्र श्रीवास्तव** और इनकी पदवी-उपाधि है ....

**B.Sc., MBBS, MS(ENT), MA (History).**



## Institute of Social Science & Management Studies & Great Ashoka Foundation

One Day National Conference on Multidisciplinary Research in



## BUDDHIST PHILOSOPHY AND GLOBAL PERSPECTIVE OF HUMAN WELFARE (बौद्ध दर्शन और मानव कल्याण का वैश्विक परिदृश्य)

Date : 17 October 2024, Thursday

Venue : Jabalpur (M.P.), INDIA

# CERTIFICATE

## Best Paper Presentation Award

This is to certify that Prof./Dr./Shri./Mrs./Mr./Ku

**Ashok Kondaji Tapase**

University / College / Organization

**Independent - Freelance Researcher, Thane, Maharashtra**

Registration No. **B-121** Subject **Buddhist Philosophy**

attended the One Day National Conference on Multidisciplinary Research in Buddhist Philosophy and Global Perspective of Human Welfare. National Conference jointly organized by Institute of Social Science & Management Studies & Great Ashoka Foundation.

He / She successfully presented a paper entitled... **Misconstrue of Number 256 in...**

**Minor Rock Inscription of Ashoka and Mahaparinirvan Year of Tathagat Buddha**

Best Paper Presentation Award given by Association.

**Dr. Awadhesh Yadav**  
Assistant Professor,  
Department of Philosophy,  
Lakshmi Bai College,  
University of Delhi, India

**Dr. Abhay Kumar**  
(Secretary of Organizing Committee)  
Assistant Professor Philosophy,  
Eklavya University, Damoh (M.P.)  
Member SSMWA

**Dr. Dinesh Patel**  
(Convener of Conference)  
Dr. B. A. K. B. S. C., Mahatma Gandhi  
Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya,  
Wardha, Maharashtra, India  
Member SSMWA

**Ranjana Jha**  
(Co-Convener of Conference)  
Assistant Professor,  
Eklavya University,  
Damoh (M.P.)

Office : 320, Sanjeevani Nagar, Veer Sawarkar Ward Garha, Jabalpur (Madhya Pradesh), INDIA-482003  
Cell : 8305476707, 9770123251, Email : issmwa.in@gmail.com, Website : www.issmwa.com



# INDIAN SOCIETY FOR BUDDHIST STUDIES (ISBS)

(Registered under the Societies Registration Act VI of J & K vide No. - 4113-5 of 2002)

## 24th ANNUAL CONFERENCE

Hosted By :

Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University, Ramtek, Maharashtra

September 14-16, 2024

### Certificate of Attendance

Certified that Prof./Dr./Shri/Smt./Ktm. Ashok Kondaji Tapse .....  
from Independent Researcher ..... attended the Conference and actively participated in its  
deliberations. He/She presented a research paper entitled Tathagata Buddha ka .....  
Maha parinibbana Katha .....

No T.A./D.A. has been paid to him/her for attending the Conference.

  
(S.P. Sharma)  
President

  
(M.M. Pathak)  
General President

  
(Saswati Mutsuddy) 14/9/2024  
Secretary

  
(Prasad Gokhale)  
Local Secretary

## कालगणन पद्धति

संपूर्ण जगत में अनेक प्रकार से कालगणन किया जाता है। हर एक देश का अपना कालगणन प्रचलित होता है। दुनिया भर के लोगों का एक दूसरे से होने वाला संवाद समय की पार्श्वभूमी पर एक दूसरे को आकलनीय होता रहे इसलिए सभी लोग समझ सके ऐसा कालगणन सभी ने मान्य किया है। ईसवी कालगणन यह जागतिक स्तर पर सभी देशों के लिए सामूहिक कालगणन के रूप में स्वीकार किया गया है। फिर भी करीब करीब सभी देश अपने स्वयं का एक कालगणन अनुसरण करते हैं। भारतीय राष्ट्रीय कालगणन यह शक संवत्सर के अनुसार परंतु सौर कालगणन पद्धति पर बनाया गया है। ईसवी दिनांक २२ मार्च १९५७ इस दिवस को १ चैत्र १८७९ मान कर यह कालगणन अस्तित्व में लाया गया है।

कालगणन प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण और सभी समझ सके ऐसा घटक सौर दिवस होता है। एक सूर्योदय से लेकर दूसरे सूर्योदय तक का अवधि एक सौर दिवस कहलाता है। सूर्य दिवस के रात और दिन इसका अवधि ऋतु के अनुसार बदलता रहता है। इसलिए संपूर्ण वर्ष के सभी सौर दिनों का औसत अवधि एक सौर दिवस माना जाता है। (यहां पर वर्ष किसे कहें यह हमने निश्चित न करते हुए उस पर आधारित कल्पना लिखी है, अगले कुछ लेखन में हम वर्ष इस कालावधी की व्याख्या देखेंगे।)

कालगणन संकल्पना के उदय के साथ दूसरा बड़ा काल अवधी मानव ने देखा वह है चंद्र भ्रमण। इस चंद्र भ्रमण के अवधि में चंद्र की दो सुनिश्चित अवस्था देखी जाती है। संपूर्ण गोलाकार या संपूर्ण वृत्ता-कार चंद्र रात भर आकाश में दिखता है वह दिन पूर्णिमा या पूनम और रात भर आकाश में चंद्र दिखता ही नहीं वह दिन अमावस कहलाता है। एक पूर्णिमा से दूसरी पूर्णिमा तक (या एक अमावस से दूसरी अमावस तक) के इस कालचक्र अवधी को चांद्रमास कहा जाता है। दुनिया की अधिकतर कालगणन प्रणालियाँ इसी कालचक्र पर (चांद्रमास पर) निर्भर होती हैं।

इसके बाद मनुष्य ने काल-निरीक्षण से तीसरा बड़ा काल अवधी देखा वह था ऋतु-चक्र का। इसमें प्रमुख है ग्रीष्म ऋतु (गर्मियों का मौसम) और शीत ऋतु (सर्दियों का मौसम)। यह ऋतु निश्चित अवधी के पश्चात एक के बाद एक आते हुए देखे गये। इन ऋतुओं के समय सूर्य को आकाश में बदलते हुये स्थान पर देखा गया। भारत में ग्रीष्म ऋतु में सूर्य

उत्तर की ओर देखा जाता है, और शीतल ऋतु में सूर्य को दक्षिण की ओर झुका हुआ देखा जाता है। साथ ही में इन अवधी में एक सौर दिवस के रात और दिन का समय भी बदलता हुआ देखा गया। ग्रीष्म ऋतु में एक सौर-दिवस की रातें छोटी तथा दिन बड़े होते हैं, और शीतल ऋतु में रातें बड़ी तथा दिन छोटे होते हैं। रात और दिन के अवधी में होता यह बदलाव निरीक्षण-सूक्ष्मता से देखा गया है। शीतल ऋतु का एक विशेष दिन संपूर्ण वर्ष का सबसे छोटा दिन तथा ग्रीष्म ऋतु का एक विशेष दिन सबसे बड़ा दिन देखा गया है। इन दो विशेष दिनों के बीच एक वर्ष में दो बार एक सौर दिवस के रात और दिन बिलकुल समान अवधी के देखे गये हैं। इन दो बड़े दिनों के बीच का कालावधी (या दो छोटे दिनों के बीच का कालावधी) लगभग ३६५ सौर दिनों का देखा गया। इस (लगभग ३६५ दिनों के अवधी को) कालावधी को **सौर-वर्ष** माना गया।

इन तीन सर्व-सदृश कालावधी के माध्यम से अलग-अलग कालगणन प्रणाली निर्माण की गयी। हम सर्वप्रथम इन्हें ठीक से समझेंगे।

## चांद्र कालगणन प्रणाली

चंद्रमा के निश्चित भ्रमण काल के निरीक्षण से ही दुनिया की प्राचीनतम कालगणन संकल्पना को सर्व प्रथम ऊर्जा मिली। इस चंद्र भ्रमण के अवधि में चंद्र की दो सुनिश्चित अवस्था देखी जाती है। संपूर्ण गोलाकार या संपूर्ण वृत्ताकार चंद्र रात भर आकाश में दिखता है वह दिन पूर्णिमा या पूनम और रात भर आकाश में चंद्र दिखता ही नहीं वह दिन अमावस कहलाता है। एक पूर्णिमा से दूसरी पूर्णिमा तक (या एक अमावस से दूसरी अमावस तक) के इस कालचक्र अवधि को **चांद्रमास** कहा जाता है। शुरुवाती दौर में यह देखा गया था की एक वर्ष की अवधि में (औसत) १२ पूर्णिमा और १२ अमावस होती है, इस कारण ऐसे बारह चांद्र-मास की अवधि को **चांद्र-वर्ष** माना गया। एक चांद्रमास में करीब ३० दिन गिने गये। फिर अल्पावधि में इन १२ चांद्र महीनों का अवधि एक सौर-वर्ष से कम होता है यह समझा गया। सूक्ष्म निरीक्षण के बाद चांद्र-मास का अवधि औसत  $29\frac{1}{2}$  दिनों का समझा गया। (आधुनिक संशोधन से चांद्र मास २९.५३०५८७९८१ दिनों का या लगभग २९.५३०५) इस कारण सामान्य कालगणन में यह अवधि २९.५ सौर-दिवस माना जाता है। चांद्र-मास के दो भाग समझे गये हैं। अमावस से पूर्णिमा तक एक भाग तथा पूर्णिमा से अमावस तक दूसरा भाग। चांद्र-मास के इन भागों का क्रम चांद्र-मास के शुरु होने की मान्यता पर निर्भर है। (चांद्र-मास अमावस से शुरू होता है या पूर्णिमा से शुरू होता है इस मान्यता पर निर्भर है।) २९.५ सौर-दिनों के चांद्र-मास के परिणाम स्वरूप एक वर्ष में ३५४ सौर-दिवस होते हैं। लेकिन इस अवधि के साथ ऋतु-चक्र का मेल नहीं होता है। (अर्थात् यह चांद्र-वर्ष का सौर-वर्ष से मेल नहीं होता।) आज इस्लामी कालगणन इसी प्रकार से होता है। अतः ईद का त्योहार कभी भी किसी एक सौर ईसाई दिनांक से मेल नहीं रखता न ही यह त्योहार वर्ष के किसी एक ही ऋतु के समय से मेल खाता है।

## सौर कालगणन प्रणाली

ऋतु चक्र के आधार पर कालगणन करने वाली प्रणाली को सौर कालगणन कहा जाता है। इस में सूर्य का आकाश में बदलता हुआ स्थान तथा दिन और रात का अवधी इन बातों का सूक्ष्म निरीक्षण करते हुए सबसे छोटा दिन (अथवा भारतीय आकाश में सूर्य सबसे दक्षिण दिशा में होता हुआ दिन) निश्चित किया जाता है। ऐसे दो दिनों के बीच का अवधी एक सौर वर्ष समझा जाता है। हम सभी को ज्ञात इसवी कालगणन इस प्रकार का होता है। क्यों की यह सभी को अवगत है, हम इसी को पहले समझ लेते है।

शुरुवाती निरीक्षण में यह अवधी ३६५ दिनों का समझा गया। लेकिन सूक्ष्म निरीक्षण के पश्चात यह अवधी  $365\frac{1}{4}$  सौर-दिनों का देखा गया। (जूलियन कालगणन) इसके पश्चात भी यह अवधी ३६५.२४२५ सौर-दिनों का है इस बात को ग्रेगरी पॉल नामक संशोधक ने सिद्ध किया। इसके बाद सुधारित इसवी कालगणन में सौर-वर्ष ३६५.२४२५ दिनों का समझकर ई.सन. अक्तुबर १५८२ में ग्रेगोरीयन कालगणन की सुधारित रचना की गयी। इस रचना के दौरान इस अक्तुबर महीने के दस दिन बिना गिनती किये अगला (ग्यारहवाँ) दिनांक समझा गया था। (गुरुवार, ४ अक्तुबर १५८२ के बाद शुक्रवार, १५ अक्तुबर १५८२ माना गया था।)

सौर वर्ष के स्थूल बारह भाग करने पर इस अवधी को मास (महीना) कहते है। (एक से बारह महीने क्रमशः जनवरी, फरवरी, मार्च, अप्रैल, मई, जून, जुलाई, अगस्त, सितंबर, अक्तुबर, नवंबर, दिसंबर) इन महीनों में कभी ३० और कभी ३१ दिन होते है। जूलियन इसवी कालगणन के अनुसार दूसरा महीना (फरवरी) २८ दिनों का होता है और यह हर चार वर्षों में एक बार २९ दिनों का होता है। इस वर्ष को लीप वर्ष कहते है। ग्रेगोरीयन कालगणन के अनुसार जूलियन कालगणन के समान लीप वर्ष होता है लेकिन शतक वर्ष हमेशा लीप वर्ष नहीं होता। केवल हर चार शतक में एक शतक वर्ष लीप वर्ष होता है। इसवी सौर कालगणन के सिवा और भी कुछ सौर कालगणन दुनिया में माने जाते है।



भारतीय राष्ट्रीय कालगणन भी सौर कालगणन है। भारतीय राष्ट्रीय दिनदर्शिका या **भारत का राष्ट्रीय कालगणन** भारत में उपयोग में आने वाला सरकारी कैलेंडर है। यह शक संवत पर आधारित है और ग्रेगोरियन कैलेंडर के साथ-साथ २२ मार्च १९५७ से अपनाया गया है। भारत में यह भारत का राज पत्र, आकाशवाणी द्वारा प्रसारित समाचार और भारत सरकार द्वारा जारी संचार विज्ञप्तियों में ग्रेगोरियन कैलेंडर के साथ प्रयोग किया जाता है।

अधिवर्ष में, चैत्र में ३१ दिन होते हैं और इसकी शुरुआत २१ मार्च को होती है। वर्ष की पहली छमाही के सभी महीने ३१ दिन के होते हैं, क्योंकि इस समय वृत्तीय परिक्रमा में सूरज की गति धीमी होती है। महीनों के नाम पुराने, हिंदू चान्द्र-सौर कालगणन से लिए गये हैं। इस लिए वर्तनी भिन्न रूपों में मौजूद है और कौन सी तिथि किस कालगणन से संबंधित है इसके बारे में भ्रम बना रहता है।

### भारतीय राष्ट्रीय सौर-कालगणन

मास संख्या	मास का नाम	दिनों का अवधि	ग्रेगोरियन अनुसार शुरुआत की दिनांक
१	चैत्र	३०/३१	मार्च २२/२१
२	वैशाख	३१	अप्रैल २१
३	ज्येष्ठ	३१	मई २२
४	आषाढ़	३१	जून २२
५	श्रावण	३१	जुलाई २३
६	भाद्रपद	३१	अगस्त २३
७	आश्विन	३०	सितम्बर २३
८	कार्तिक	३०	अक्टूबर २३
९	अग्रहायण	३०	नवम्बर २२
१०	पौष	३०	दिसम्बर २२
११	माघ	३०	जनवरी २१
१२	फाल्गुन	३०	फरवरी २०

## चांद्र-सौर कालगणन प्रणाली

एक पूर्णिमा से दूसरी पूर्णिमा तक (अथवा एक अमावस से दूसरी अमावस तक) यह कालचक्र चांद्रमास कहलाता है यह बात हम पहले ही देख चुके हैं। इस प्रकार के बारह चांद्रमास जोड़कर बनता हुआ चांद्र-वर्ष और सौर कालगणन प्रणाली के ऋतु-चक्र आधारित (३६५.२४२५ दिनों का) सौर-वर्ष इन दोनों में लगभग ११ सौर-दिनों का अंतर होता है। इस अंतर की क्षतिपूर्ति करते हुए चांद्र कालगणन का सौर कालगणन के साथ (वस्तुतः नैसर्गिक ऋतु-चक्र के साथ) मेल होने के लिये एक विशेष संकल्पना बनाई गयी है। इस प्रणाली में चांद्रमास यही मुख्य घटक होने के कारण ११ दिनों की अंतर की क्षतिपूर्ति केवल चांद्रमास के समायोजन से की जानी चाहिये यह बात अनिवार्य है। ११ दिनों का अंतर और २९.५३०५ दिनों का चांद्रमास इनका एक दूसरे से मेल करना यह एक क्लिष्ट गणित है। इसी कारण चांद्र-सौर कालगणन संकल्पना क्लिष्ट है।

इसवी सन पूर्व छठे शतक से ही बॅबिलॉन के खगोल-शास्त्री तथा विद्वत-राजाओं ने यह देखा (समझा) था की २३५ चंद्र-महीनों के कूल दिवस और १९ सौर-वर्ष के कूल दिवस लगभग समान होते हैं। ग्रीस देश में अथेन्स नामक शहर के एक खगोल-गणित विद्वान **मेटॉन** ने इसवी सन पूर्व ४३२ में एक संशोधन निरीक्षण किया की उन्नीस सौर-वर्षों के कूल दिन तथा दो सौ पैंतीस चांद्र-मास के कूल दिन बिलकुल एक समान होते हैं।

$$१९ \text{ सौर-वर्ष में } ३६५.२४२५ \times १९ = ६९३९.६०७५ \text{ दिवस}$$

$$२३५ \text{ चांद्र-मास में } २३५ \times २९.५३०५ = ६९३९.६६७५ \text{ दिवस}$$

(इसमें फर्क लगभग १ घंटा २६ मिनट और २४ सेकंड होता है।) परिणामतः हर १९ वर्षों के बाद आने वाली चांद्र-सौर अवस्था १९ वर्ष पूर्व की चांद्र-सौर अवस्था से अत्यल्प फर्क से मेल खाती है, जिससे पिछले २३५ महीनों के गणन की शुरुवात इस दिन से पुनः नये सिरे से की जा सकती है। मेटॉन के इस संशोधन के कारण १९ सौर-वर्ष अथवा २३५ चांद्र-मास इस अवधी को **मेटॉनिक चक्र** कहा है। यह २३५ चांद्रमास १९ चांद्र-सौर वर्षों में विभाजीत करने के लिये  $१९ \times १२ = २२८$  चांद्रमास अधिक ७ अतिरिक्त चांद्रमास इस तरह किया जाता है। यह ७ अतिरिक्त चांद्रमास १९ चांद्र-सौर वर्ष के सात अलग-अलग वर्षों में प्रत्येकी एक अधिक मास जोड़कर समायोजित किये जाते हैं। इस अतिरिक्त चांद्रमास को उस वर्ष का अधिक-मास (Intercalary Month) कहा जाता है। यह अधिक मास १९ वर्षों में किस-किस वर्ष में तथा व किन दो सामान्य चांद्रमास के बीच रखा जाये

यह उस कालगणन संरचना की प्रणाली में कहा जाता है। प्राचीन हिब्रू कालगणन पद्धति में १९ वर्ष के इस चक्र में ३, ६, ८, ११, १४, १७, १९ इस क्रम से आने वाले वर्ष में अधिक मास जोड़ा जाता था। अधिक मास का उसके निजी वर्ष में स्थान भी कुछ गणन संकल्पना पर आधारित होता है। अलग-अलग कालगणन पद्धति में इस अधिक मास की संकल्पना अलग रीति से निभायी जाती है।

**म्यांमार** एक बौद्ध राष्ट्र है। यहां पर भी जागतिक सामयिक कालगणन के साथ-साथ बौद्ध कालगणन, जो चांद्र-सौर कालगणन है, माना जाता है। इस में १२ चंद्रमास होते हैं जिसके कूल दिन ३५४ या ३५५ होते हैं। सौर वर्ष के साथ यह कालगणन समायोजित करने के लिये कुछ समय पश्चात एक अधिक चंद्रमास का आयोजन किया जाता है। इस में मेटॉनिक चक्र का ही एक अलग रूप माना जाता है जो तिगुना अर्थात् ५७ वर्षों का होता है और इन में  $७ \times ३ = २१$  अधिक चंद्रमास होते हैं। इसके अलावा इस में ११ अतिरिक्त दिन जोड़े जाते हैं। लेकिन इन सबकी गणन प्रणाली कुछ क्लिष्ट होती है।

## भारतीय पारंपारिक कालगणन पद्धति

भारत में इसवी सन ७८ समय कुषाण सम्राट कनिष्क ने शक संवत्सर यह कालगणन पद्धति शुरू की, ऐसे अनेक इतिहासकार मानते हैं। (Rabatak Inscription) शुरुवात में यह कालगणना सौर-कालगणन प्रणाली रही होगी।

विक्रम संवत्सर कालगणन इसवी सन पूर्व ५७ में शुरू हुई ऐसे कहा जाता है, लेकिन इसवी सन के पाँचवें शतक तक इस कालगणन का कोई भी ऐतिहासिक या पुरातात्विक समर्थन आज तक मिला नहीं है।

**भारतीय वैदिक (हिन्दू) कालगणन** इस नाम से पहचानी जाने वाली पद्धति भारत में कब शुरू हुई इसका निर्विवाद पुरातात्विक समर्थन प्राप्त नहीं है, लेकिन इसका आरंभ वर्ष शक संवत्सर तथा विक्रम संवत्सर को ही मानकर किया जाता है। यह कालगणन पद्धति चांद्र-सौर कालगणन पद्धति है, लेकिन इस पद्धति में न केवल चंद्र, सूर्य तथा पृथ्वी इन्हीं का भ्रमण सम्मिलित है, बल्कि सूर्य सापेक्ष नक्षत्रों की स्थिति को भी इस में प्रमुखता से शामिल किया है।

चंद्र को सूर्य के सिवा अन्य तारों के सापेक्ष पृथ्वी की एक प्रदक्षिणा करने के लिये २७.३२१६६१ दिन लगते हैं। इस कारण चंद्र रोज रात को आकाश में जिस मार्ग से गुजरता हुआ दिखता है उस मार्ग पर चंद्र के करीब दिखने वाला रोज का एक तारका समूह निश्चित करते हुये उसे एक नाम दिया गया। इस निरीक्षण से यह बात भी सामने आई की ऐसे २७ दिन एक-एक तारका समूह से गुजरने के बाद २८ वे दिन चंद्र फिर से पहले तारका समूह के पास से गुजरता है। इन २७ तारका समूह को नक्षत्र कहा गया और इस प्रदक्षिणा अवधी को नक्षत्र-मास कहा गया है।

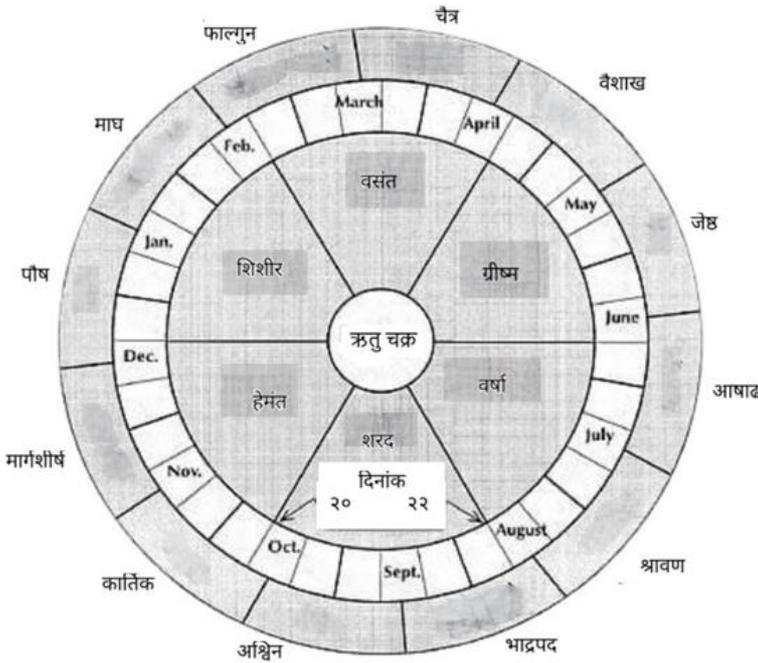
चंद्र के इसी प्रदक्षिणा मार्ग पर और १२ तारका समूह निश्चित किये गये। पृथ्वी जब सूर्य की प्रदक्षिणा करती है तो, यह १२ तारका समूह से बारी-बारी से एक-एक तारका समूह आकाश में एक मास तक दिन के निश्चित समय निश्चित जगह पर देखा जाता है। फिर अगले मास में उसी समय उसी जगह अगला तारका समूह देखा जाता है। (इसी तारका समूह को राशी कहा गया है।)

भारतीय इतिहास में चांद्रमास तथा सौर वर्ष का आपसी मेल करने के लिये (१३ वे मास का समायोजन करने के लिये) कोई आसान पद्धति का निर्माण नहीं किया गया, बल्कि इसे चंद्र और आकाश में स्थित तारका समूहों (नक्षत्र) से जोड़कर एक जटिल पद्धति का

निर्माण किया गया। नक्षत्र-मास, चांद्रमास तथा सौर-वर्ष यह तीन संकल्पना एक साथ जोड़कर कालगणन करना जटिल है। भारतीय पारंपारीक कालगणन में सौर वर्ष भी नक्षत्रों की स्थिति पर निर्भर (Sidereal Year) होता है। वस्तुतः कालगणन के लिये ऐसी जटिल संकल्पनाओं की कोई अनिवार्यता नहीं है।

जब कोई (राशी) तारका समूह उस निश्चित जगह के पास एक मास के बाद भी आकाश में वहीं पर देखा जाता है, तो वह चांद्र-मास दोहराया जाता है और यही १३ वा **अधिक मास** होता है। इन १२ तारका समूहों को राशी कहा गया और इन्हें १२ नाम दिये गये। इस से अब हम समझ सकते हैं की राशी-नक्षत्रों की स्थिति को शामिल किये बिना यह कालगणन संभव ही नहीं है। हर एक चांद्रमास की शुरुवात राशि तथा नक्षत्र की स्थिति के अनुसार ही जताई जाती है। इसके सिवा यह पद्धति केवल कालगणन पद्धति न होकर इसका संबंध आकाश के नक्षत्रों के सिवा ग्रह तथा राशी इन से भी जोड़कर इस पर निर्भर अच्छा-बुरा वक्त और ज्योतिष बतलाया जाता है। इसी कारण खगोल शास्त्र के पर्याप्त ज्ञान के सिवा यह पद्धति समझना कठिन है।

### भारतीय चांद्र-सौर कालगणन में राशी-नक्षत्रों का अंतरभाव



चांद्र महीनों के नाम	: पूर्णिमा के दिन चंद्रमा जिस नक्षत्र : के अधिक पास में रहता है।
१. चैत्र	: चित्रा, स्वाति।
२. वैशाख	: विशाखा, अनुराधा।
३. ज्येष्ठ	: ज्येष्ठा, मूल।
४. आषाढ़	: पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़।
५. श्रावण	: सतभिषा, श्रवण, धनिष्ठा।
६. भाद्रपद	: पूर्वभाद्र, उत्तरभाद्र।
७. आश्विन	: रेवती, अश्विनी, भरणी।
८. कार्तिक	: कृतिका, रोहणी।
९. मार्गशीर्ष	: मृगशिरा, आर्द्रा।
१०. पौष	: पुनर्वसु, पुष्य (तिष्य)।
११. माघ	: मघा, अश्लेशा।
१२. फाल्गुन	: पूर्वाफाल्गुन, उत्तराफाल्गुन, हस्त।

सामान्य भारतीय व्यक्ति को यह सब कुछ समझना कुछ कठिन होने के कारण भारत में इसके परिणाम स्वरूप पंचांग-कर्ता नामक समुदाय का उदय हुआ है। यह लोग हर वर्ष ऐसे पंचांग-युक्त दिनदर्शिका तैयार करते हैं और सामान्य जन इसे किसी भी संदेह विना अनुसरण करते हैं।

## पालि बौद्ध साहित्य और नक्षत्र

वस्तुतः कालगणन के लिये राशी-नक्षत्र जैसी बातों की कोई भी आवश्यकता नहीं होती। बजाय इसके यह ग्रह, नक्षत्र, मुहूर्त, ज्योतिष की संकल्पना अंध-विश्वास को बढ़ावा देती है। इस पार्श्व भूमि पर अंध-विश्वास को जन्म देने वाले राशि-नक्षत्रों-ग्रहों के बिना, चंद्र तथा सूर्य जैसे आसानी से दिखने वाले वास्तविकता पर आधारित एक कालगणन निर्माण करना मुझे आवश्यक लगता है। राशी-नक्षत्रों के आधार पर अंधश्रद्धा फैलाने को तथागत बुद्ध हीन विद्या कहते हैं। तिपीटक के सुत्तपिटक में दीघनिकाय के अंतर्गत ब्रह्मजाल सुत्त में यह बात हम पढ़ते हैं।

### ब्रह्मजालसुत्तं, महासीलं

(दीघनिकायो, सीलक्खन्धवग्गपाळि)

यथा वा पनेके भोन्तो समणब्राह्मणा सद्धादेय्यानि भोजनानि भुञ्जित्वा ते एवरूपाय तिरच्छानविज्जाय मिच्छाजीवेन जीवितं कप्पेन्ति, सेय्यथिदं - चन्दग्गाहो भविस्सति, सूरियग्गाहो भविस्सति, नक्खत्तग्गाहो भविस्सति, चन्दिमसूरियानं पथगमनं भविस्सति, चन्दिमसूरियानं उप्पथगमनं भविस्सति, नक्खत्तानं पथगमनं भविस्सति, नक्खत्तानं उप्पथगमनं भविस्सति, उक्कापातो भविस्सति, दिसाडाहो भविस्सति, भूमिचालो भविस्सति, देवदुन्दुभि भविस्सति, चन्दिमसूरियनक्खत्तानं उग्गमनं ओगमनं संकिलेसं वोदानं भविस्सति, एवंविपाको चन्दग्गाहो भविस्सति, एवंविपाको सूरियग्गाहो भविस्सति, एवंविपाको नक्खत्तग्गाहो भविस्सति, एवंविपाकं चन्दिमसूरियानं पथगमनं भविस्सति, एवंविपाकं चन्दिमसूरियानं उप्पथगमनं भविस्सति, एवंविपाकं नक्खत्तानं पथगमनं भविस्सति, एवंविपाकं नक्खत्तानं उप्पथगमनं भविस्सति, एवंविपाको उक्कापातो भविस्सति, एवंविपाको दिसाडाहो भविस्सति, एवंविपाको भूमिचालो भविस्सति, एवंविपाको देवदुन्दुभि भविस्सति, एवंविपाकं चन्दिमसूरियनक्खत्तानं उग्गमनं ओगमनं संकिलेसं वोदानं भविस्सति इति वा इति एवरूपाय तिरच्छानविज्जाय मिच्छाजीवा पटिविरतो समणो गोतमो'ति।

## ब्रह्मजालसुत्तं, महासीलं हिन्दी अनुवाद

भिक्खुओ! जिस प्रकार कितने श्रमण और ब्राह्मण श्रद्धा पूर्वक दिये गए भोजन को खाकर, निन्दित जीवन बिताते हैं, जैसे-चंद्र-ग्रहण होगा, सूर्य-ग्रहण होगा, नक्षत्र ग्रहण होगा, चंद्रमा और सूर्य अपने-अपने मार्ग पर ही रहेंगे, चंद्रमा और सूर्य अपने मार्ग से दूसरे मार्ग पर चले जाएंगे, नक्षत्र अपने मार्ग पर रहेगा, नक्षत्र मार्ग से हट जाएगा, उल्का पात होगा, दिशा दाह होगा, भूकंप होगा, बादल गरजेगा, चंद्रमा, सूर्य और नक्षत्रों के उदय, अस्त सदोष होंगे और (इसे) शुद्ध होना होगा, चंद्र-ग्रहण का यह फल होगा, चंद्रमा, सूर्य और के उदय, अस्त, सदोष या निर्दोष होने से यह फल होगा; ऐसे प्रकार, श्रमण गौतम, इस प्रकार की हीन विद्या से निन्दित जीवन नहीं बिताते।

ब्रह्मजाल सुत्त के अलावा तिपीटक के सुत्तपिटक में खुद्दकनिकाय के अंतर्गत जातक कथाएँ लिखी हैं। इन जातक कथाओं के अंतर्गत अथकाम वग्ग में नक्खत्त जातक नामक एक कथा है। यहाँ पर भी तथागत बुद्ध नक्षत्र से जुटी अंधश्रद्धा का कड़ा विरोध करते हैं।

नक्खत्तं पटिमानेत्तं, अत्थो बालं उपच्चगा।

अत्थो अत्थस्स नक्खत्तं, किं करिस्सन्ति तारका'ति॥

नक्षत्रों का आदर करते हुये मूर्ख, इच्छा-अपेक्षा से आगे निकल जाता है।

(जहाँ) इच्छा-अपेक्षा ही योग्य नक्षत्र है, (वहाँ) तारिकाओं का क्या कार्य कारण ?

तथागत बुद्ध के तत्वज्ञान की विचारधारा से नक्षत्र यह कल्पना केवल अंधश्रद्धा फैलाती है। जो मानव जीवन के लिये कतई उपयुक्त नहीं है बल्कि हानी कारक है। अतः भारत के बौद्ध जनसमुदाय को चाहिये की वे अपने किसी भी कार्य कारण में नक्षत्रों की कल्पना को महत्व न दें। अगर किसी कारणवश इससे संबंध बन रहा हो तो इसे दूर करने का प्रयास करें। राशी और नक्षत्र अवकाश में दिखने वाले तारका-समूह है। इन में से हर एक तारका समूह में दिखने वाले तारे एक दूसरे से लक्षावधी मील दूर होते हैं।\* इनका हमारी पृथ्वी से भी कई लक्ष मील का अंतर होता है। ऐसे में इन का किसी मानव या किसी अन्य जीव से कोई अनुबंध हो यह कल्पना से भी परे है। अवकाश विज्ञान के तहत इनका अध्ययन करना एक अलग बात है, लेकिन हमारे कालगणन में राशी-नक्षत्रों का संबंध होना एक विचित्र बात है।

\*- तारों भरा आकाश - लेखक - गुणाकार मुळे.

## बोधि कालगणन प्रणाली - मेरी संकल्पना

ब्रम्हदेश या म्यांमार में पहले भारत में प्रचलित, सूर्य-सिद्धांत आधारित चांद्र-सौर कालगणन प्रचार में था। लेकिन इस में सुधार करते हुए (शायद इ.स. ६३८ से) १९ वर्ष के मेटॉनिक चक्र पर आधारित चांद्र-सौर कालगणन प्रचलित किया गया तथा इसका प्रथम वर्ष इ.स.पूर्व ५४४, जो श्रीलंका में माना जाता था, तय किया गया। ब्रम्हदेश के एक प्रांत पागन के राजा पोपा सौराहन ने यह निश्चित किया। इसी वर्ष को अब भारतीय बौद्ध (नव बौद्ध) बुद्धाब्द मानते हैं। भारतीय बौद्ध श्रीलंका और म्यांमार में प्रचलित बुद्धाब्द तो मानते हैं लेकिन कालगणन प्रणाली वही वैदिक (हिन्दू) सूर्य-सिद्धांत आधारित को खोजते हैं। चांद्र-सौर कालगणन की मूलभूत संकल्पना हम इसके पहले ही समझ चुके हैं। इस संकल्पना के अंतर्गत २९.५ सौर दिनों का (२९.५३०५ सौर दिनों का) चांद्रमास, ३६५.२४२५ सौर दिनों का सौर वर्ष, सौर-वर्ष व चांद्रमास-वर्ष इनकी संबद्धता के लिये १९ वर्षों के (मेटॉनिक) चक्र का समायोजन अर्थात् इस १९ सौर-वर्ष में आने वाले ७ अधिक चांद्रमास का समायोजन इन बातों का यथा योग्य बुद्धि से विमर्श हमें करना है। इसी कारण मैं इस कालगणन प्रणाली को **बोधि कालगणन** यह नाम दे रहा हूँ।

१. इस प्रणाली में हम २९.५ सौर दिनों के चांद्रमास का प्रत्येक वर्ष में संयोजन सफल होने के लिये **बारी-बारी** से चांद्रमास ३० और २९ दिन का होगा। इस चांद्रमास के दो विभाग प्रत्येकी १५ सौर दिनों के होंगे। इन विभाग को पक्ष कहा जाता है। प्रत्येक पक्ष में १५ तिथि होगी। एक तिथि चांद्रमास का एक सौर-दिवस होगा। इन तिथियों को प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी और पूर्णिमा/अमावस कहा जायेगा। प्रत्येक तिथि एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक समझी जायेगी।
२. अमावस से पूर्णिमा तक **तेज पक्ष** (शुद्ध पक्ष) और पूर्णिमा से अमावस तक **तम पक्ष** (वद्य पक्ष) होगा। २९ दिनों का चांद्रमास होने पर एक तिथि का क्षय होगा, अर्थात् वह तिथि न गिनते हुये अगली तिथि समझी जाएगी। यह तिथि भी सभी २९ दिनों के चांद्रमास में एक ही एक निश्चित होगी जो (वद्य) **तम अष्टमी** होगी।
३. वर्ष का पहला महीना वैशाख होगा और वर्ष में १२ महीने वैशाख से चैत्र होंगे। महीनों के नाम निम्नानुसार होंगे।

वैशाख, जेष्ठ, आषाढ, श्रावण, भाद्रपद, अश्विन,

कार्तिक, मार्गशीर्ष (अग्रहण), पौष, माघ, फाल्गुन, चैत्र।

चंद्र मासों के नाम **पालि भाषा** में निम्न प्रकार से लिखे जा सकते हैं।

वेसाख, जेठ, आसाल्ह, सावण, पोढुपाद, अस्सयुज,

कत्तिक, मागसिर, फुस्स, माघ, फागुण, चित्त।

महीनों के दिन बारी-बारी से ३० और २९ होंगे। जैसे वैशाख - ३०, जेष्ठ - २९, आषाढ - ३० ..... चैत्र - २९।

४. हम इस कालगणन प्रणाली में हर एक वर्ष को **बोधि संवच्छर** कहेंगे, क्यों की, सम्राट अशोक के समय एक वर्ष को संवच्छर (संवच्छल) कहा जाता था, जो सम्राट अशोक के लघु शिला लेखों में पढ़ा गया है। आधुनिक भाषा में संवच्छर को ही संवत्सर कहते हैं।
५. बोधि संवच्छर का गणन करने के लिये चांद्रमास अमांत अर्थात (अमावस को अंत होने वाला) अमावस के दूसरे दिन शुरु होकर अगली अमावस को समाप्त होगा।
६. १९ सौर-वर्ष के चक्र को (मेटॉनिक चक्र) **सिद्धार्थ चक्र** कहेंगे। अधिक मास को **मैत्रेय मास** कहेंगे। सिद्धार्थ चक्र में आने वाले ७ (अधिक) मैत्रेय चंद्र-मासों का समायोजन करने के लिये २३५ चांद्रमास सात (लगभग) समान हिस्सों में बाटे जायेंगे और यह सात भाग अधिक मास स्तंभ अथवा **मैत्रेय स्तंभ** कहे जायेंगे। इन सात स्तंभों में (२३५ ÷ ७ = ३३.५७१४२८...) अर्थात ३३.५ चांद्रमास होने हैं। इस कारण इन का सात स्तंभों में बारी-बारी से ३३ सामान्य चांद्रमास व १ मैत्रेय चांद्रमास तथा ३२ सामान्य चांद्रमास और १ मैत्रेय चांद्रमास इस तरह समायोजन होगा। मैत्रेय चंद्रमास ३० दिनों का होगा। इससे इन सात स्तंभों में क्रमशः ३४, ३३, ३४, ३३, ३४, ३३, ३४ ऐसे हो रहे हैं इससे कुल २३५ मास होते हैं।
७. १९ सौर-वर्ष में  $३६५.२४२५ \times १९ = ६९३९.६०७५$  सौर-दिवस होंगे। १९ सौर-वर्ष में  $१९ \times १२ = २२८ + ७$  मैत्रेय (अधिक) मास ऐसे २३५ चांद्रमास होते हैं। इस तरह  $२२८ \times २९.५ = ६७२६$  और सभी ७ अधिक मास से  $७ \times ३० = २१०$  दिवस, कुल  $६७२६ + २१० = ६९३६$  सौर-दिवस होंगे। इससे  $३.६०७५$  सौर दिनों की कमी होगी। इस कमी को पूरा करने के लिये हर पाँच वर्ष में एक बार (अर्थात हर चार वर्ष बाद पाँचवें वर्ष में) चैत्र महीने में २९ की जगह ३० दिन होंगे, लेकिन १०० वर्ष में (शतक वर्ष में) यह २९ दिन ही रहेंगे। इसी प्रकार २००, ४००, ६०० तथा ८०० वे वर्ष में (द्वी-

शतक वर्ष में) चैत्र महीने में एक बार २९ की जगह ३० दिन होंगे, लेकिन १००० वे (दस शतक) वर्ष में चैत्र मास में २९ ही दिन होंगे। ... इसे सुलभता से समझते हैं।

जिस वर्ष की संख्या का अंतिम अंक ० या ५ होगा, वह अशोक संवत्सर होगा।

जिस वर्ष की संख्या के अंतिम दो अंक ०० होंगे तो वह अशोक संवत्सर नहीं होगा। लेकिन ... जिस वर्ष की संख्या के अंतिम तीन अंक २००, ४००, ६०० या ८०० होंगे, वह अशोक संवत्सर होगा। अंतिम तीन अंक ००० होने पर वह अशोक संवत्सर नहीं होगा। अशोक संवत्सर के चैत्र महीने में २९ की जगह ३० दिन होंगे।

इसे समझने के लिये ...

१९ सौर वर्ष में - ६९३९.६०७५ दिन होते हैं।

सिद्धार्थ चक्र की तालिका में केवल - ६९३६ दिन हैं।

इसके अनुसार १९०० सौर वर्ष में - ६९३९६०.७५ दिन होंगे,

इस के समान १०० सिद्धार्थ चक्र में - ६९३६००.०० दिन होंगे।

अर्थात् इन १९०० वर्षों में ३६०.७५ (=३६१) दिनों का फर्क है।

१९०० वर्ष को पाँच से भाग करें तो यह पाँच वर्ष के ३८० भाग होंगे। हर एक भाग में एक दिन बढ़ाया जाये तो ३८० दिन बढ़ेंगे। इस में से १९ शतकी संख्या घटा दी जाये तो यह संख्या ३६१ होती है। १९०० वर्ष में हर पाँच वर्ष में एक बार १ दिन बढ़ाया जाये लेकिन शतकी वर्ष में न बढ़ाये तो ३६१ दिन बढ़ जायेंगे।

१०० सिद्धार्थ चक्र के ६९३६०० दिनों में ...

यह ३६१ दिन जोड़ दिये जाये तो यह ..... ६९३९६१ होंगे।

यह संख्या १९०० सौर वर्ष की दिन संख्या ६९३९६०.७५ से समान है।

वस्तुतः चांद्रमास २९.५३०५८७९८१ सौर दिनों का होता है लेकिन यहाँ गणन सुलभता के लिये हम ने चांद्रमास में २९.५ सौर दिवस गिने हैं। इस बात के सूक्ष्म अध्ययन के बाद शतक वर्ष को छोड़कर अन्य ५ वर्ष में एक बार चैत्र महीने में २९ की जगह ३० दिन होने चाहिये और दश-शतक वर्ष को छोड़कर अन्य द्वी-शतक वर्ष में चैत्र महीने में २९ की जगह ३० दिन होंगे, यह बात मैंने सूक्ष्म संगणन से जान ली है। अब इस समायोजन अनुसार १०० चंद्र मासों में कुल दिन २९५३ होंगे यह बात भी सफल होती है। इस तरह से २३५ महीनों के सिद्धार्थ चक्र के चांद्रमास और इन में आने वाली तिथियों का समायोजन करने से हमारा अपेक्षित चांद्र-सौर कालगणन सफल होगा।

हम इस संकल्पना के अंतर्गत वर्ष का पहला महीना वैशाख मानते हैं, कारण सिद्धार्थ गौतम को बोधि प्राप्ति वैशाख मास की पूर्णिमा के दिन हुई थी यह सारे विश्व में माना गया है। (फिर भी अगर हम चाहे तो महीनों का क्रम बदले बिना कोई भी महीना वर्ष का पहला महीना माना जा सकता है और इसके अनुसार २३५ महीनों के चक्र का समायोजन किया जा सकता है।)

संपूर्ण जगत में सर्वप्रथम जो कालगणन संकल्पनाएँ रची गयी उसका मूल आधार (१) प्रतिदिन का सूर्योदय और सूर्यास्त का चक्र, (२) चंद्र के दृश्य आकार में होने वाले परिवर्तन का चक्र अर्थात् पूर्णिमा और अमावस का चक्र और अंतिम तः

(३) वसंत, ग्रीष्म, शरद (पतझड़), शीत (सर्दी) इन चार मौसमों का चक्र यही रहा है। अतः इसे प्राकृतिक कालगणन कहना अधिक व्यावहारिक होगा।

## सिद्धार्थ चक्र तालिका का विवरण

अब हम सिद्धार्थ चक्र तालिका निर्माण करने की विधि देखते हैं।

१. हम ८ स्तंभ और ३६ पंक्तियों की तालिका बनाते हैं।
२. पहले स्तंभ की पहली पंक्ति रिक्त रखनी है। अगले सात स्तंभों की पहली पंक्ति में क्रमशः १ से ७ अंक (मैत्रेय स्तंभ क्रमांक) लिखने हैं।
३. पहले स्तंभ में पहली रिक्त पंक्ति छोड़कर १ से ३४ अंक क्रमशः लिखने हैं। यह मैत्रेय स्तंभ में महीने की गणन संख्या है।
४. तीसरे पाँचवें और सातवें स्तंभ की ३४ वी पंक्ति में XXX यह चिन्ह लिखना है। (इसलिये की यह खाने हमें उपयोग नहीं करने है।)
५. इस तालिका के पहले पाँच स्तंभों पाँचवीं पंक्ति में तथा छठे व सातवें स्तंभ में सातवीं पंक्ति में **मैत्रेय** लिखना है। यह हमारे मैत्रेय मास का स्थान है।
६. दूसरे स्तंभ की दूसरी पंक्ति से लेकर ३४ वी पंक्ति तक वेसाख, जेठ, आसाल्ह, सावण, पोहोपाद, अस्सयुज, कत्तिक, मागसिर, फुस्स, माघ, फागुण, चित्त यह महीनों के नाम (या फिर महीनों के हिन्दी-मराठी नाम) क्रम से लिखते जाना है। जिस पंक्ति में पहले ही से मैत्रेय लिखा है, अतः क्रमशः लिखने के लिये यह पंक्ति छोड़नी है परंतु अगली पंक्ति में क्रम निभाना है। एक स्तंभ की समाप्ति के बाद महीनों का क्रम निभाते हुए अगले स्तंभ में अगले क्रम से महीनों के नाम लिखना है और इस तरह से तालिका पूर्ण करनी है।

यहाँ पर किये गये वर्णन के अनुसार सात मैत्रेय स्तंभ युक्त सिद्धार्थ चक्र को तालिका के स्वरूप में अगले पृष्ठ पर दिया गया है।

अगले पृष्ठ की तालिका में त्वरित जानकारी के लिये एक स्तंभ में हर महीने के दिन-संख्या दी है तथा एक अधिक पंक्ति (३६ वी पंक्ति) में उस मैत्रेय स्तंभ के अंत तक, इस सिद्धार्थ चक्र में, कुल दिनों की संख्या दी गई है। यह संख्या हमें किसी भी ईसाई दिनांक का बोधि संवत्सर तिथि, मास, बोधि संवत्सर वर्ष तथा सप्ताह का वार भी प्राप्त करने में सहायक होगी।

इस बोधि कालगणन अनुसार किसी दिवस का दिनांक लेखन कैसे किया जाये इस बात पर गौर करना होगा। इसका विवरण कुछ इस प्रकार होना चाहिये। (पक्ष), (तिथि), (मास), बोधि संवत्सर (संवत्सर)।

उदाहरण के लिये तेज चतुर्दशी, वैशाख, बोधि संवत्सर २५३९ के बाद दूसरा दिवस बोधि संवत्सर २५३९ की बुद्ध पूर्णिमा होगी।

यही दिनांक संख्या के स्वरूप तेज १४-०१-२५३९ बोधि संवत्सर, ऐसे लिखा जा सकता है। बोधि कालगणन पर आधारित बोधि दिनदर्शिका के अंतिम पृष्ठ पर सिद्धार्थ चक्र तालिका देनी होगी तथा सद्य संवत्सर को विशेष रूप से दर्शाना होगा।

इस लेखन में मैंने सप्ताह और उसके वार के बारे में कहीं कुछ लिखा नहीं है, क्यों की, सप्ताह तथा वार यह एक स्वतंत्र प्रणाली है जो हर एक कालगणन के साथ स्वतंत्र रूप से ही जोड़ी जाती है। जैसे किसी भी कालगणन प्रणाली (इसवी दिनदर्शिका, भारतीय राष्ट्रीय दिनदर्शिका या हिन्दू पंचांग) के दिनांक के साथ में वार स्वतंत्र रूप से जोड़ा जाता है।

बोधि कालगणन तथागत बुद्ध के महापरिनिर्वाण वर्ष से शुरु किया जाना अधिक अर्थपूर्ण होगा, यही भावना हम सभी बौद्ध जनों के मन में होगी यह मेरा मानना है।

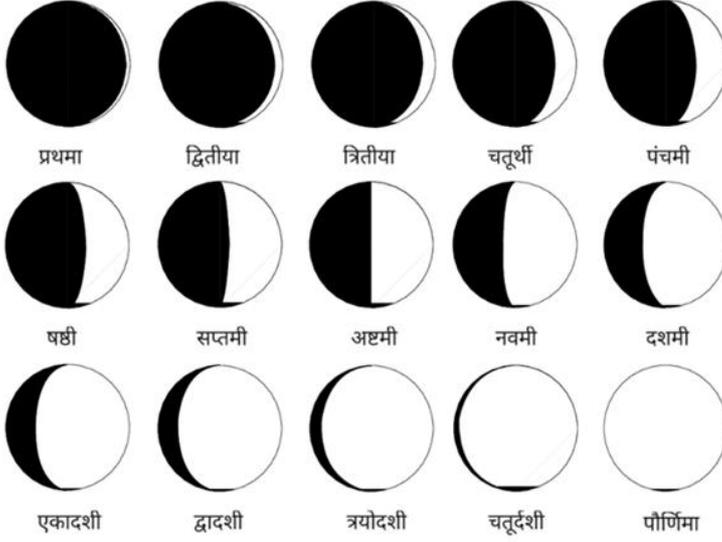
भारत में ईसा पूर्व समय में कोई निरंतर (अविरत) कालगणन मौजूद नहीं था। इस कारण ईसा पूर्व के भारतीय इतिहास के समय का सही ज्ञान प्राप्त नहीं होता है। तभी तथागत बुद्ध का महापरिनिर्वाण वर्ष भी भारतीय इतिहास का एक जटिल प्रश्न है। केवल यहीं नहीं बल्कि सम्राट अशोक के पूर्व के लगभग सारे इतिहास की काल निश्चिती यह एक जटिल उलझन है।

भारत में भले ही अविरत कालगणन नहीं था लेकिन दुनिया के अन्य देशों में अविरत कालगणन मौजूद था। जैसे जगतजेता सिकंदर का जन्म मेसिडॉन देश में ग्रीक मास 'हेकार्तोबायन' के छठवें दिनांक को हुवा था। यह ईसाई कालगणन अनुसार २० जुलाई ईसा पूर्व ३५६ रहा होगा। यह तिथि श्रावण तेज चतुर्थी हुई होगी।

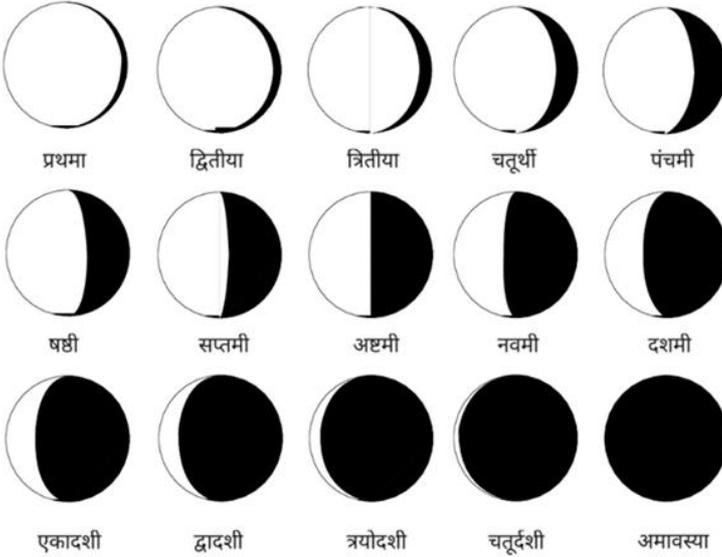
सम्राट अशोक के ग्यारह लघु-शिलालेखों में तथागत बुद्ध के महापरिनिर्वाण का निर्देश है। बृहद्-शिलालेख श्रृंखला के तेरहवें शिलालेख में सम्राट अशोक के साम्राज्य के वायव्य की ओर बसे पाँच राजाओं का नाम का उल्लेख किया गया है। इन राजाओं के देशों में अविरत कालगणन रहा था। इस कालखंड के संदर्भ का सूक्ष्म अध्ययन करते हुये तथागत बुद्ध का महापरिनिर्वाण वर्ष इन शिलालेखों के लिखित समर्थन से मैंने निश्चित किया है। इस के संदर्भ से तथागत बुद्ध का महापरिनिर्वाण इसवी सन पूर्व ५१६ में हुवा था। इसी कारण बोधि कालगणन की शुरुवात इसवी सन पूर्व ५१६ में की जाये ऐसे मुझे लगता है।

# चंद्रमास तिथियाँ और चंद्र का दृश्य रूप

## तेज पक्ष



## तम पक्ष



**संशोधित सिद्धार्थ चक्र तालिका (७ स्तंभ, २३५ चंद्रमास)**

		स्तंभ १	स्तंभ २	स्तंभ ३	स्तंभ ४	स्तंभ ५	स्तंभ ६	स्तंभ ७
१	३०	वैशाख	माघ	अश्विन	आषाढ	फाल्गुन	मार्गशीर्ष	श्रावण
२	२९	जेष्ठ	फाल्गुन	कार्तिक	श्रावण	चैत्र	पौष	भाद्रपद
३	३०	आषाढ	चैत्र	मार्गशीर्ष	भाद्रपद	वैशाख	माघ	अश्विन
४	२९	श्रावण	वैशाख	पौष	अश्विन	जेष्ठ	फाल्गुन	कार्तिक
५	३०	मैत्रेय	मैत्रेय	मैत्रेय	मैत्रेय	मैत्रेय	चैत्र	मार्गशीर्ष
६	३०	भाद्रपद	जेष्ठ	माघ	कार्तिक	आषाढ	वैशाख	पौष
७	२९	अश्विन	आषाढ	फाल्गुन	मार्गशीर्ष	श्रावण	मैत्रेय	मैत्रेय
८	३०	कार्तिक	श्रावण	चैत्र	पौष	भाद्रपद	जेष्ठ	माघ
९	२९	मार्गशीर्ष	भाद्रपद	वैशाख	माघ	अश्विन	आषाढ	फाल्गुन
१०	३०	पौष	अश्विन	जेष्ठ	फाल्गुन	कार्तिक	श्रावण	चैत्र
११	२९	माघ	कार्तिक	आषाढ	चैत्र	मार्गशीर्ष	भाद्रपद	वैशाख
१२	३०	फाल्गुन	मार्गशीर्ष	श्रावण	वैशाख	पौष	अश्विन	जेष्ठ
१३	२९	चैत्र	पौष	भाद्रपद	जेष्ठ	माघ	कार्तिक	आषाढ
१४		वैशाख	माघ	अश्विन	आषाढ	फाल्गुन	मार्गशीर्ष	श्रावण
१५		जेष्ठ	फाल्गुन	कार्तिक	श्रावण	चैत्र	पौष	भाद्रपद
१६		आषाढ	चैत्र	मार्गशीर्ष	भाद्रपद	वैशाख	माघ	अश्विन
१७		श्रावण	वैशाख	पौष	अश्विन	जेष्ठ	फाल्गुन	कार्तिक
१८		भाद्रपद	जेष्ठ	माघ	कार्तिक	आषाढ	चैत्र	मार्गशीर्ष
१९		अश्विन	आषाढ	फाल्गुन	मार्गशीर्ष	श्रावण	वैशाख	पौष
२०		कार्तिक	श्रावण	चैत्र	पौष	भाद्रपद	जेष्ठ	माघ
२१		मार्गशीर्ष	भाद्रपद	वैशाख	माघ	अश्विन	आषाढ	फाल्गुन
२२		पौष	अश्विन	जेष्ठ	फाल्गुन	कार्तिक	श्रावण	चैत्र
२३		माघ	कार्तिक	आषाढ	चैत्र	मार्गशीर्ष	भाद्रपद	वैशाख
२४		फाल्गुन	मार्गशीर्ष	श्रावण	वैशाख	पौष	अश्विन	जेष्ठ
२५		चैत्र	पौष	भाद्रपद	जेष्ठ	माघ	कार्तिक	आषाढ
२६		वैशाख	माघ	अश्विन	आषाढ	फाल्गुन	मार्गशीर्ष	श्रावण
२७		जेष्ठ	फाल्गुन	कार्तिक	श्रावण	चैत्र	पौष	भाद्रपद
२८		आषाढ	चैत्र	मार्गशीर्ष	भाद्रपद	वैशाख	माघ	अश्विन
२९		श्रावण	वैशाख	पौष	अश्विन	जेष्ठ	फाल्गुन	कार्तिक
३०		भाद्रपद	जेष्ठ	माघ	कार्तिक	आषाढ	चैत्र	मार्गशीर्ष
३१		अश्विन	आषाढ	फाल्गुन	मार्गशीर्ष	श्रावण	वैशाख	पौष
३२		कार्तिक	श्रावण	चैत्र	पौष	भाद्रपद	जेष्ठ	माघ
३३		मार्गशीर्ष	भाद्रपद	वैशाख	माघ	अश्विन	आषाढ	फाल्गुन
३४		पौष	×	जेष्ठ	×	कार्तिक	×	चैत्र
		१००४	१९७८	२९८१	३९५५	४९५९	५९३३	६९३६

## बोधि संवत्सर के लिये त्वरित संदर्भ सूची

हमारी सिद्धार्थ चक्र तालिका के हर एक वर्ष को एक नयी तालिका में एक के आगे एक स्तंभ में लिखते हैं। यह तालिका सिद्धार्थ चक्र १९ वर्ष स्तंभ तालिका है जो कुछ निम्न तरह होगी।

	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	वैशाख									
२	जेष्ठ	जेष्ठ	जेष्ठ	मैत्रेय	जेष्ठ	जेष्ठ	जेष्ठ	जेष्ठ	जेष्ठ	जेष्ठ
३	आषाढ़	आषाढ़	आषाढ़	जेष्ठ	आषाढ़	आषाढ़	आषाढ़	आषाढ़	आषाढ़	आषाढ़
४	श्रावण	श्रावण	श्रावण	आषाढ़	श्रावण	श्रावण	श्रावण	श्रावण	श्रावण	श्रावण
५	मैत्रेय	भाद्रपद	भाद्रपद	श्रावण	भाद्रपद	भाद्रपद	भाद्रपद	भाद्रपद	भाद्रपद	भाद्रपद
६	भाद्रपद	अश्विन	अश्विन	भाद्रपद	अश्विन	अश्विन	अश्विन	अश्विन	अश्विन	अश्विन
७	अश्विन	कार्तिक	कार्तिक	अश्विन	कार्तिक	कार्तिक	कार्तिक	कार्तिक	मैत्रेय	कार्तिक
८	कार्तिक	मार्गशीर्ष	मार्गशीर्ष	कार्तिक	मार्गशीर्ष	मार्गशीर्ष	मार्गशीर्ष	मार्गशीर्ष	कार्तिक	मार्गशीर्ष
९	मार्गशीर्ष	पौष	पौष	मार्गशीर्ष	पौष	पौष	पौष	पौष	मार्गशीर्ष	पौष
१०	पौष	माघ	माघ	पौष	माघ	मैत्रेय	माघ	माघ	पौष	माघ
११	माघ	फाल्गुन	फाल्गुन	माघ	फाल्गुन	माघ	फाल्गुन	फाल्गुन	माघ	फाल्गुन
१२	फाल्गुन	चैत्र	चैत्र	फाल्गुन	चैत्र	फाल्गुन	चैत्र	चैत्र	फाल्गुन	चैत्र
१३	चैत्र			चैत्र		चैत्र			चैत्र	
	३८४	७३२	१०९२	१४७६	१८३०	२२१४	२५६८	२९२२	३३०६	३६६०

	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
१	वैशाख								
२	जेष्ठ	जेष्ठ	जेष्ठ	जेष्ठ	मैत्रेय	जेष्ठ	जेष्ठ	जेष्ठ	जेष्ठ
३	आषाढ	मैत्रेय	आषाढ	आषाढ	जेष्ठ	आषाढ	आषाढ	आषाढ	आषाढ
४	श्रावण	आषाढ	श्रावण	श्रावण	आषाढ	श्रावण	श्रावण	श्रावण	श्रावण
५	भाद्रपद	श्रावण	भाद्रपद	भाद्रपद	श्रावण	भाद्रपद	भाद्रपद	भाद्रपद	भाद्रपद
६	अश्विन	भाद्रपद	अश्विन	अश्विन	भाद्रपद	अश्विन	अश्विन	अश्विन	अश्विन
७	कार्तिक	अश्विन	कार्तिक	कार्तिक	अश्विन	कार्तिक	कार्तिक	कार्तिक	कार्तिक
८	मार्गशीर्ष	कार्तिक	मार्गशीर्ष	मार्गशीर्ष	कार्तिक	मार्गशीर्ष	मार्गशीर्ष	मार्गशीर्ष	मार्गशीर्ष
९	पौष	मार्गशीर्ष	पौष	पौष	मार्गशीर्ष	पौष	पौष	पौष	पौष
१०	माघ	पौष	माघ	माघ	पौष	माघ	मैत्रेय	माघ	माघ
११	फाल्गुन	माघ	फाल्गुन	फाल्गुन	माघ	फाल्गुन	माघ	फाल्गुन	फाल्गुन
१२	चैत्र	फाल्गुन	चैत्र	चैत्र	फाल्गुन	चैत्र	फाल्गुन	चैत्र	चैत्र
१३		चैत्र			चैत्र		चैत्र		
	४०१४	४३९८	४७५२	५१०६	५४९०	५८४४	६२२८	६५८२	६९३६

१. बोधि संवत्सर का आरंभ रविवार, तेज प्रथमा वैशाख बोधि संवत्सर ०००१ से होती है, यह दिन जागतिक सामयिक कालगणन अनुसार १८ अप्रैल ५१६ ईसा पूर्व है।
२. अमावस्या के अगले दिन चांद्रमास शुरू होगा और अगली अमावस्या को संपूर्ण होगा। (अमांत चंद्र मास)
३. हर चांद्रमास के दो भाग होंगे, अमावस्या से पूर्णिमा तक (प्रकाशमान पक्ष) तेज पक्ष और पूर्णिमा से अगली अमावस तक (अंधेरा पक्ष) तम पक्ष होगा। ऐसे १२ महीनों का एक वर्ष होगा।
४. वैशाख, आषाढ़, भाद्रपद, कार्तिक, पौष, फाल्गुन और मैत्रेय इन महीनों में ३० दिन होंगे।
५. जेष्ठ, श्रावण, अश्विन, अग्रहण (मार्गशीर्ष), माघ, चैत्र इन महीनों में २९ दिन होंगे। इन महीनों में तम अष्टमी नहीं होगी।
६. १९ वर्ष के चक्र को सिद्धार्थ चक्र कहेंगे और इस में २३५ चांद्र-मास होंगे।
७. सिद्धार्थ चक्र के सात भाग होंगे और हर एक भाग को मैत्रेय स्तंभ कहेंगे। एक से सात मैत्रेय स्तंभ में बारी-बारी से ३४ और ३३ चांद्र-मास होंगे तथा हर एक मैत्रेय स्तंभ में एक मैत्रेय मास होगा।
८. किस संवत्सर में किस स्थान पर मैत्रेय मास होगा इसका गणन बीते हुए संवत्सर संख्या से (सिद्धार्थ चक्र १९ वर्ष तालिका अनुसार) निम्न नियमों से होगा।  
 (संवत्सर संख्या - १)<sup>@</sup> ÷ १९ के पूर्णांक अनुपात के पश्चात .....
- क शेष ० हो तो पाँचवाँ मास मैत्रेय मास होगा।
- ख शेष ३ हो तो दूसरा मास मैत्रेय मास होगा।
- ग शेष ५ हो तो दसवाँ मास मैत्रेय मास होगा।
- घ शेष ८ हो तो सातवाँ मास मैत्रेय मास होगा।
- च शेष ११ हो तो तीसरा मास मैत्रेय मास होगा।
- छ शेष १४ हो तो दूसरा मास मैत्रेय मास होगा।
- ज शेष १६ हो तो दसवाँ मास मैत्रेय मास होगा।
- झ अन्य कोई भी शेष हो तो उस संवत्सर में मैत्रेय मास नहीं होगा।

@ यह गणन बीते हुये संपूर्ण संवत्सरों की संख्या है।

९. चलने वाले संवत्सर के अंतिम एक अंक ० या ५ हो तो यह संवत्सर अशोक संवत्सर होगा।

१०. चलने वाले संवत्सर के अंतिम दो अंक ०० हो तो यह संवत्सर अंतिम अंक ० होते हुए भी **अशोक संवत्सर नहीं** होगा।
११. चलने वाले संवत्सर के अंतिम तीन अंक २००, ४००, ६०० या ८०० हो तो यह संवत्सर अंतिम दो अंक ०० होते हुए भी **अशोक संवत्सर** होगा।  
(अर्थात् अंतिम ३ अंक १००, ३००, ५००, ७००, ९०० और ००० हो तो यह संवत्सर अशोक संवत्सर नहीं होगा।)
१२. **अशोक संवत्सर में चैत्र मास में २९ की बजाय ३० दिन** होंगे।
१३. बोधि संवत्सर आरंभ दिवस से किसी भी दिन तक कूल दिनों के गणन संख्या को **बोधि दिनांक** कहेंगे।

अशोक संवत्सर का गणित कुछ इस प्रकार होगा।

प्रति १०० वर्ष १९ अशोक संवत्सर होंगे और प्रति ५०० वर्ष २ अशोक संवत्सर इस में जोड़े जायेंगे। अर्थात्  $(\text{कूल संवत्सर} \div ५) - \text{कूल शतक} + (\text{कूल संवत्सर} \div ५००) \times २$  यह संख्या कूल अशोक संवत्सर के समान होगी। (केवल पूर्णांक)

बोधि दिनांक यह संकल्पना जागतिक सामयिक कालगणन में **जूलियन दिन** अंक जैसी है। जूलियन दिन अंक १ जनवरी ४७१३ ईसा पूर्व से इच्छित ईसाई दिनांक तक कूल दिनों की गिनती है। **बोधि दिनांक १८ अप्रैल ५१६ ईसा पूर्व से इच्छित दिन तक कूल दिनों की गिनती है।**

किसी भी बोधि संवत्सर में किसी भी तिथि की बोधि दिनांक संख्या हमारे लिये बहुत उपयुक्त होती है। किसी भी बोधि संवत्सर तिथि के सप्ताह दिवस (वार) का पता करने के लिये भी इसका उपयोग होता है।

किसी भी सामान्य संवत्सर में ३५४ दिन होते हैं। सामान्य अशोक संवत्सर में ३५५ दिन होते हैं। संवत्सर में मैत्रेय मास हो तो उस संवत्सर में ३८४ दिन होते हैं। अशोक संवत्सर में मैत्रेय मास हो तो उस संवत्सर में ३८५ दिन होते हैं।

॥ तं तेजसा भवतु ते जयमंगलानि ॥

## बोधि संवच्छर आरंभ दिवस का संगणन

पिछले पन्ने पर हमने देखा की तथागत बुद्ध का महापरिनिर्वाण इसवी सन पूर्व ५१६ इस वर्ष में हुवा था यह बात हम अधिक योग्य प्रमाणों के साथ कह सकते है। इस वर्ष की वैशाख पूर्णिमा अगर निश्चित की जाये तो हम यहीं की प्रथमा से बोधि संवच्छर शुरू कर सकते है। इसी लिये हम इसवी सन पूर्व ५१६ की वैशाख पूर्णिमा का गणन करते हुये निश्चित करते है।

NASA के अनुसार ५ मई २०२३ ईसाई को चंद्र ग्रहण हुवा था।

शुक्रवार, ५ मई २०२३ ईसाई को वैशाख पूर्णिमा है।

ईसाई कालगणन नियमों के अनुसार...

गणना करने के लिए कुल वर्ष .... २०२३ + ५१५ = २५३८

कुल दिन २५३८ x ३६५ = ९२६३७० + लीप दिन

लीप दिन २५३८ ÷ ४ = ६३४.५

तीन शतक वर्ष (१७००, १८००, १९००) (-) ३ दिन (शतक वर्ष)

इ.स. १५८२ में किया गया ग्रेगोरीयन संशोधन सुधार (-) १० दिन

९२६३७० + ६३४.५ - ३३ = ९२६९९१.५ (९२६९९२)

बोधि संवच्छर नियम के अनुसार ....

२५३८ वर्ष = २५३८ ÷ १९ = १३३ सिद्धार्थ चक्र + ११ वर्ष

= ६९३६ x १३३ + ११ x ३५४ + १२० (४ मैत्रेय मास) +

अशोक संवच्छर दिन

अशोक संवच्छर दिन = (२५३८ ÷ ५) - २५ + (२५३८ ÷ ५००) x २

= ४९२.६

९२२४८८ + ३८९४ + १२० + ४९२.६ = ९२६९९४.६ (=९२६९९५)

इन दोनों गणनाओं में करीब ३ दिन का अंतर है। (९२६९९४.६ - ९२६९९१.५ = ३.१)

इसका तात्पर्य यह है कि वैशाख पूर्णिमा ५ मई ५१६ ईसा पूर्व से ३ दिन पहले हुई थी,

अर्थात ... वैशाख पूर्णिमा २ मई ५१६ ईसा पूर्व थी ।

५ मई २०२३ ईसाई और २ मई ५१६ ईसा पूर्व के बीच दिनों की संख्या ९२६९९५ है और

यह ७ (सप्ताह के दिन) से भाग करने पर (९२६९९५ ÷ ७ = १३२४२७.७१४२८), अर्थात

१३२४२७ सप्ताह अधिक ५ दिन होते है। इसलिए यह शुक्रवार के पहले ५ दिन, अर्थात

रविवार का दिन है। इसके अलावा, पूर्णिमा पर सप्ताह का दिन और मास की प्रथमा पर

(पहला दिन) एक समान होता है। इस लिए यदि यह वैशाख मास का पहला दिन बोधि संवत्सर का आरंभ दिवस है तो ...

यह वर्ष आरंभ दिवस **रविवार, १ (तेज प्रथमा) वैशाख बोधि संवत्सर ०००१** है।

ईसाई कालगणन के अनुसार यह १८ अप्रैल ५१६ ईसा पूर्व है। इस दिन का २०२३ की वैशाख पूर्णिमा तक का अवधि  $९२६९९५+१४=९२७००९$  है।

यह संख्या ९२७००९ को हम **ईसाई ५ मई २०२३** का **बोधि दिनांक** कहेंगे। बोधि संवत्सर आरंभ दिवस से किसी भी दिन तक दिनों का अवधि **“बोधि दिनांक”** कहा जायेगा। बोधि दिनांक संख्या के माध्यम से किसी भी दिन का वार तथा इसकी बोधि संवत्सर तिथि का गणित करना आसान होगा। हम अगले कुछ पन्नों में इसका अधिक विवरण देखेंगे।

**रविवार, १ (तेज प्रथमा) वैशाख बोधि संवत्सर ०००१** है।

ईसाई कालगणन के अनुसार यह १८ अप्रैल ५१६ ईसा पूर्व है।

इस परिणाम की तुलना NASA के चंद्र ग्रहण गणना सूचि से करते है।

**३ मार्च ५१६ ईसा पूर्व चंद्र ग्रहण** था, इसलिए पूर्णिमा थी।

**२७ अगस्त ५१६ ईसा पूर्व चंद्र ग्रहण** था, इसलिए पूर्णिमा थी।

तो, इन पूर्णिमा तिथियों के बीच की गणना...

५१६ ईसा पूर्व में ...	०३ मार्च,
३० दिन बाद	०२ अप्रैल,
३० दिन बाद	<b>०२ मई,</b>
२९ दिन बाद	३१ मई,
३० दिन बाद	३० जून,
२९ दिन बाद	२९ जुलाई और
२९ दिन बाद	२७ अगस्त यह पूर्णिमा तिथियाँ हैं ।

(२९ तथा ३० दिनों का मास यह केवल समायोजन है, २९.५३... दिनों के लिये)

**विशेष टिप्पणी** : NASA ने चंद्र ग्रहण के दिनांक ई.स. १५८२ अक्तूबर तक जूलियन तथा इसके पश्चात ग्रेगोरियन पद्धति से दिये है।

इसी तरह अब हम तथागत बुद्ध के **संबोधि दिवस** का भी गणन करते है।

तथागत बुद्ध को जब संबोधि प्राप्ति हुई थी तब उनकी उम्र ३५ वर्ष की थी तथा उनका महापरिनिर्वाण उनकी उम्र के ८० वर्ष के पश्चात हुवा था। इन दो घटनाओं के बीच ४५ वर्ष का अंतर है। तथागत बुद्ध का महापरिनिर्वाण सम्राट अशोक के शिलालेखों के संदर्भ अनुसार इसवी सन पूर्व ५१६ तय किया है। इस के संदर्भ से तथागत बुद्ध की संबोधि प्राप्ति इसवी सन पूर्व ५६१ होगी।

वैशाख पूर्णिमा इसवी सन पूर्व ५६१ की गणना करने के लिए ...  
ईसाई कालगणन नियम के अनुसार...

गणना करने के लिए कुल वर्ष... २०२३ + ५६० = २५८३

तीन शतक वर्ष (१७००, १८००, १९००) (-) ३ दिन

इ.स. १५८२ में किया गया ग्रेगोरीयन संशोधन सुधार (-) १० दिन

$$\begin{aligned}\text{कुल दिन} &= २५८३ \times ३६५ + \text{लिप दिन} \\ &= ९४२७९५ + (२५८३/४) - १३ \\ &= ९४२७९५ + ६४५.७५ - १३ \\ &= ९४३४२७.७५ \text{ दिन}\end{aligned}$$

बोधि संवच्छर नियम के अनुसार ....

२५८३ वर्ष = २५८३/१९ = १३५ सिद्धार्थ चक्र + १८ वर्ष

$$\begin{aligned}&= ६९३६ \times १३५ + १८ \times ३५४ + १८० \text{ (६ अधिक मास)} + \text{अशोक} \\ &\text{संवच्छर दिन}\end{aligned}$$

अशोक संवच्छर दिन = २५८३ ÷ ५ = ५१६.६ {हर ५ वर्ष में १ अशोक संवच्छर दिन

$$\begin{aligned}&- २५ \text{ (शताब्दी वर्ष)} + १० \text{ (प्रति ५०० वर्ष २ दिन)} \\ &= ५०१.६\end{aligned}$$

२५८३ वर्ष = ९३६३६० + ६३७२ + १८० + ५०१.६

$$= ९४३४१३.६ \text{ दिन (९४३४१४)}$$

इन दोनों गणनाओं में १३ दिनों का अंतर है।

इसका तात्पर्य यह है कि वैशाख पूर्णिमा ५ मई ५६१ ईसा पूर्व से १३ दिन बाद थी। अर्थात  
वैशाख पूर्णिमा १८ मई ५६१ ईसा पूर्व के दिन थी।

यदि हम ९४३४१४ दिनों की इस अवधि को सप्ताह में बदलें तो ...

(९४३०८ ÷ ७ = १३४७७३.४३) अर्थात १३४७७३ सप्ताह + ३ दिन होते हैं।

इसका अर्थ है कि यह तिथि शुक्रवार, ५ मई २०२३ से ३ सप्ताह दिन पहले है, इसलिए  
यह मंगलवार, १८ मई ५६१ ईसा पूर्व है।

बोधि संवच्छर अनुसार यह दिवस मंगलवार, वैशाख पूर्णिमा महापरिनिर्वाण पूर्व ४५ वर्ष  
है। इसे संबोधि दिवस कहा जाएगा।

इस परिणाम की तुलना NASA के चंद्र ग्रहण गणना सूची से करते हैं।

२० फरवरी ५६१ ईसा पूर्व चंद्र ग्रहण था, इसलिए पूर्णिमा थी।

१५ अगस्त ५६१ ईसा पूर्व चंद्र ग्रहण था, इसलिए पूर्णिमा थी।

तो, इन दो पूर्णिमा तिथियों के बीच की गणना ....

५६१ ईसा पूर्व की ....	२० फरवरी,
२९ दिनों बाद	२१ मार्च,
३० दिनों बाद	१९ अप्रैल,
२९ दिनों बाद	<b>१८ मई,</b>
३० दिनों बाद	१७ जून,
२९ दिनों बाद	१६ जुलाई और
३० दिनों बाद	१५ अगस्त .... यह पूर्णिमा तिथियां हैं।

हमारे बोधि कालगणन अनुसार किसी भी बोधि संवत्सर तिथि का वार हम पता कर सकते हैं। हमें जिस बोधि संवत्सर तिथि का वार पता करना हो उस तिथि का बोधि संवत्सर आरंभ दिवस से कूल दिनों का अवधि (बोधि दिनांक) गणन करेंगे। इसे ७ अंक से भाग करेंगे।

शेष	०	१	२	३	४	५	६
वार	शनि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र

७ अंक से भाग करने पर पूर्णांक के बाद जो शेष बचता है, उस से इस तालिका के अनुसार (सप्ताह का) वार निश्चित होगा।

किसी भी वर्ष के लिये बोधि संवत्सर के अनुसार संपूर्ण वर्ष की दिनदर्शीका तैयार करने के लिये हमें इस संवत्सर के वैशाख शुद्ध प्रथमा का वार पता होना चाहिये। इसी के साथ हमें यह भी पता होना चाहिये की इस वर्ष में मैत्रेय मास है या नहीं और क्या इस वर्ष के चैत्र महीने में अधिक एक दिन है या नहीं।

यहाँ पर हमने इसवी २०२३ की वैशाख पूर्णिमा का वार बोधि संवत्सर अनुसार भी निश्चित कर लिया है। इसके १५ दिन पहले शुक्रवार दिनांक २१ अप्रैल २०२३ (इसवी) को वैशाख शुद्ध प्रथमा, बोधि संवत्सर २५३९ अर्थात् **बोधि नव वर्ष दिन** होगा। इस वर्ष की संख्या का अंतिम अंक ० या ५ नहीं है, अतः इस वर्ष चैत्र के दिन २९ ही रहेंगे। इसके अंतिम तीन अंक २००, ४००, ६०० या ८०० नहीं है, अतः इस वर्ष चैत्र के दिन २९ ही रहेंगे। अब हमें देखना है, इस वर्ष में अधिक मास है या नहीं। हमारे बोधि संवत्सर की शुरुवात से लेकर २५३८ के समाप्त होने तक कितने सिद्धार्थ चक्र और इसके पश्चात कितने महीने बीते हैं यह पता करना होगा। हमने यह बात इससे पहले पता कर ली है, लेकिन यहाँ यह प्रक्रिया दोबारा देखते हैं। २५३८ वर्ष में  $२५३८ / १९ = १३३.५७८९४७३६८$  अर्थात् १३३ सिद्धार्थ चक्र बीते हैं तथा वर्तमान सिद्धार्थ चक्र १३४ वा है। इस वर्तमान सिद्धार्थ चक्र के

$0.57898368 \times 19 = 11$  संवत्सर बीत चुके हैं। यह संवत्सर २५३९ सिद्धार्थ चक्र का १२ वा संवत्सर है। बोधि संवत्सर २५३९ का आरंभ अर्थात् २५३९-वैशाख पाँचवें मैत्रेय स्तंभ में चौथा महीना है। अब इस जानकारी के साथ २५३९ वैशाख महीने से और आगे सभी १२ महीने की दिनदर्शिका तैयार कर सकते हैं।

अगले बोधि संवत्सर २०४० का अंतिम अंक ० है, अतः इसके चैत्र महीने में ३० दिन होंगे। यह बात ध्यान में रखकर २०४० की दिनदर्शिका तैयार की जायेगी।

## बोधि संवत्सर और जागतिक सामयिक कालगणन (ईसाई कालगणन) के साथ सम-क्रमण

हम जब बोधि संवत्सर पर आधारित दिनदर्शिका बनाते हैं, तो इसे जागतिक सामयिक कालगणन के साथ सम-क्रमिक करना आवश्यक होगा। आज ईसाई कालगणन जागतिक सामयिक कालगणन के लिये स्वीकार किया है। इस बात के लिये हम ईसाई कालगणन के शुरुवाती दिन तक अर्थात् ०१ जनवरी ०००१ तक बोधि संवत्सर के कितने दिन बीत चुके हैं, इसका गणन करेंगे।

वास्तवतः आज हम जिस ईसाई कालगणन का अनुसरण करते हैं, यह ग्रेगोरीयन कालगणन है और यह अक्तुबर १५८२ से प्रचलित है। इस मास की दिनांक ४ तक, जो गुरुवार था, पुराना ईसाई कालगणन जूलियन कालगणन प्रचलित था। इस के अगला दिन शुक्रवार, ५ अक्तुबर की जगह १५ अक्तुबर मानकर प्रचलन किया गया।

बोधि संवत्सर वर्ष आरंभ दिवस रविवार, १ (तेज प्रथमा) वैशाख बोधि संवत्सर ०००१ है। ईसाई कालगणन के अनुसार यह रविवार, १८ अप्रैल ५१६ ईसा पूर्व है। यह बात हम पिछले पन्नों में देख चुके हैं।

अब हमें १८ अप्रैल ५१६ ईसा पूर्व से ईसाई ०१ जनवरी ०००१ तक गुजरे हुए दिनों की संख्या का गणन करना है।

१८ अप्रैल से महीने के अंत तक ....	१३ दिन (१८ अप्रैल को जोड़कर)
मई मास के ...	३१ दिन
जून मास के ...	३० दिन
जुलै मास के ...	३१ दिन
अगस्त मास के ...	३१ दिन
सितंबर मास के ...	३० दिन
अक्तुबर मास के ...	३१ दिन
नवंबर मास के ...	३० दिन
और दिसंबर मास के ...	३१ दिन
कुल मिलाकर ...	२५८ दिन

यहाँ पर ईसा पूर्व ५१५ शुरु होता है अर्थात् यहां से ५१५ सौर वर्षों के बाद ... ०१ जनवरी ०००१ होगा।

इन ५१५ वर्षों में ...

$$(३६५ \times ५१५) = १८७९७५$$

अधिक लीप दिन ...

$$+ (५१६ \div ४) = १२९$$

कूल = १८८१०४ दिन होते हैं।

(लीप दिनों के गणन के लिये हमने ५१५ सौर वर्षों के बजाय ५१६ सौर वर्ष लिये हैं, इसलिये की ईसा पूर्व ०००१ यह वर्ष लीप वर्ष है।)

१७ अप्रैल ५१६ ईसा पूर्व से ०१ जनवरी ०००१ तक ....

$$१८८१०४ + २५८ = १८८३६२ दिन होते हैं।$$

अतः बोधि संवत्सर आरंभ और ईसाई वर्षारंभ के बीच का अवधी १८८३६२<sup>(अ)</sup> दिनों का है। यह २६९०८ सप्ताह अधिक ६ दिन है। (१८८३६२  $\div$  ७ = २६९०८  $\frac{६}{७}$ ) अर्थात् ०१ जनवरी ०००१ यह दिन १७ अप्रैल ५१६ ईसा पूर्व से ६ दिन आगे, अर्थात् शनिवार है। (पृष्ठ क्रमांक ७४ पर दी गई सप्ताह दिवस की तालिका देखे।)

अब हम इस की अधिक पुष्टि करते हैं।

दिनांक ०१ जनवरी २०२४ तक २०२३ वर्षों में ...

$$२०२३ \times ३६५ = ७३८३९५$$

$$(+) २०२३ \div ४ = ५०५ (\div ४ \text{ लीप})$$

$$(-) १० \text{ ग्रेगोरीयन संशोधन सुधार}$$

$$(-) ३ \text{ शतक वर्ष (१७००, १८००, १९००)} \\ = ७३८८८७ \text{ दिन।}$$

इस के (७३८८८७  $\div$  ७ = १०५५५५ सप्ताह + २ दिवस होते हैं।

इससे साबित होता है की ०१ जनवरी २०२४ का सप्ताह दिवस और ०१ जनवरी ०००१ के सप्ताह दिवस शनिवार से दो दिन आगे अर्थात् **सोमवार** है। २०२४ की दिनदर्शिका के अनुसार यह बात बिलकुल सही है।

किसी भी ईसाई दिनांक का ०१ जनवरी ०००१ से कूल अवधी जूलियन-ग्रेगोरीयन कालगणन के अनुसार आसानी से गणन किया जा सकता है। इस अवधि में १८८३६२<sup>(अ)</sup> दिन जोड़ने पर बोधि संवत्सर आरंभ से यहाँ तक का दिनों का अवधी मिल जायेगा। अब इस अवधी का बोधि संवत्सर नियमों के अनुसार गणन किया जाये तो हमे इस दिन का बोधि संवत्सर दिनांक प्राप्त हो जायेगा। जरूरत यह होगी की बोधि संवत्सर गणन के नियम ठीक तरह से समझे जाये और इनके गणन करने की विधि अवगत की जाये।

उदाहरण के लिये हम १७ अप्रैल २०२४ के बोधि संवत्सर दिनांक के लिये संगणन करते हैं। ईसाई २०२४ में (वैशाख मास तक / लगभग अप्रैल मास तक) २०२४ + ५१६ = २५४० बोधि संवत्सर है।

दिनांक ०१ जनवरी २०२४ तक २०२३ वर्षों में ...

$$२०२३ \times ३६५ = ७३८३९५ \text{ कूल दिन होते हैं।}$$

इन में लीप दिन जोड़ते हैं।

$$\begin{aligned} (+) \quad २०२३ \div ४ &= ५०५ (\div ४ \text{ लीप}) \\ (-) \quad १० &\text{ ग्रेगोरीयन संशोधन सुधार} \\ (-) \quad ३ &\text{ शतक वर्ष (१७००, १८००, १९००)} \\ &= ७३८८८७ \text{ दिन।} \end{aligned}$$

इस से आगे १७ अप्रैल तक ...

$$\begin{aligned} \text{जनवरी के} & ३१ \text{ दिन} \\ \text{फरवरी के} & २९ \text{ दिन (ईसाई २०२४ लीप वर्ष है।)} \\ \text{मार्च के} & ३१ \text{ दिन और ...} \\ \text{अप्रैल के} & १७ \text{ दिन {हमे अप्रैल के १७ वे दिन की तिथि चाहिये।}^{(अ)} \\ & \text{कूल } १०८ \text{ दिन} \end{aligned}$$

अर्थात् १७ अप्रैल २०२४ तक  $७३८८८७ + १०८ = ७३८९९५$  दिन होते हैं। इस में  $१८८३६२$ <sup>(अ)</sup> ईसा पूर्व के दिन जोड़ने पर  $९२७३५७$  बोधि संवत्सर के कूल दिन प्राप्त होते हैं। तो यह संख्या होगी  $९२७३५७$ <sup>(क)</sup>। (इस संख्या को हम **बोधि दिनांक** कहते हैं।)

२५४० बोधि संवत्सर के अनुसार ...

$$२५४० \div १९ = १३३ \text{ सिद्धार्थ चक्र अधिक ११ वर्ष होंगे।}$$

एक सिद्धार्थ चक्र में ६९३६ दिन (अशोक संवत्सर के अधिक दिन छोड़कर) होते हैं। इस कारण १३३ सिद्धार्थ चक्र में ...

$$१३३ \times ६९३६ = ९२२४८८ \text{ दिन होते हैं। (यह } १३३ \times १९ = २५२७ \text{ वर्ष होते हैं।)}$$

यह वर्ष कूल वर्ष २५३९ से घटाने पर अपूर्ण सिद्धार्थ चक्र के ११ वर्ष रह जाते हैं। २५३८ वर्षों में ...

$$२५३८ \div ५ = ५०७.६ \text{ वर्षों के अंतिम अंक } ० \text{ या } ५ \text{ होंगे।}$$

$$२५३८ \div १०० = २५ \text{ वर्षों के अंतिम दो अंक } ०० \text{ होंगे। तथा ...}$$

$$२५३८ \div ५०० \times २ = १० \text{ वर्षों के अंतिम तीन अंक } २००, ४००, ६०० \text{ या } ८०० \text{ होंगे।}$$

अर्थात्  $५०७.६ - २५ + १० = ४९२$  अशोक संवत्सर होंगे।

कूल अवधी २५३८ वर्ष (+ १ अपूर्ण वर्ष) वर्ष में ...

$$९२२४८८ + ४९२ = ९२२९८० \text{ दिन अधिक अपूर्ण सिद्धार्थ चक्र के दिन होते हैं।}$$

हमारे इच्छित दिनांक तक इस अपूर्ण सिद्धार्थ चक्र का जो अवधी बचा रह जाता है वह ...

$$\text{अपूर्ण सिद्धार्थ चक्र का अवधी } ९२७३५७^{(क)} - ९२२९८० = ४३७७ \text{ दिन का है। इस अवधी}$$

से एक-एक कर के मैत्रेय स्तंभ के दिन घटाए जाये तो अंतिम अपूर्ण मैत्रेय स्तंभ में बचे दिनों का अवधी रह जायेगा।

मैत्रेय स्तंभ (१) ४३७७ - १००४ = ३३७३ शेष दिन

मैत्रेय स्तंभ (२) ३३७३ - ०९७४ = २३९९ शेष दिन

मैत्रेय स्तंभ (३) २३९९ - १००३ = १३९६ शेष दिन

मैत्रेय स्तंभ (४) १३९६ - ०९७४ = ०४२२ शेष दिन

यह शेष दिन ५९वें मैत्रेय स्तंभ के हैं, जिसमें पहले दो मास फाल्गुन और चैत्र हैं। इन के ५९ दिन घटाने पर ४२२ - ५९ = ३६३ दिन शेष रहते हैं। यह दिन संख्या मैत्रेय मास सहित संवत्सर की दिन संख्या ३८४ से कम है।

$३८४ - ३६३ = २१$  दिन हैं।

इस बात से समझता है की यह हमारे गणन कालावधी के अंतिम वर्ष में २१ दिन कम हैं। और यह १ मास से भी कम अवधी है। अतः यह वर्ष के अंतिम मास चैत्र की दिन संख्या २९ से २१ दिन कम है।

अर्थात् यह दिन चैत्र का ... २९ - २१ = ८ वा दिन है। क्यों की यह मास के पहले पक्ष की दिन संख्या १५ से कम है, यह तेज पक्ष है। आठवाँ दिन अष्टमी कहलाता है। अर्थात् यह चैत्र मास की तेज अष्टमी (तेज ८) है। यह तिथि तेज अष्टमी, चैत्र बोधि संवत्सर २५४० है। यह दिन सम्राट अशोक की जन्म तिथि (जयंती) है। संख्या ९२७३५७<sup>(क)</sup>, जो बोधि दिनांक है, इसे सप्ताह में विभाजित करें तो १३२४७९.४२८६ अर्थात् १३२४७९ सप्ताह अधिक ३ दिन होते हैं। बोधि संवत्सर आरंभ दिवस, रविवार, के बाद ३ दिन बीतने पर चौथा दिन बुधवार है, और यह १७ अप्रैल २०२४ का सही वार है।

पिछले पृष्ठ (७४) पर वार की एक छोटी सी तालिका है, इस में यही तत्व है। ० से ६ तक सात खाने और इस से समरूप नीचे के खाने में सात वार लिखे हैं। संख्या ३ से संबंधित वार बुधवार है। हम इस तालिका तथा बोधि दिनांक के उपयोग से हमारे इच्छित दिन का वार आसानी से जान सकते हैं।

आइये, अगले अध्याय में हम इस विधि को व्यापक रूप में क्रमवार समझते हैं।

## जागतिक सामयिक दिनांक का बोधि संवत्सर दिनांक में रूपांतरण (क्रम वार और विस्तार पूर्ण विधि)

जागतिक सामयिक दिनांक का बोधि संवत्सर तिथि और मास में रूपांतरण करना एक आवश्यक प्रक्रिया होगी। इस के बिना बोधि संवत्सर समझने कि प्रक्रिया पूर्ण नहीं होगी। अतः यह पाठ इसी उद्देश्य से लिखा है।

इस प्रक्रिया के दो मुख्य भाग हैं। पहला भाग यह होगा की जागतिक सामयिक दिनांक से **बोधि दिनांक** की संगणना करना। बोधि दिनांक यह संख्या बोधि संवत्सर आरंभ से इच्छित दिनांक तक के कूल दिनों की संख्या है, यह बात हम पहले ही जान चुके हैं।

अब हम इसके संगणना की व्यावहारिक पद्धति जान लेते हैं। इसके लिये हम १ जनवरी ५१६ ईसा पूर्व से इच्छित दिनांक के पूर्व ईसाई वर्ष के अंतिम दिवस तक का अवधी का गणन करते हैं, और इससे १७ अप्रैल ५१६ ईसा पूर्व तक के दिन घटाते हैं। इसके पश्चात इस में इच्छित दिनांक के वर्ष के १ जनवरी से इच्छित दिनांक तक के दिन जोड़ते हैं।

आइये, इस विधि का संगणन क्रमवार समझते हैं।

### पहला संगणन

- १) इच्छित दिनांक का ईसाई वर्ष + ५१५ जोड़ करें। (इच्छित दिनांक ईसा पूर्व होने पर ५१६ जोड़ करें।) यह हमारा अनुमानित बोधि संवत्सर वर्ष होगा। इसे ३६५ से गुणा करें तथा इसे ४ से भाग करें। गुणा करने से प्राप्त संख्या इन वर्षों के दिनों के बराबर होगी (BD1) तथा ४ से भाग करने पर प्राप्त पूर्णांक संख्या इस अवधी में बीते लिप वर्षों के (LipDys) बराबर होगी।
- २) अब इस संख्या से १०७ घटाते हैं। (१ जनवरी ५१६ ईसा पूर्व से १७ अप्रैल ५१६ ईसा पूर्व तक १०७ दिन होते हैं।) इस में लिप वर्षों की संख्या जोड़ते हैं। (BD1 – १०७ + LipDys)
- ३) ईसा वर्ष १५८२ के अक्तुबर में जुलियन कैलेंडर में सुधार किया गया। इस **ग्रेगोरियन सुधार** के अंतर्गत ४ अक्तुबर १५८२ का अगला दिवस १५ अक्तुबर समझा गया। अर्थात बीच के १० दिन घटाए गए। इस कारण हमारा इच्छित दिनांक अगर १५ अक्तुबर १५८२ से बाद का है तो हमें ग्रेगोरियन सुधार के १० दिन घटाने हैं।
- ४) ग्रेगोरियन सुधार के लिये ही, अगर हमारा इच्छित दिनांक ....

क) ईसाई वर्ष १७०१ से १७९९ वर्ष में है, तो १ दिन

ख) ईसाई वर्ष १८०१ से १८९९ वर्ष में है, तो २ दिन

ग) ईसाई वर्ष १९०१ से १९९९ वर्ष में है, तो ३ दिन

घ) ईसाई वर्ष २१०१ से २१९९ वर्ष में है, तो ४ दिन और घटाते हैं।

क्यों की १७००, १८००, १९०० तथा २१०० शतक वर्ष लिप वर्ष नहीं है। लेकिन ईसाई १६०० तथा २००० शतक वर्ष लिप वर्ष है।

५) इच्छित दिनांक के वर्ष के १ जनवरी से इच्छित दिनांक तक के दिन (RD) जोड़ते हैं। (BD1 – १०७ + LipDys - G.Reform + RD)

यहाँ तक की संगणना से प्राप्त संख्या हमारे इच्छित ईसाई दिनांक का **बोधि दिनांक** (BS) है। बोधि दिनांक को ७ से विभाजित करने पर जो शेष राशी होती है, उसे निम्न तालिका की मदद से इच्छित दिनांक का वार प्राप्त होता है।

शेष	०	१	२	३	४	५	६
वार	शनि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र

## दूसरा संगणन

पहले संगणन से हमे हमारे इच्छित (CE) दिनांक का **बोधि दिनांक** प्राप्त हुवा है। हम इस संख्या से बोधि संवछर संख्या का संगणन करेंगे। फिर इस संवछर तक कितने अशोक संवछर बीत चुके हैं, यह संगणन करेंगे। बोधि दिनांक संख्या से अशोक संवछर संख्या घटाने पर हमे केवल २९.५ दिन संख्या अनुरूप बीते हुये चंद्र-मासों के दिन प्राप्त होंगे। इस दिन संख्या से सिद्धार्थ चक्र तालिका की सहायता से बीते हुए पूर्ण मैत्रेय स्तंभ के दिन घटाएंगे। अब जो शेष संख्या होगी, वह अपूर्ण मैत्रेय स्तंभ के दिनों की संख्या होगी। इस संख्या से पूर्ण मैत्रेय स्तंभ के पश्चात बचे हुए पूर्ण चंद्र-मासों की दिन संख्या घटाते जाएंगे। अंत में जो शेष संख्या होगी वह निश्चित ही हमारे इच्छित (ईसाई) दिनांक की बोधि संवछर मास की दिन संख्या है। इसे बोधि संवछर नियम अनुसार तिथि और चंद्र-मास में परिवर्तित करेंगे। यही होगी हमारी इच्छित बोधि संवछर तिथि, चंद्र-मास और बोधि संवछर।

आइये, इस विधि का संगणन क्रमवार समझते हैं।

- १) बोधि दिनांक संख्या को ३६५.२४२५ से भाग करते हैं। इस संख्या का केवल पूर्णांक (+ १) हमारा अनुमानित बोधि संवत्सर (BSYR) होगा।
- २) बोधि दिनांक संख्या (BS) से हमें अशोक संवत्सर दिन घटाने हैं।  
(BSYR ÷ ५) - (BSYR ÷ १००) + (BSYR ÷ ५००) × २ इस गणित से हमें अशोक संवत्सर (AS) दिन प्राप्त होंगे। यहाँ भाग करने पर केवल पूर्णांक संख्या लेनी है।
- ३) बोधि दिनांक से अशोक संवत्सर दिन संख्या घटाने के बाद जो संख्या प्राप्त होती है, उसे हम ६९३६ से विभाजित करते हैं। विभाजन के पश्चात् जो शेष राशी बचती है, वह निश्चित ही ६९३६ से कम होगी।
- ४) हमारे सिद्धार्थ चक्र तालिका में अंतिम पंक्ति में हर स्तंभ से संबंधित कुछ संख्या है। यह संख्या सिद्धार्थ चक्र के उस स्तंभ के अंत तक के कूल दिनों की संख्या है। (निम्न तालिका देखें।)

स्तंभ १	स्तंभ २	स्तंभ ३	स्तंभ ४	स्तंभ ५	स्तंभ ६	स्तंभ ७
१००४	१९७८	२९८१	३९५५	४९५९	५९३३	६९६६

पिछले संगणन से प्राप्त शेष राशी, किस स्तंभ की राशी से निकटतम छोटी है, यह समझकर इस राशी को शेष राशी से घटाए। अब इस स्तंभ के अगले स्तंभ में आने वाले चंद्र-मास की दिन संख्या से हमें अगला गणन करना है।

- ५) स्तंभ के पहले चंद्र-मास की दिन संख्या अगर शेष संख्या से बड़ी है तो वह शेष संख्या से घटाए। नयी शेष संख्या को अगले चंद्र-मास की दिन संख्या से जाँच ले।
- ६) अनुक्रमित चंद्र-मास की दिन संख्या अगर शेष संख्या से बड़ी है तो वह शेष संख्या से घटाए। नयी शेष संख्या को अगले चंद्र-मास की दिन संख्या से जाँच ले।
- ७) यह प्रक्रिया तब तक करनी है, जब तक शेष संख्या अगले चंद्र-मास के दिन संख्या से कम (छोटी) न बन जाये।
- ८) अब जो शेष संख्या जिस चंद्र-मास के दिन संख्या से कम है, वह चंद्र-मास हमारे इच्छित दिनांक का चंद्र-मास है और वह शेष अनुक्रमिक तिथि है। अगर यह संख्या १५ या १५ से कम हो तो वह संख्या तिथि होगी और पक्ष तेज होगा। अगर शेष संख्या १५ से अधिक है तो इस से १५ घटाए। अब शेष संख्या तिथि होगी और पक्ष तम होगा।

(४) (५) (६) (७) यह प्रक्रिया हम १९ स्तंभ की सिद्धार्थ चक्र तालिका के उपयोग से भी कर सकते हैं। इस में भी अंतिम पंक्ति में उस स्तंभ के अंत तक की कूल दिन संख्या दी

गई है। फर्क यह है की यहाँ १९ स्तंभ और १३ पंक्ति है तथा पहली तालिका में ७ स्तंभ और ३४ पंक्ति है।

इस प्रकार की प्रक्रिया कर के हम किसी भी ईसाई दिनांक की बोधि संवछर तिथि, चंद्र-मास, वर्ष (बोधि संवछर) तथा सप्ताह वार भी प्राप्त करते है।

इसी प्रक्रिया के आधार पर मैंने Windows (32-Bit) Windows (64-Bit) के लिये संगणकीय आज्ञावली (Program) लिख कर उसका परीक्षण भी किया है। इस परीक्षण से उपर लिखी गयी गणन प्रक्रिया सही होने का परीक्षण सफल हुवा है।

अब इसी संगणन के लिये एक वेब ऐप भी मौजूद है, जिसकी लिंक मेरे वेब पेज पर उपलब्ध है। (<https://piyadassiasok.com> :- मेरा संशोधन)

॥ तं तेजसा भवतु ते जय-मंगलानी ॥

## बोधि संवच्छर प्रणाली के नये सांकल्पनिक शब्द

- बोधि दिनांक** - बोधि संवच्छर आरंभ दिवस से गणन किये गये कूल दिनों की संख्या।
- सिद्धार्थ चक्र** - १९ सौर वर्ष का काल-चक्र. इस में निःशेष २३५ चंद्र-मास होते है।
- मैत्रेय मास** - १९ सौर वर्ष और २३५ चंद्र-मास के सुलभ आयोजन के लिये अधिक मास। यह बारी-बारी से ३२ या ३३ चंद्र मासों के बाद, एक सिद्धार्थ चक्र में ७ बार, आता है।
- तेज पक्ष** - अमावस्या से पूर्णिमा तक के दिनों का अवधि।
- तम पक्ष** - पूर्णिमा से अमावस्या तक के दिनों का अवधि।
- बोधि तिथि** - चंद्र मास के दो पक्ष (तेज तथा तम पक्ष) में चंद्र स्थिति के दिनों का **बोधि संवच्छर प्रणाली** के अनुसार गणन, तथा इन दिनों के अनुक्रमिक संख्यावाचक नाम।
- संवच्छर** - वैशाख से लेकर चैत्र तक चंद्र-मास का कूल काल-अवधि। यह अवधी १२ चंद्र-मास का होता है, लेकिन बीच में मैत्रेय मास आ जाये तो यह १३ चंद्र-मास का होता है। आधुनिक भाषा में इसे संवत्सर कहते है।

**बोधि दिनांक** को २९.५३०५८७९...(चंद्र-मास के दिनों का वैज्ञानिक गणन अवधि) से विभाजीत करने पर जो शेष होता है, वह **प्राकृतिक चंद्रावस्था संख्या (Lunar Phase)** या चंद्र मास में चंद्र की आयु, अर्थात **चंद्रायु** होती है। अगर यह १५ से अधिक होती है तो इससे १५ घटाकर (अन्यथा १५ घटाये बिना) प्राप्त संख्या **प्राकृतिक चंद्र-तिथि** होती है। **बोधि तिथि** और **प्राकृतिक चंद्र-तिथि** में कई बार मेल नहीं होता, क्यों की **बोधि तिथि** बोधि संवच्छर प्रणाली के नियम अनुसार संगणित है, यह गणन प्राकृतिक गणन नहीं है, बल्कि सन्निकटन गणन है।

## चंद्रमास के कालावधी की भिन्नता

चंद्र चक्र की अवधि (एक अमावस्या से अगली अमावस्या तक) निश्चित नहीं होती। यह पूरे वर्ष बदलती रहती है। सबसे लंबे चंद्र चक्र आमतौर पर उत्तरी गोलार्ध की सर्दियों (लगभग दिसंबर-जनवरी) के दौरान होते हैं। सबसे छोटे चंद्र चक्र आमतौर पर उत्तरी गोलार्ध की गर्मियों (लगभग जून-जुलाई) के दौरान होते हैं। औसत चंद्रमास लगभग २९.५३०५८ दिनों का होता है, लेकिन यह लगभग २९.२७ दिनों से २९.८३ दिनों तक भिन्न हो सकता है, जो १३ घंटे से अधिक का अंतर है। २९.५३०५८ दिनों के औसत मान के सबसे निकट चंद्रमास वसंत (लगभग मार्च-अप्रैल) और शरद ऋतु (लगभग अक्टूबर-नवंबर) में होते हैं।

### ऐसा क्यों होता है ?

चंद्रमास की लंबाई क्यों बदलती है ? २९.५३०५८ दिनों का आंकड़ा केवल एक औसत है। एक अमावस्या से अगली अमावस्या (एक चंद्रमास) तक का वास्तविक समय लगभग २९.२७ दिनों से २९.८३ दिनों तक भिन्न हो सकता है। यह परिवर्तन पृथ्वी के चारों ओर चंद्रमा और सूर्य के चारों ओर पृथ्वी दोनों की दीर्घवृत्ताकार कक्षाओं के कारण होता है, लेकिन इस वार्षिक स्वरूप का मुख्य कारण सूर्य के चारों ओर पृथ्वी की दीर्घवृत्ताकार कक्षा है।

### सबसे लंबा चंद्रमास (उत्तरी शीतकाल)

जनवरी की शुरुआत में, पृथ्वी सूर्य के सबसे निकटतम बिंदु - उपसौर पर होती है। इस समय, पृथ्वी अपनी कक्षा में सबसे तेज़ गति से घूम रही होती है। चूंकि पृथ्वी अधिक तेज़ी से घूम रही होती है, इसलिए चंद्रमा को अगली अमावस्या शुरू करने के लिए सूर्य के साथ "मेल" बनाने और संरेखित करने के लिए अपनी कक्षा में "अधिक" यात्रा करनी पड़ती है। इसके परिणामस्वरूप एक लंबा चंद्रमास होता है।

### सबसे छोटा चंद्रमास (उत्तरी ग्रीष्मकाल)

जुलाई की शुरुआत में, पृथ्वी सूर्य से सबसे दूर बिंदु - अपसौर पर होती है। यहाँ, पृथ्वी अपनी कक्षा में सबसे धीमी गति से घूम रही होती है। चूंकि पृथ्वी धीमी गति से गति कर रही है, इसलिए चंद्रमा को उसके साथ तालमेल बिठाने के लिए "कम" यात्रा करनी पड़ती है। इसके परिणामस्वरूप चंद्रमास छोटा होता है।

## "औसत" चंद्रमास

चूँकि चंद्रमास दिसंबर/जनवरी में सबसे लंबा और जून/जुलाई में सबसे छोटा होता है, इसलिए बीच के बिंदुओं पर इसकी लंबाई औसत मान से होकर गुज़रनी चाहिए।

यह "बीच के" समय, जब पृथ्वी की कक्षीय गति उसकी औसत गति के सबसे करीब होती है, यह विषुव समय के आसपास होता है। यही कारण है कि मार्च-अप्रैल और अक्टूबर-नवंबर में शुरू होने वाले चंद्रमास की अवधि २९.५३०५८८ दिनों के औसत के बहुत करीब होती है।

चंद्रमा की अपनी दीर्घवृत्ताकार कक्षा (पृथ्वी से अधिकतम और निम्नतम दूरी) भी महीने-दर-महीने भिन्नता की एक और परत जोड़ती है, लेकिन सबसे लंबे से सबसे छोटे चंद्रमास का मुख्य मौसमी रुझान सूर्य के चारों ओर पृथ्वी की कक्षा द्वारा निर्धारित होता है।

चंद्रमास के कालावधि की इस भिन्नता के कारण चांद्र-सौर कालगणन में जटिलता आती है। यही कारण है की हमारे बोधि-संवच्छर प्रणाली की तिथियाँ भारतीय पारंपारिक कालगणन प्रणाली की तिथियों से मेल नहीं रखती। फिर भी केवल कालगणन यही उद्देश्य होने पर यह यथा-योग्य है।

## बोधि संवत्सर प्रणालि की यथार्थता परखने हेतु कुछ प्राचिन दिनांक की तिथियों का निर्धारण

### धम्मदीक्षा अशोक विजया दशमी १४ ऑक्टोबर १९५६

१७ अप्रैल ५१६ इसा पूर्व से	
१ जनवरी ५१५ इसा पूर्व तक	
अप्रैल	१३
मई	३१
जून	३०
जुलाई	३१
अगस्त	३१
सितंबर	३०
अक्तुबर	३१
नवंबर	३०
दिसंबर	३१
कुल	२५८

१ जनवरी १९५६ इसा से	
१४ अक्तुबर १९५६ इसा तक	
जनवरी	३१
फरवरी	२९
मार्च	३१
अप्रैल	३०
मई	३१
जून	३०
जुलाई	३१
अगस्त	३१
सितंबर	३०
अक्तुबर	१४
कुल	२८८

### पहला संगणन

१ जनवरी ५१५ इसा पूर्व से ३१ दिसंबर १९५५ इसा तक कूल वर्ष :

$$५१५ + १९५५ = २४७०$$

१ जनवरी ५१५ इसा पूर्व से ३१ दिसंबर १९५५ इसा तक कूल दिन :

$$२४७० \times ३६५ = ९०१५५०$$

इस अवधी में लिप वर्ष :

$$२४७० \div ४ = ६१७.५ (-) \text{ ग्रेगोरियन } (-) १० (-) ३ (-) १^* = ६०४$$

$$५१६ \text{ इसा पूर्व के दिन } (+) २५८$$

$$१९५६ \text{ इसा के दिन } (+) २८८$$

$$\text{कूल दिन - बोधि दिनांक} = ९०२७००$$

सप्ताह के वार के लिये ...  $९०२७०० \div ७ = १२८९५७.१/७$  से १ ..... अर्थात् रविवार

\*- ०००१ इसा पूर्व लिप वर्ष है।

## दूसरा संगणन

बोधि दिनांक के दिनों में कूल वर्ष  $९०२७०० \div ३६५.२४२५ = २४७१.५$  (२४७२ संवच्छर)

२४७१ वर्ष में अशोक संवच्छर :

$$२४७१ \div ५ = ४९४ - \text{पुर्णांक}(२४७१ \div १००) + \text{पुर्णांक}(२४७१ \div ५००) \times २ = \\ = (४९४ - २४ + ८८) = ४७८$$

$$२४७१ \text{ वर्ष में सिद्धार्थ चक्र } २४७१ \div १९ = १३०$$

$$\text{बोधि दिनांक - अशोक संवच्छर } (९०२७०० - ४७८) = ९०२२२२$$

$$(-) १३० \text{ सिद्धार्थ चक्र के दिन } (१३० \times ६९३६) = ९०१६८० \\ (\text{अशोक संवच्छर दिनों के सिवा}) = ५४२$$

अपूर्ण सिद्धार्थ चक्र का पहला चांद्र वर्ष, जो मैत्रेय मास के साथ है,

$$\text{के दिन घटाते है तो, } ५४२ - ३८४ = १५८$$

५ महिने (वैशाख, जेष्ठ), (आषाढ, श्रावण) और भाद्रपद के दिन घटाने पर ....

$$(\text{दो चांद्र मास में } ५९ \text{ दिन होते है।) ... } १५८ - ५९ - ५९ - ३० = १०$$

यह अश्विन माह की तेज दशमी है, जिसे अशोक विजया दशमी कहा जाता है।

-----

## बाळ गंगाधर टिळक की जन्म दिनांक : २३ जुलाई १८५६ : २३-०७-१८५६

१ जनवरी १८५६ से २३ जुलाई १८५६ तक के दिन ....

$$३१ + २९ + ३१ + ३० + ३१ + ३० + २२ = २०४$$

१७ अप्रैल ५१६ इसा पूर्व से १ जनवरी ५१५ इसा पूर्व तक के दिन = २५९

१ जनवरी ५१५ इसा पूर्व से ३१ दिसंबर १८५५ तक २३७० वर्ष के दिन ...

$$२३७० \times ३६५ = ८६५०५०$$

$$(+) \text{ लीप दिन } ५९२ - १० - २ = ८६५६३०$$

$$\text{बोधि दिनांक} = ८६५६३० + २०४ + २५९ = ८६६०९३$$

$$\text{बोधि संवत्सर } ८६६०९३ \div ३६५.२४२५ = २३७१.२८२ = २३७२$$

$$\text{वार } (८६६०९३ \div ७) = १२३७२७. ४/७ (४) \text{ अर्थात् बुधवार}$$

$$\text{अशोक वर्ष } २३७१ \div ५ = ४७४ - \text{पूर्णांक}(२३७१ \div १००) + \text{पूर्णांक}(२३७१ \div ५००) \times २ \\ = ४५९$$

$$८६६०९३ - ४५९ = ८६५६३४$$

$$(-) \text{ पूर्ण सिद्धार्थ चक्र के कूल दिन .. पूर्णांक}(२३७१ \div १९) \times ६९३६ = ८६००६४ \\ = ५५७०$$

सिद्धार्थ चक्र १९ वर्ष कि तालिका अनुसार ....

$$(-) \text{ सिद्धार्थ चक्र के } १५ \text{ वे वर्ष तक के दिन } ५४९० = ८०$$

$$(-) \text{ दो चान्द्र मास (वैषाख, जेष्ठ) के दिन } ५९ = २१$$

$$(-) \text{ आषाढ माह के तेज पक्ष के दिन } १५ = ६$$

यह बोधि संवत्सर २३७२ के आषाढ माह की तम षष्ठी है।

बाळ गंगाधर तिलक की जन्मपत्री अनुसार यह सही है।



प्राचिन आकाशवेध - जंतर-मंतर जयपूर